दुर्लभ शाबर मंत्रों का रहस्य

भगवान शिव द्वारा कहे गए तथा गुरु गोरखनाथ द्वारा सिद्ध सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले असाधारण और चमत्कारी मंत्र

11

रोगनाशक शाबर मंत्र

यह कोई प्राचीन मान्यता नहीं, एक सत्य है कि निरोगी शरीर से ही संसार के सुखों को भोगा जा सकता है। लेकिन जैसा कि कहा गया है, "शरीर रोगों का घर है", अर्थात न चाहते हुए और अत्यंत सावधानी बरतते हुए भी पूर्णतया स्वस्थ रहना एक तरह से असंभव-सा है। अच्छा खान-पान और आहार-व्यवहार का ध्यान रखने वाले लोग भी रोग द्वारा जकड़ लिए जाते हैं। यदि शरीर में रोग हो जाए, तो क्या करें? इसका साधारण-सा उत्तर यही है कि रोग की चिकित्सा करनी चाहिए। शास्त्रानुसार चिकित्सा तीन प्रकार की मानी गई है—

1. आसुरी चिकित्सा
2. मानुषी चिकित्सा
3. दैवीय चिकित्सा

शल्य चिकित्सा (सर्जरी) को 'आसुरी चिकित्सा' कहा जाता है। जबकि औषधि से की जाने वाली चिकित्सा 'मानुषी चिकित्सा' कहलाती है। जो भयकर और घातक रोग औषधि-उपचार से दूर नहीं होते, उन्हें दैवीय चिकित्सा द्वारा दूर कर दिया जाता है। मंत्रादि से की जाने वाली चिकित्सा 'दैवीय चिकित्सा' मानी जाती है।

मनुष्य के शरीर में कभी-कभी ऐसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जो देखने में तो आम रोगों की भांति होते हैं, किंतु उनका उपचार औषधियों द्वारा संभव नहीं होता, तब मंत्रों का आश्रय लेना पड़ता है। शाबर मंत्र इतने प्रभावशाली होते हैं कि उनका प्रयोग करने से रोग सहज ही दूर हो जाते हैं। हम यहां जिन शाबर मंत्रों का उल्लेख कर रहे हैं, ऐसा कोई रोग नहीं, जो इनसे दूर न किया जा सके। मंत्र शास्त्रों में ऐसा ही वर्णित है। निश्चय ही मंत्रशास्त्र शरीर को रोगमुक्त करने के सरल उपाय सुझाता है। कभी-कभी तो साधारण से पढ़ने में आने वाले मंत्र ऐसा चमत्कारिक कार्य करते हैं कि उसके परिणामों को देखकर अत्यंत आश्चर्य होता है। ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह यहां प्रस्तुत किया गया है।

सर्वरोग निवारक मंत्र

शरीर में चाहे जो भी रोग हो और वह रोग केवल शाबर मंत्र द्वारा ही जाने वाला हो, तो निम्नलिखित शाबर मंत्र को सिद्ध कर प्रयोग में लाना चाहिए।

वन में बैठी बानरी अंजनी जायो हनुमंत, बाला डमरू व्याहि, बिलाई, आंख की पीड़ा, मस्तक पीड़ा, चौरासी बाय, बली बली भस्म होइ जाय, पके न फूटे, पीड़ा करे तो गोरखनाथ जती रक्षा करे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र की जप-संख्या सवा लाख है, जिसे इकतालीस दिनों में अवश्य पूरा किया जाना चाहिए। इसी से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र की जप-क्रिया हनुमान-प्रतिमा के समक्ष बैठकर अथवा हनुमान मंदिर में रहकर संपन्न की जाती है। मंत्रसिद्धि के पश्चात किसी के भी रोग को दूर करने के लिए एक सौ आठ बार मंत्र पढ़कर, मोरपंख से झाड़ा लगाना चाहिए तथा हनुमान जी के सामने सरसों के तेल का दीपक जलाए रखना चाहिए।

सर्व रोगादि दोष नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को,
गिरह बाज नटनी का जाया।
चलती बेर कबूतर खाया॥
पीवै दारू, खायजु मांस।
रोग दोष को लावै फांस॥
कहां कहां से लावेगा।
गुदा में सुं लावेगा॥
नौ नाड़ी बहत्तर कोठा,
सुं लावेगा, मार मार
बन्दी कर कर लावेगा
ना लावेगा तो अपनी माता की शैया
पर पांव धरेगा, मेरा भाई
मेरा देखा दिखलाया तो
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को सवा लाख की संख्या में जप कर सिद्ध करें। अब जब भी कोई रोगी आए तो मंत्र को जपते हुए इक्कीस बार रोगी को झाड़ा लगाएं। इससे उसके रोगों का शमन हो जाएगा।

सर्वरोग शांति का सिद्ध मंत्र

पर्वत ऊपर पर्वत, पर्वत ऊपर स्फटिक शिला
स्फटिक शिला पर अंजनी, जिन जाया हनुमंत
नेहला टेहला, कांख की कंखराई
पीछे की आदटी, कान की कनफेट राल की
बद कंठ की कंठमाला, घुटने का डहरू
दाढ़ की दाढ़शूल, पेट की ताप तिल्ली किया
इतने को दूर करे, भस्मंत न करे,
तो तुझे माता अंजनी का दूध पिया हराम
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा
सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र का प्रयोग ब्रह्मचारी लोग ही करें। प्रयोग के समय मंत्र का जप करते हुए झाड़ा लगाने से रोगी के समस्त रोग शांत हो जाते हैं।

अन्न पचाने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को अगस्त्यं कुम्भकरणं च शांति च बड़वानल आहार पाचनार्थायस्मरत भीमास्य पंचकं स्फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

भोजन करने के पश्चात सात बार इस मंत्र को पढ़ते हुए पेट पर हाथ फेरने से खाया हुआ अन्न शीघ्रता से पच जाता है।

मोचादि पीड़ा का निवारक मंत्र

खेल-कूद में अथवा गिर जाने आदि कारणों से प्राय: पैर में मोच आ जाती है। यह मोच बहुत अधिक पीड़ा देती है। कभी-कभी इसके कारण होने वाली पीड़ा असह्य हो जाती है। निम्नलिखित शाबर मंत्र के द्वारा इस पीड़ा से शांति पाई जा सकती है।

ॐ नमो आदेश श्रीराम को देऊं मचक उड़ाई
उसके तन से तुरत पीर भागि जाई
ना रही रोग पीर फूंक से सब हुई पानी
अमुक की कथा छोड़ भाग तू मचकानी
पिता ईश्वर महादेव की दुहाई
आदेश सियाराम लखन गुसाईं।

सर्वप्रथम एक कटोरी में थोड़ा-सा सरसों का तेल लेकर गरम करें और इकतीस बार मंत्र पढ़कर हर बार तेल को अभिषिक्त करते रहें। इस तेल को मोच वाले स्थान पर मलने से दो-तीन दिन में ही मोच दूर होकर दर्द जाता रहता है।

कमर दर्द दूर करने का मंत्र

राह चलते समय किसी गड्ढे में पैर पड़ जाने से अथवा भारी बोझ उठाने आदि कारणों से कमर में दर्द हो जाता है। कभी-कभी वात-विकार के कारण भी ऐसा हो जाता है। इस कमर दर्द के कारण व्यक्ति को सीधा होने में भी पीड़ा होती है। उसके लिए सीधा लेटना, उठना और बैठना भी कठिन हो जाता है। वह असह्य वेदना के कारण बेचैन हो उठता है। इस रोग में निम्नलिखित शाबर मंत्र लाभकारी सिद्ध होता है।

चलता आवै, उछलता जाय, भस्म करंता डह डह जाये, सिद्ध गुरु की आन, मंत्र सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शुक्लपक्ष के रविवार या मंगलवार के दिन किसी कुमारी कन्या के हाथ से काते गए सूत के एक सौ एक धागे लेकर उन्हें रस्सी की तरह बट लें। सभी धागों को आपस में मिलाते समय उपर्युक्त मंत्र का जप करते रहें। बट लेने के बाद ग्यारह बार मंत्र पढ़कर धागे पर फूंक मारें। यह धागा रोगी की कमर में बांधने से उसका कमर दर्द तथा चनका आदि दूर हो जाता है।

बवासीर नाशक मंत्र

यह एक अत्यंत कष्टकर रोग है। इसमें रोगी को असह्य वेदना होती है। यह व्याधि मलद्वार में होती है। यदि रोगी कोई स्त्री हो, तो वह संकोचवश इस बारे में किसी से कह नहीं पाती है, न आराम से उठ-बैठ सकती है। शौच के समय उसे भयंकर पीड़ा होती है। इस रोग में गुदाद्वार में सूजन, दर्द, कभी-कभी घाव और रक्तस्राव की स्थिति आ जाती है। यह ऐसी व्याधि है, जिसके एक बार हो जाने पर रोगी नारकीय यातना सहन करने के लिए विवश हो जाता है। निम्नलिखित शाबर मंत्रों को सिद्ध करके, किसी भी एक मंत्र का प्रयोग कर, रोगी को कष्टमुक्त किया जा सकता है।

पहला मंत्र

ॐ काका करता क्रोरी कर्ता ॐ करता से होय, यरसना दश हूंस प्रकटे खूनी बादी बवासीर न होय, मंत्र जानके न बतावे द्वादश ब्रह्महत्या का पाप होय, लाख जप करे तो उसके वश में न होय, शब्द सांचा पिण्ड काचा, हनुमान जी का मंत्र सांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को होली, दीपावली या ग्रहणकाल में एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर प्रतिदिन बासी पानी को इक्कीस बार अभिमंत्रित करके, उस पानी को शौच के लिए प्रयोग करना या कराना चाहिए। यह क्रिया सात से इक्कीस दिन तक करने से हर तरह की बवासीर में आराम मिलता है। इसी मंत्र

से तीन या पांच बार झाड़ा भी देना चाहिए। दोनों प्रयोग साथ-साथ करने में आराम जल्दी हो जाता है।

दूसरा मंत्र—

ॐ नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी को भीतर बाहर बोलूं सुन देकर सुन देकर मन तूं काले जलावत केहि कारण रसहित पर तूं डूमर में विख्यात रहे ना ऊपर अमुक के गात नरसिंह देव तोसे बोले बानी अब झट से हो जा तू पानी आज्ञा हाड़ि दासी, फुरो मंत्र चण्डी उवाच।

इस मंत्र को पढ़ते हुए पन्द्रह दिनों तक रोगी को नित्य तीन बार झाड़ें। इस शाबर मंत्र के प्रभाव से चाहे जैसी बवासीर हो, नष्ट हो जाती है। मंत्र में जहां अमुक शब्द आया है, वहां पर रोगी का नाम बोलना चाहिए।

तीसरा मंत्र

ॐ छद छुह छलक छलाई हुं हुं क्लं क्लां क्लीं हुं।

एक लोटा जल लेकर इस मंत्र के सात बार जप से उसे अभिषिक्त करें और रोगी को शौचक्रिया के पश्चात गुदा धोने के लिए दें। इसके कुछ दिनों के नित्य प्रयोग से बवासीर में लाभ होता है।

चौथा मंत्र

ईसा ईसा ईसा कांच कपूर चोर के शीशा अलिफ अक्षर जाने नहिं कोई, खूनी बादी दोनों न होइ, दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।

इसकी प्रयोग विधि भी तीसरे मंत्र की भांति है। अंतर केवल इतना है कि इस मंत्र से अभिषिक्त जल को चालीस दिनों तक प्रयोग कराया जाता है।

पांचवां मंत्र

उमती उमती चल चल स्वाहा।

इस मंत्र को ग्रहणकाल में एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध करें। बाद में इक्कीस बार जप करके लाल रंग के सूत में तीन गांठें लगाएं और रोगी के दाहिने पांव के अंगूठे में बांध दें। इससे बवासीर रोग में लाभ होगा।

छठा मंत्र

खुरशान की टोनी साव खूनी वादी दोनों जाय, इमती चल डमती चल स्वाहा।

लाल धागे में तीन गांठें लगाएं और उपर्युक्त मंत्र का इक्कीस बार उच्चारण करके उसे अभिमंत्रित करें। जिसे कष्ट अधिक हो, उसके पांव के अंगूठे में बांध या बंधवा दें और गुदा प्रक्षालन के निमित्त जल को अभिमंत्रित कर दें।

नोट—शाबर मंत्रों में एक ही रोग या लक्ष्य के अनेक मंत्र हैं। इसी तरह

अनेक लक्ष्य अथवा रोग निवारण के कुछ समान मंत्र भी हैं, अतः साधक को इनके प्रति संदिग्ध नहीं होना चाहिए।

नेत्रपीड़ा निवारक मंत्र

नीतिकारों का कथन है, "*सर्वेन्द्रियाणां नयनं प्रधानम्*", अर्थात मनुष्य के शरीर में नेत्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग हैं। बिना नेत्रों के संसार में अंधेरा ही अंधेरा है। इसलिए नेत्रों की सुरक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का सर्वप्रथम कर्तव्य है। बहुत से ऐसे रोग अकस्मात हो जाते हैं, जिनका तत्काल उपचार न कराया जाए तो दृष्टि-दोष उत्पन्न हो सकता है। दृष्टि जा भी सकती है। निम्नलिखित शाबर मंत्रो का प्रयोग अनेक प्रकार के नेत्र विकारों को दूर करने में सक्षम है।

पहला मंत्र

ॐ नमो राम का धनुष लक्ष्मण का बाण
आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आण।

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को श्मशान में जाकर उपर्युक्त मंत्र का दस माला जप करके मंत्र सिद्ध कर लें। अब जब किसी की आंख में दर्द-कष्ट हो, तो आंखों से नीम की हरी डाली को स्पर्श करके तथा मंत्र को पढ़ते हुए सात बार झाड़ दें। तुरंत आराम हो जाएगा।

दूसरा मंत्र

ॐ अंगाली, बंगाली अताल पताल गर्द मर्द अदार कटार फट् फट् कट् कट् ॐ हुं हुं ठः ठः।

रविवार अथवा मंगलवार के दिन स्नानादि से निवृत्त होकर, एकांत में शुद्धता-पूर्वक उपर्युक्त मंत्र का एक माला जप करें। फिर आम की लकड़ी की अग्नि में, हवन-सामग्री द्वारा एक सौ आठ आहुतियां देकर मंत्रसिद्धि करें। जिस किसी को नेत्र-व्याधि हो, उसे सामने बैठाकर मंत्र को पढ़ते हुए सिर से पांवों तक इक्कीस बार झाड़ा करें। इससे हर प्रकार की नेत्र व्याधि का शमन हो जाएगा।

तीसरा मंत्र

ॐ झलमल ज़हर भरी तलाई अस्ताचल पर्वत से आयी जहां बैठा हनुमंता जायी फूटै न पके न करे पीड़ा मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरु को।

दीपावली की रात्रि में इस मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर सिद्ध कर लें। आवश्यकता के समय नीम की टहनी से मात्र ग्यारह बार झाड़ा देने से नेत्रों की पीड़ा दूर होती है।

चौथा मंत्र

उत्तर दिशि कूल कामाख्या सुन योगी की वाचा इस्माइल योगी की दो बेटी एक के सिर पर चूल्हा, दूसरी काटै माड़ी फूला, लोना चमारी दुहराय फूली काछा, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार या मंगलवार के दिन प्रातः रोगी और मंत्र-साधक दोनों स्नानादि से निवृत्त होकर, साफ कपड़े पहनकर आमने-सामने बैठ जाएं। साधक उपर्युक्त शाबर मंत्र को बाईस बार पढ़े और भूमि पर चाकू की नोक से हर बार मंत्र की समाप्ति पर आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचकर काटे और रोगी की आंख पर फूंक मारे। यह क्रिया इक्कीस दिनों तक जारी रहनी चाहिए। रोगी की आंखें फूला और जाला से मुक्त हो जाएंगी।

पांचवां मंत्र

ॐ नमः झिलझिल करे गरल भरी तलैया, पश्चिम गिरि से आई करन भलैया, तहं आय बैठेउ वीर हनुमंता, न पीड़े न पाके नहीं फंहंता, यती हनुमंता राखें होड़ा।

किसी रविवार या मंगलवार के दिन से प्रारंभ करके सात दिनों तक नीम की ताज़ा टहनी तोड़कर, उसकी पत्तियों से सात बार मंत्र पढ़कर, आंखों पर फेरते हुए झाड़ा देने से सब प्रकार की आंखों की पीड़ा दूर हो जाती है।

छठा मंत्र

ॐ भाट भाटिनी निकली कहे चलि आई उस पार भाटिनी बोली, हम बिआइब, उसकी छाली बिआइब, हम उपसमाछी पर मुण्डा मुण्डा अण्डा सोहिल तारा तारा अजयपाल राजा उतर रहे पार, अजयपाल पानी भरत रहे मसकदार यह देख बाबा बोलाउ गोड़िया भला उजार तैके हम अधोखी जाय रतौंधी, ईश्वर महादेव की दुहाई उतर जाय।

इस मंत्र को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। इसमें नेत्ररोगी को सामने बैठाकर इक्कीस बार मंत्र पढ़कर आंख पर फूंक मारें। यह प्रयोग इक्कीस दिनों तक करने से रोगी का तिमिर रोग समाप्त हो जाता है। यह प्रयोग रविवार या मंगलवार के दिन से आरंभ करने से लाभ शीघ्र होता है।

सातवां मंत्र

ॐ नमो वन में ब्याई बानरी जहां-जहां हनुमान अंखिया दीर कषावरि गिहिया थने लाई चरिउ जाय भस्मंत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का सात बार उच्चारण करके झाड़ें तो नेत्रपीड़ा दूर होती है।

आठवां मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को श्रीराम की धुणी लक्ष्मण का बाण आंख दरद करे तो गुरु गोरखनाथ की शक्ति, सत्यनाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में एक हजार एक सौ नौ बार जपकर इतनी ही संख्या में मंत्रों की आहुति देने से सिद्ध होता है। प्रयोग करते समय लोहे के तीर से इकतीस मंत्रों द्वारा झाड़ने में नेत्र पीड़ा दूर होती है।

नौवां मंत्र

वनरा गांठि, बनरी तो डांट।
हनुमान अकण्टा, विलारी बाघिनी थनैला।
कर्णशूल जाई, श्रीरामचंद्र बानी, जल पथ होई।

नीम की डाली से इकतीस बार झाड़ें, साथ ही मंत्रोच्चारण करते रहें। यह झाड़ा तीन दिन लगाने से नेत्र पीड़ा नष्ट हो जाती है।

दसवां मंत्र

सोने की सिलौटी रूपे की जीरा सीता माता बाटै बैठी छर काटें छर बांटें, फूली काटे, भाड़ा काटे, लाली काटे, आंखी न काटे, होरा काटे, मेरी आन मेरे गुरु की आन, ईश्वर गौरा पार्वती गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

आंखों की लाली, फूला, जाला, नाखूना आदि जो भी नेत्र पीड़ा हो, तो इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी की आंखों में इक्कीस बार फूंक मारें। इससे शीघ्र लाभ होता जाता है। यह प्रयोग निरंतर कुछ दिनों तक करना चाहिए।

वायुगोला नाशक मंत्र

कभी-कभी किसी कारण से पेट में वायु कुपित होकर बंध जाती है, जिससे पेट फूल जाता है और उसमें भारी पीड़ा होने लगती है। व्यक्ति इस कारण बेचैन हो जाता है। वायु खारिज होने पर ही व्यक्ति को शांति मिलती है। निम्नलिखित शाबर मंत्र से शीघ्र लाभ होता है।

ॐ नमो काली कंकालिनी, नदी पार बसे इस्माइल जोगी, लोहे का कछौटा काटि काटि लोहे का गोला काटि काटि हो शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को सिद्ध करना आवश्यक नहीं है, क्योंकि यह स्वयं सिद्ध मंत्र हे। रविवार या मंगलवार के दिन रोगी को सामने बैठाएं, फिर मंत्र पढ़कर चाकू से रोगी के पेट का स्पर्श कर, भूमि पर एक रेखा खींच दें। यह क्रिया इक्कीस बार करें। इस क्रिया से वायुगोला आदि विकार का शमन हो जाता है। यह क्रिया तीन दिन अवश्य करें।

वायुगोला पीड़ा से मुक्ति का मंत्र

कौन पुरवाई कहां चले, वन ही चले, वागहे के कोयला, कोयला का करवेह। सारी पत्र खण्ड कर वेहु, अष्टोत्तर दांत व्याधि काटे। सिर रावण का दश, भुज़ा रावण की बीस। ककुही वर वटी, वायुगोला बांधूं, बांधूं में गुल्म। दुहाई महादेव गोरा पार्वती नीलकण्ठ की फुरो मंत्र दुहाई।

वायुगोला से पीड़ित व्यक्ति को इस मंत्र का जप करते हुए झाड़ा लगाने पर वायुगोला-पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है।

शिरोपीड़ा निवारक मंत्र

मानसिक तनाव की अधिकता, मादक द्रव्यों का अत्यधिक सेवन, भय और अनिद्रा जैसे कारणों से शिरोपीड़ा रोग अर्थात सिर में पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। यह रोग कभी-कभी उग्र रूप ले लेता है। मृत्यु से भी अधिक दारुण यंत्रणा इसमें झेलनी पड़ती है। मानसिक तनाव कभी-कभी इतना अधिक बढ़ जाता है कि मस्तिष्क की शिराएं फट जाती हैं (जिसे ब्रेन हेमरेज कहते हैं) और मृत्यु एक तरह से निश्चित हो जाती है। निम्नलिखित शाबर मंत्र इस रोग में लाभकारी है।

ॐ नमो आज्ञा गुरु को, केश में कपाल, कपाल में भेजा बसै, भेजा में कीड़ा कीड़ा करे न पीड़ा, कंचन की छैनी, रूपै का हथौड़ा, पिता ईश्वर गाड़, इनके श्रापे को महादेव तोड़े, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी शुभ दिन अथवा रविवार या मंगलवार को इस मंत्र का एक सौ आठ जप करके व इक्कीस बार लोबान की आहुति देकर सिद्ध कर लें। जब कभी शिरोपीड़ा का रोगी आए, तो उसे सामने बैठाकर मंत्र को पढ़ते हुए थोड़ी-सी राख ज़मीन पर बिछाकर और उंगली से उसे सात बार काटें तथा सात बार फूंक कर रोगी के सिर पर मारें। दो-तीन दिन के प्रयोग से ही रोगी को आराम हो जाएगा। फिर आगे भी कभी शिरोपीड़ा नहीं होगी।

सिरदर्द निवारक मंत्र

पहला मंत्र

एक घर घालै एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रोगी को सामने बैठाएं और उसका माथा पकड़कर यह मंत्र पढ़ें और सिर पर फूंक मारें। यह क्रिया सात बार करें। यह प्रयोग सुबह-शाम तीन दिन तक करने से सिरदर्द की समाप्ति हो जाती है।

दूसरा मंत्र

लंका में बैठके माथ हिलावे हनुमंत, सो देखि राक्षसगण परायद दूरंत, बैठी सीता देवी अशोक वन में देखि हनुमंत को आनंद भई मन में, गई उर विषाद देवी स्थिर दरसाय, इसी में अमुक के सिर व्यथा पराय अमुक के नहीं कछु पीर, नहीं कछु मीर, देस कामाख्या हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

सिरदर्द से आक्रांत व्यक्ति को इस तरह बैठाएं कि उसका मुख दक्षिण दिशा की ओर रहे। फिर उसका माथा पकड़कर फूंक मारें। इक्कीस बार मंत्र पढ़कर फूंक मारने से सिरदर्द का निवारण हो जाता है। मंत्र में अमुक के स्थान पर रोगी का नाम बोलना चाहिए।

आधासीसी के दर्द निवारक मंत्र

यह व्याधि भी शिरोपीड़ा के अंतर्गत ही आती है। इसमें मनुष्य के केवल आधे सिर में दर्द होता है। जिस तरफ़ सिर में दर्द होता है, उस तरफ की कनपटी में भी पीड़ा होती है। यह रोग बेचैन कर देने वाला है। रोगी को प्रतीत होता है, जैसे उसका आधा सिर फटा जा रहा हो। निम्नलिखित शाबर मंत्रों का प्रयोग कर व्यक्ति को इस रोग से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

पहला मंत्र

ॐ नमो वन में ब्याई वानरी उछल डाल पर जाए, कूद कूद के डाल पे, कच्चे वन फल खाय, आधा तो आधा फोड़े, आधा देय गिराय, हुंकारत हनुमान जी आधासीसी जाय।

इस मंत्र का सूर्यग्रहण, दीपावली की रात अथवा किसी अमावस्या की रात में एक हज़ार एक बार दीपक जलाकर जप करने से ही यह सिद्ध हो जाता है। दर्द के स्थान पर थोड़ी-सी राख मलकर, सात बार मंत्र पढ़ने से आधासीसी का दर्द दूर हो जाता है।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो आधासीसी टारी हुं हुं हुंकारी दुपहरी प्राचानी अंखियां मूंद मुख पाल डारी 'अमुक' को पीर रहे तो दोहाई गौरी की आदेश फुरो ॐ ठं ठं स्वाहा।

रोगी को सामने बैठाएं। सेंधे नमक की डली को पानी की सहायता से सिल पर घिसें। अब इक्कीस बार मंत्र पढ़कर रोगी के सिर पर फूंक मारें तथा सेंधे नमक का लेप चंदन की भांति रोगी के सिर और माथे पर लगाएं। इससे दर्द दूर हो जाएगा। मंत्र में 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम लें।

तीसरा मंत्र

शंकर शंकर खोजा जाई शंकर बैठे जंगल जाई, भूत-बेताल-जोगिनी नचाय, सब देवन की जय जय मनाय, ब्रह्मा-विष्णु पूजे जायें, अधकपारी दर्द से पीड़ा छुड़ाय।

विजयादशमी अथवा दशहरे के दिन ग्यारह सौ बार मंत्र जपकर और इक्कीस बार लोबान की आहुति देकर पहले मंत्र सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता पड़ने पर रोगी को अपने सामने बैठाएं और उसके सिर पर जल की धारा छोड़ते हुए मंत्र पढ़ें। किसी बड़े लोटे को जल से आधा भरकर पहले ही रख लें। एक सौ उनतालीस बार मंत्र पढ़कर, उतनी ही बार जलधारा छोड़नी चाहिए। थोड़ा जल लोटे में बचा रहना चाहिए। उस शेष जल को रोगी के ऊपर से उसारकर किसी चौराहे पर डाल आएं। सदा के लिए रोगी को इस दर्द से मुक्ति मिल जाएगी।

चौथा मंत्र

कौन मरता कुडूम करता, वाटका घाटका हांक देता, पवन सुनिया योगी यती अचल अचल।

इस मंत्र की सिद्धि एवं प्रयोग पहले मंत्र के समान है। इसका प्रभाव भी अचूक माना जाता है।

पांचवां मंत्र

वन में जाई बांदरी जो आधा फल खाय।
खड़े मुहम्मद हांक दे आधा सीसी जाय॥

शुक्लपक्ष में पहले गुरुवार को इस मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर सिद्ध कर लें। फिर इतनी ही बार मंत्र पढ़कर रोगी के सिर पर तीन बार फूंक मारें। आधासीसी का निवारण हो जाएगा।

छठा मंत्र

ॐ अचल गुसाई बन खण्डे राय चोरन झंके बाधन कच्चे बन फल खाय, हांक मारी हनुमंत ने इस पिण्ड आधा सीसी उतर जाय, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रोगी के सिर में जिस ओर दर्द हो, वहां हाथ रखकर प्रयोक्ता ग्यारह बार मंत्र पढ़कर उस जगह पर दो-तीन फूंक मारे तो शीघ्र लाभ हो जाता है।

सातवां मंत्र

ॐ कामरू देस कामाक्षा देवी, जहां बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी के तीन पुत्री। एक रोले एक पछौले, एक ताप तिजारी इकतरा मथवा आधा शीशी टौरै। उतरे तो उतारो, चढ़े तो मारो, ना उतरे तो गंगु रुड़ मोर हंकारौ। शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र को इक्कीस बार पढ़कर मोर पंख से तीन बार रोगी को झाड़ा लगा दें। इससे ताप, तिजारी, मथवा और आधासीसी में आशातीत लाभ होता है।

चेचक शांतिकर मंत्र

आज के आधुनिकतम जगत में इसे संक्रामक अर्थात छूत का रोग माना जाता है, जबकि पुरातन मान्यता के अनुसार यह शीतला देवी के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला रोग है। आयुर्वेद में कहा गया है कि यह आंतरिक ज्वर की प्रतिक्रिया स्वरूप होने वाला विकार है। शाबर मंत्र के प्रयोग से इस रोग की शांति शीघ्र हो जाती है।

ॐ घट घट बैठी शीतला, फेरत आवै हाथ
ॐ श्रीं श्रीं श्रीं शब्द सांचा, फुरो वाचा।

चंद्रग्रहण या दीपावली की रात्रि में इस मंत्र को एक सौ आठ बार जपें और फिर एक सौ आठ आहुतियां देकर मंत्र सिद्ध कर लें। अब जब भी कोई बच्च या बड़ा चेचक का रोगी आए, तो सात बार मंत्र पढ़ते हुए, उसके शरीर पर हाथ फिराएं। इसी से शीतला शांत हो जाती है और रोग भी धीरे-धीरै दूर हो जाता है।

मिरगी रोग निवारक मंत्र

मिरगी के रोगी को बहुत सावधान रहना पड़ता है। उसका दौरा कहीं भी और कभी भी पड़ सकता है, ऐसे व्यक्ति को यात्रा आदि पर अकेले कभी नहीं जाना चाहिए। देखा गया है कि आधुनिक औषधियों से भी यह रोग जाता नहीं है, केवल दब जाता है। किंतु निम्नलिखित शाबर मंत्र के प्रयोग से यह अवश्य ही नष्ट हो जाता है।

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्रीराम जी फूंकें मिरगी बाई सूखे सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।

मुख्यतः शाबर मंत्रों का प्रयोग या शाबर मंत्र की साधना रविवार या मंगलवार को ही की जाती है। ये दिन शाबर मंत्रों के लिए श्रेष्ठ हैं। किसी रविवार या मंगलवार के दिन स्नानादि से निवृत्त होकर, इक्कीस बार मंत्र का जप करें। फिर इसे भोजपत्र पर अनार की कलम द्वारा अष्टगंध स्याही से लिखें। तत्पश्चात इसे लोबान की धूनी देकर किसी कपड़े या ताम्रपत्र के कवच में बंद करें और काले डोरे के सहारे रोगी के गले में लटका दें। इस प्रयोग से मिरगी का रोग सदा के लिए दूर हो जाता है।

कर्णरोग शमन के मंत्र

कान में दर्द, कान का बहना, कान में खुजली या कान में फुंसी आदि का होना कोई नई बात नहीं है। कान के ऐसे रोग बच्चों और बड़ों किसी को भी हो

सकते हैं। वैसे कान के रोग बच्चों को ही अधिक होते हैं। निम्नलिखित शाबर मंत्र कान के विकारों को दूर करने के लिए हैं।

पहला मंत्र

ॐ कनक पर्वत पहाड़ धंधुवार धार घुस लेकर डार डार पात पात झार झार मार हुं हुंकार ॐ क्लीं कीं स्वाहा।

किसी रविवार या मंगलवार के दिन सांप की बांबी की मिट्टी लेकर आएं। उसमें से थोड़ी-सी मिट्टी लेकर उपर्युक्त मंत्र के इक्कीस जप से अभिमंत्रित करें। फिर उस मिट्टी को पानी में सानकर रोगी के पीड़ित कान पर चुपड़ दें। कान का जो भी कष्ट होगा, नष्ट हो जाएगा।

दूसरा मंत्र

बनाह गठि वनरी तो डाटे हनुमान कंटा, बिलारी बाघी थनैली कर्ण मूल सब जाय, राम चन्द्र का वचन पानी हो जाय।

इस मंत्र को पढ़ते हुए अग्नि की भस्म द्वारा रोगी को सात बार झाड़ने से कान का दर्द तुरंत समाप्त हो जाता है।

व्रणादि नाशक मंत्र

निम्नलिखित मंत्र फोड़ा-फुंसी, बद, गांठ, बाघी और कखौरी आदि हर प्रकार के व्रण को दूर करने में श्रेष्ठ है।

ॐ नमो बने बिआई बनरी, जहां जहां हनुमंत, आंख पीड़ा कखावर गिहिया थनैलाई चारिउ जाइ भसमंतन गुरु की शक्ति मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

दीपावली की रात्रि में अथवा किसी शुभ मंगलवार के दिन, रात्रि के समय उपर्युक्त मंत्र को एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध करें। यदि मंत्र को अधिक प्रभावकारी बनाना हो तो एक सौ आठ आहुतियों से हवन भी करें। अब जब भी किसी को व्रणादि की शिकायत हो तो चूल्हे की राख को मंत्र से इक्कीस बार अभिषिक्त करके और रोगी के ऊपर से उसारकर हवा में बिखरा दें। इस क्रिया से रोगी को शीघ्र लाभ हो जाएगा।

पेटदर्द निवारण के मंत्र

पहला मंत्र

पेट व्यथा पेट व्यथा, तुम हो बलवीर, तेरे दर्द से पशु मनुष्य नहीं स्थिर, पेट पीर ले वो पल में निकार दो फेंक सात समुद्र पार, आज्ञा कामरू कामाक्षा होई आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

पहले पेटदर्द से पीड़ित व्यक्ति को लिटा दें। फिर पेट पर [illegible]वकर और

सात बार मंत्र को पढ़कर पेट को धीरे-धीरे सहलाएं तथा फूंक मारकर रोगी को उठ जाने को कहें। इसी से पेट का दर्द दूर हो जाएगा।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो इद्ठी मीट्ठी भसम कुरु कुरु स्वाहा।

पहले बारह हज़ार पांच सौ बार जपकर मंत्र सिद्ध करें। फिर जब भी कोई पेट दर्द से पीड़ित हो, तो कटोरी में थोड़ा-सा जल लेकर उसे मंत्र के इक्कीस जप से अभिमंत्रित कर रोगी को पिला दें। वह पेटदर्द से मुक्त हो जाएगा।

दंतपीड़ा निवारक मंत्र

दंतपीड़ा अर्थात दांतों का कष्ट किसी भी प्रकार से हो सकता है। दांतों का हिलना, दांतों में कीड़ा लगना, मसूड़ों का फूल जाना अथवा बादी आदि कारणों से भी कभी-कभी दांतों में असहनीय वेदना होती है। संभवतः दांतों की पीड़ा शरीर की अन्य पीड़ाओं के मुकाबले अधिक कष्टकर होती है। निम्नलिखित शाबर मंत्र इसमें जादू जैसा काम करता है।

मंत्र इस प्रकार है—

आग बांधौं, अगिया बैताल बांधौं, सौ काल विकराल बांधौं, सौ लोहा लोहार बांधौं, बजर अस होय वजरथन, दांत पिराय तो महादेव की आन।

रविवार या मंगलवार के दिन से यह प्रयोग आरंभ करे। मंत्र पढ़ते हुए रोगी के दांतों पर नीम की ताज़ा टहनी से झाड़ा दें। इससे व्यक्ति को दंतपीड़ा से मुक्ति मिल जाती है। दाएं हाथ की तर्जनी उंगली दुखते दांत पर रखकर इक्कीस बार मंत्र पढ़ने से भी दर्द दूर हो जाता है। यह प्रयोग तब करना चाहिए, जब नीम की ताज़ा टहनी न मिलें।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो आदेश कामरू देश कामाख्या देवी, जहां बसै इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने पाली गाय, नित दिन चरने बन में जाय, बन में घास पात को खाय, गोबर ते कीड़ा उपजाय, सात सूत सुतियाला पुच्छि पुच्छयाला देह पीला मुंह काला, वह अन्न कीड़ा दंत गलावे, मसूढ़े गलावे, दाढ़ मसूढ़ करे पीड़ा तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै।

छोटी-छोटी एक ही साइज़ की तीन लोहे की कीले लें। हर कील पर सात-सात बार उपर्युक्त मंत्र को पढ़ें और किसी लकड़ी पर ठोंक दें। कीलें एकदम सीधी जानी चाहिए। इस प्रयोग से व्यक्ति की दंतपीड़ा दूर हो जाएगी। यदि ठोंकते समय कोई कील टेढ़ी हो गई तो पीड़ा दूर नहीं होगी। इस दशा में पुनः यह प्रयोग करना चाहिए।

तीसरा मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को सवारी में शीशी, शीशी में माची माची में मसूढ़ा, मसूढ़ा में पीड़ा कीड़ा मरै, पीड़ा टरै फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार या मंगलवार के दिन दो लोहे की कीलें लेकर सात बार मंत्र से अभिषिक्त करें। फिर मंत्र पढ़ते हुए एक कील को कुएं में डाल दें तथा दूसरी कील को नमक-पानी के घोल में भिगोकर किसी नीम के वृक्ष में ठोंक दें। इससे दांत की हर प्रकार की व्याधि दूर हो जाएगी।

चौथा मंत्र

ॐ नमो कीड़वे तू कुंडकुंडाजा लाल पूंछ तेरा मुख काला मैं तोहि पूंछूं कहां ते आया, तोड़ मांस सब को क्यों खाया, अब तू जाय भस्म हो जाय, गुरु गोरखनाथ के लागूं पायं, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पढ़ते हुए नीम की टहनी से झाड़ने से दांतों के कीड़े मर जाते हैं तथा कीड़ों के कारण होने वाली पीड़ा भी समाप्त हो जाती है।

पांचवां मंत्र

हे दंता तुम क्यों कुलता हमें तुम संजाइना हमरा कसर तुम हो बत्तीस हमरी तुमरी कौन-सी रीति हम कमायं तुम बैठ खाऊं मृत्यु की बिरियां संग ही जाऊं।

पहले मुंह धोएं और फिर हाथ में जल लेकर सात बार इस मंत्र से कुल्ला करें। इससे दांतों की पीड़ा दूर होगी तथा हिलते दांत भी जम जाएंगे।

दाढ़ पीड़ा निवारक मंत्र

ओम नमो आदेश गुरु को नौ लाख कांबरू एक बार जायं बैठ बगल बाल गंगा जमुना सरस्वती जहां बैठे गोरख मौसम सिखर परवत से आइ कामधेनु छत्तीस रोग टलें आधा दीया पृथ्वी आधा वायु भौंरा पाहीं रणया सिसपासु बटियाम दौड़ रक्षा करें श्री रामचंद्र हनुमंत दाल भाव रोग दोष जायं पराई सीव गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र से इक्कीस बार झाड़ा लगाएं और साथ ही पानी के छींटे देते जाएं, दाढ़ पीड़ा का शमन हो जाएगा।

अदीठ नाशक मंत्र

अदीठ का अर्थ है, न दिखाई देने वाला। कभी-कभी कमर पर अपने आप एक फोड़ा हो जाता है, जिसे ग्रामीण भाषा में 'अदीठ' कहते हैं। यह रोग बहुत ही भयंकर और जानलेवा होता है। प्रायः मधुमेह (डायबिटीज) के रोगियों को ही यह

रोग अधिक होता है। अतः रोग के उपचार के साथ शाबर मंत्र का प्रयोग अमोघ रहता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो सिर कटा नख फटा,
विष कटा अस्थिमेद मज्जगत फोड़ा,
फुंसी अदीठ हुम्बल रैल्याव रोग रींधन जाय,
चौंसठ जोगिनी बावन वीर छप्पन भैरव रक्षा कीजै आय
शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहणकाल में एक हज़ार एक बार मंत्र को जप कर और इक्कीस आहुतियों के साथ हवन करके मंत्र को सिद्ध कर लें। आवश्यकता के समय रोगी को सामने बैठाकर सात बार मंत्र से झाड़ा दें तथा सात बार जमीन की धूल लेकर फोड़े के चारों ओर लगा दें। इस क्रिया को सात दिन तक करें। रोगी को इस भयंकर पीड़ा से मुक्ति मिल जाएगी।

कखौरी नाशक मंत्र

इसे 'कंखवार' भी कहते हैं। इस रोग की गांठ बगल में होती है। पक जाने पर यह रिसने लगती है। इसके होने पर हाथ को ऊपर या नीचे ले जाने में भारी पीड़ा होती है। यदि यह पककर न फूटे तो शल्य चिकित्सा के द्वारा इसको निकालना पड़ता है। इस रोग को समाप्त करने में निम्नलिखित शाबर मंत्र बड़ा प्रभावी सिद्ध होता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो कांखबाई भरी तलाई
जहां बैठे हनुमंत आई
पके न फूटे चले न नाल
रक्षा करे गुरु गोरखनाथ।

किसी भी रविवार या मंगलवार को रोगी को सामने बैठाकर नीम की टहनी से झाड़ते हुए यह मंत्र पढ़ना चाहिए। प्रतिदिन इक्कीस बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दें। तीन दिनों के इस प्रयोग से रोग शांत हो जाता है।

चिणाक निवारक मंत्र

चण किली, मण किली, नीबी तीती, जीमती जीमा तीती 'अमुक' चिणक गमाय तीती भलो कियो म्हारी बाई।

दो कंकड़ लें। एक चिणक पर रखें और दूसरा हाथ में रखें। एक बार मंत्र

पढ़ें और हाथ वाला कंकड़ चिणक वाले कंकड़ से छुआ दे। इस प्रकार यह क्रिया सात बार करें। चिणक ठीक हो जाएगी।

खाखबिलाई निवारक मंत्र

ॐ नमो नलाई ज्यां बैठया हनुमंत आई। पके न फूटे, चले बाल जति रक्षा करे, गुरु रखवाला। शब्द सांचा पिण्ड काचा, चलो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र को इक्कीस बार पढ़कर नीम की टहनी से इक्कीस बार झाड़ने से खाखबिलाई ठीक हो जाती है। यह प्रयोग अंडकोष की वृद्धि हो जाने पर भी किया जा सकता है।

बाला (नहरवा) का मंत्र

ॐ नमो मर हर दे संक सारी गांव महामा सिथुर चौद से बालै कियो विस्तार बालो उपनो कपाल भांप या हुति यो गीहुं ओर तोड़ कीजै नै उबाला किया, पाके फूटे पीड़ा करे तो गोरखनाथ की आज्ञा फुरे।

किसी कुमारी कन्या के हाथों कते सूत का धागा लेकर उस पर मंत्र पढ़कर सात गांठ लगाएं और रोगी के पैर से बांध दें। इससे बाला रोग ठीक हो जाएगा।

कंठबेल निवारक मंत्र

दाएं या बाएं किसी भी कान के नीचे, गरदन में जबड़े के सिरे पर एक गिल्टी-सी उभर आती है। इसे ही कंठबेल या कंठगांठ कहते हैं। यह कितनी कष्टकर होती है, इसका पता इसी बात से चल जाता है कि रोगी न बोलने में समर्थ होता है और न ही वह कुछ खा और पी सकता है। इसके निवारण के लिए निम्नलिखित शाबर मंत्र का प्रयोग लाभकारी है।

**ॐ नमो कंठबेल तद्रु मद्रु माली
सिर पर जकड़ी वज्र की ताली
गोरखनाथ जागता आया
बढ़ती बेल को तुरंत घटाया
जो कुछ बची ताहि मुरझाया
घट गई बेल बढ़त नाहिं
बैठी तहां उठत रही
पकै न फूटे पीड़ा करे तो
गुरु गोरखनाथ की दुहाई
ॐ नमो आदेश गुरु को**

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार से रविवार तक अथवा मंगलवार से मंगलवार तक प्रतिदिन इस मंत्र को पढ़ते हुए मोरपंख से रोगी को सिर से पांव तक सात बार झाड़ें। इससे कंठबेल की व्याधि दूर हो जाएगी।

नाभि टालने के मंत्र

इसे धरण डिग जाना भी कहते हैं। जब नाभि अपने स्थान से हट जाती है। तो पेट में भयंकर पीड़ा होती है। किसी-किसी को दस्त की शिकायत हो जाती है। जब तक नाभि अपने ठिकाने पर न आ जाए, तब तक यही दशा बनी रहती है। शाबर मंत्र धरण रोग में बहुत लाभ करते हैं।

पहला मंत्र

ॐ नमो नाड़ी नाड़ी नौ सौ नाड़ी बहत्तर सौ कोठा, चले अगाड़ी, डिगै ना कोठा चलै ना नाड़ी, रक्षा करे जती हनुमंत की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

कच्चे सूत का एक धागा लेकर नौ बार उपर्युक्त मंत्र को पढ़कर गांठ लगा लें तथा उसे छल्ला जैसा बनाकर रोगी की नाभि पर रख दें। फिर नौ बार मंत्र पढ़कर नौ ही बार उस छल्ले पर फूंक मारें। इस क्रिया से नाभि (धरण) अपने स्थान पर आ जाती है।

दूसरा मंत्र

ॐ नाड़ी नाड़ी नवासी नाड़ी बहत्तर कोण चले आगे टिके न कोण चले नाड़ी रक्षा करे यती हनुमान की आन।

यह प्रयोग भी रविवार या मंगलवार के दिन करना चाहिए। बांस का एक ऐसा टुकड़ा लें, जिस पर नौ गांठें हों। उस बांस की नौ गांठों पर एकेक बार मंत्र पढ़कर फूंक मारें। अब रोगी को लिटा दें और वह बांस उनकी नाभि पर रखकर, दोनों सिरों पर सात-सात बार मंत्र पढ़कर फूंक मारें। इस प्रयोग से नाभि अपने ठिकाने पर आ जाती है।

तीसरा मंत्र

ॐ ऊंची नीची धरनी, श्री महादेव सरनी। टली धरण आंनू ठौर सत सत भाखै श्री गोरख वाचा।

रोगी को सवा तीन माशे की अष्टधातु की अंगूठी उपर्युक्त मंत्र से इक्कीस बार अभिमंत्रित करके उंगली में धारण करा देने से नाभि कभी नहीं उतरती।

चौथा मंत्र

ॐ चरणी चरणी माणस तेरी सरणी माणस का आसा पासा छोड़े धरणी न छोड़े तो गुरु गोरखनाथ की आज्ञा फुरै ठः ठः स्वाहा।

पहले सवा दस हजार जप करके व एक सौ एक आहुतियों से हवन करके मंत्र सिद्ध कर लें। फिर जब कभी आवश्यकता पड़े तो धरण हटे व्यक्ति के पेट पर हाथ फेरते जाएं और मंत्रोच्चारण करते रहें। जब तक धरण ठिकाने न आ जाए, यह क्रिया करते रहें।

हूक निवारक मंत्र

ॐ नमो सार की छुरी पर धार का बान, हूक न चल रे मुहम्मदा पीर की आन, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

जिस व्यक्ति की हूक चलती हो, उसको सामने लिटाकर, उसका दायां हाथ हूक वाले स्थान पर रखवा लें। फिर मंत्र को इक्कीस बार पढ़कर चाकू से भूमि पर इक्कीस लकीरें खींचें। इस प्रयोग से हूक चलनी बंद हो जाती है।

घाव नाशक मंत्र

घाव जले का हो या कटे का, निम्नलिखित शाबर मंत्र सभी में उपयोगी हैं।

पहला मंत्र—

ॐ नमो आदेश कामरू देश कामाख्या देवी जले राम रेल तेव महा तोरे 'अमुक' लहर पीर पल में टारे मंत्र पदे नरसिंह देव कुटिया में बैठ के श्री रामचंद्र रहित फूंक के। जाय अमुक के जलन, पीड़ा एक पलन में जाय खाय सागर की नीर नाव में आज्ञा हाड़ि दासी फुरो मंत्र चण्डी वाचा।

मंत्र जप में अमुक के स्थान पर रोगी का नाम बोलकर तथा गोले के तेल को ग्यारह बार मंत्र से अभिमंत्रित करके जले हुए स्थान पर लगाएं तो जलने के घाव ठीक हो जाते हैं।

दूसरा मंत्र

सार सार बिजै सार बांधूं
सात बार फूटे अन न उपजै
घावसीर राखे श्री गोरखनाथ।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर घाव पर फूंकने से घाव की पीड़ा कम हो जाती है तथा घाव भर भी शीघ्र ही जाता है।

तीसरा मंत्र

युद्ध किये राम लखन भाई, बाल्मीकि ने मंत्र पढ़ि बाढ़ जंमाई, बाण से

बाण कटे होय बाणि वरिषन अर्द्ध चंद्रहास से कंपै राम और लखन आदेश मुनि बाल्मीकि की दोहाई, अमुक की पीर व्यथा कटि जाई।

उपर्युक्त मंत्र में अमुक के स्थान पर रोगी का नाम बोलें तथा मंत्र को ग्यारह बार पढ़कर फूंकें, तो घाव चाहे जितना गहरा हो, वह शीघ्र भर जाता है।

पसली चलना बंद करने का मंत्र

कभी-कभी सर्दी आदि लग जाने के कारण बालक की पसलियां चलने लगती हैं, जिससे सांस लेने में भारी कठिनाई होती है। पसलियों में दर्द भी होता है। इस पीड़ा के कारण बालक लगातार रोता रहता है। शाबर मंत्र का प्रयोग पसली चलना तुरंत रोक देता है, जिससे बालक को आराम मिलता है और वह सुख की नींद सोता है।

मंत्र इस प्रकार है

ॐ सत्य नाम आदेश गुरु को डंख खारी खंखारा कहां गया सवा लाख परवतो गया सवा लाख परवतो जाय कहा करेगा सवा भार कोयला करेगा, हनुमंतवीर नव चंद्रहास खड्ग गढ़ेगा, नव चंद्रहास खड्ग गढ़ कहा करेगा, गातवा डोंख पसली बाय काट कूट खारी समुद्र नाखेगा। जगद्गुरु शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण के समय एक सौ आंठ जप करके तथा इक्कीस आहुति देकर मंत्र सिद्ध करें। आवश्यकता पड़ने पर तिल के तेल में थोड़ा-सा सिंदूर मिलाकर, उसे मंत्र से इक्कीस बार अभिषिक्त करके बालक की पसलियों पर लगा दें। तेल थोड़ा गुनगुना होना चाहिए। शीघ्र ही पसलियों का चलना बंद होकर बच्चे को आराम हो जाएगा।

पाण्डुरोग निवारक मंत्र

इस रोग को पीलिया के नाम से भी जाना जाता है। पीलिया पीड़ित व्यक्ति की त्वचा व आंखें पीली पड़ जाती हैं। मूत्र भी पीले रंग का ही आता है। साधारणत: यह रोग किसी को भी हो जाता है, किंतु छोटे बच्चे इससे अधिक पीड़ित होते हैं। यह रोग पित्ताशय तथा यकृत की कमजोरी से होता है। शरीर में लाल रक्त कणों की मात्रा का कम होना भी इस रोग का एक कारण है।

पहला मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को श्री राम सर साधा लक्ष्मण साधा बाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीला पीला पीला, चारों झड़ें तो श्री रामचंद्रजी रहे नाम, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पीतल के किसी पात्र में शुद्ध कूप (कुएं) का जल लेकर मंत्र को पढ़ते हुए,

सुई से सात बार रोगी को झाड़ दें। यह प्रयोग केवल शनिवार के दिन ही करना चाहिए। सात शनिवार यह प्रयोग करने से पीलिया रोग सदा के लिए मिट जाता है।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो वीर बेताल असराल, नार कहे तू देव खादी तू वादी, पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पहले बारह हज़ार पांच सौ बार मंत्र का जप करके उसे सिद्ध करें, क्योंकि सिद्ध मंत्र का ही रोगी पर प्रयोग किया जाता है। रोगी के सिर पर कांसे की कटोरी में तिल का तेल भरकर रखें और कुशा से उस तेल को चलाते हुए सात बार मंत्र को पढ़ें। तीन दिन ऐसा करने से रोगी का पीलिया झड़ जाएगा।

ज्वर निवारक मंत्र

सभी प्रकार के ज्वरों को उतारने में शाबर मंत्र सफल सिद्ध होते हैं। ज्वर यदि किसी औषधि से न उत्तर रहा हो, तो निम्नलिखित शाबर मंत्रो के प्रयोगों द्वारा उनका निवारण किया जा सकता है।

सभी प्रकार के ज्वरों को उतारने का मंत्र इस प्रकार है—

दोई भाई ज्वर सुरा महावीर नाम।
दिन रात खटि गौर महावीर के ठाम॥
फूर छुछ से छत्तिस रूप मुहूर्त मों धराय।
नाराज नामूक के घर दुआर फिराय॥
ज्वाला ज्वर पाला ज्वर काला ज्वर विंशाकि।
दाह ज्वर उमा ज्वर भूमा ज्वर झूमकि॥
घोड़ा ज्वर भूता तिजारी ओ चौथाई।
सवन को भंगक घोटन शिव ने बुझाई॥
यह ज्वर ज्वर सुरा तूं कौन तकाव।
शीघ्र अमुक अंग छोड़ तुम जाव॥
यदि अंगन में तू भूलि भटकाय।
तो महादेव के लागा तूं खाय॥
आदेश कामरू कामाख्या माई।
आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई॥

सभी प्रकार के ज्वर इस मंत्र के प्रयोग से उतर जाते हैं। पहले रोगी को उत्तर की ओर मुंह करके बैठाएं। फिर स्वयं उसके सम्मुख बैठकर मंत्र को पढ़ते हुए सात बार झाड़ा दें। तीन दिन सुबह-शाम झाड़ा देने से ज्वर नष्ट हो जाता है।

अतिसार नाशक मंत्र

कभी-कभी अतिसार (दस्त) का रोग बहुत घातक हो जाता है। बार-बार दस्तों के कारण शरीर का पानी समाप्त हो जाता है, उस समय शरीर में यदि ग्लूकोज आदि न पहुंचाया जाए, तो मृत्यु अवश्यंभावी हो जाती है। इस रोग में रोगी इतना दुर्बल हो जाता है कि अपने आप उठ-बैठ भी नहीं सकता। निम्नलिखित शाबर मंत्र के प्रयोग से रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जाता है।

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी तहां क्षीरसागर के बीच उपजा पानी अरे रक्त पेचिश तोर कौन ठिकाना अमुक के उदर खोंचा जो रहा चलाय नरसिंह बर से क्षण में चला जाये अमुक अंग नहीं, रोग नहीं पीर गुरु ने बांध दिया जंजीर, आज्ञा हाड़ि दासी की, चण्डी की दोहाई।

किसी पीपल वृक्ष के पास जाकर मंत्र पढ़ते हुए उसके तीन पत्ते तोड़ लें। उन पत्तों को घर लाकर और प्रत्येक पत्ते को दोना जैसा बनाते हुए उसमें थोड़ा-सा जल लें और मंत्र से तीन बार अभिषिक्त करके वह जल रोगी को पिला दें। मंत्र में अमुक-अमुक के स्थान पर रोगी का नाम लें। मात्र तीन दिन की इस क्रिया से अतिसार रोग का शमन हो जाता है।

कब्जियत दूर करने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को पर्वत श्याम गुरु पर्वत में श्याम पर्वत में तीन सुवा कौन कौन सवा बाई सवा हर सवा पीड़ा सुख भाजने आवेगा, यही हनुमान करेगा मर फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर जल अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाने से कब्जियत दूर हो जाती है।

अजीर्ण नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को अगस्त्यं कुम्भकरणं च शनि च वड़वानलः, आहार पाचनार्थाय स्मरत भीमस्य पंचकं स्फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

जिन लोगों को अजीर्ण की शिकायत हो, उन्हें चाहिए कि वह भोजन करने के पश्चात उपर्युक्त मंत्र को सात बार पढ़कर, सात बार पेट पर हाथ फेरें। इससे अजीर्ण का दोष समाप्त हो जाएगा।

कृमि नाशक मंत्र

ॐ नमो कीड़ा रे तू कुण्ड कुण्डाला लाल पूंछ तेरा मुंह काला मैं तोय बूझा कहां ते आया तू ही तूने सबका खाया, अब तू जाय भसम होई जाय गुरु गोरखनाथ करे सहाय।

प्रायः छोटे बच्चों के पेट में मिट्टी या मीठा आदि अधिक खाने से कीड़े हो जाया करते हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य खराब रहता है तथा पित्ती आदि उछलने की शिकायत हो जाती है। इस मंत्र से कुछ मीठी चीज़ को अभिषिक्त करके खिलाने से पेट से कीड़े निकल जाते हैं।

रींधन बाय शामक मंत्र

कभी-कभी व्यक्ति की पिंडलियों आदि में खोंचा मारने जैसा दर्द होता है, इस रोग को निम्नलिखित शाबर मंत्र से दूर किया जा सकता है।

ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो कामरूप देश कामाक्षी देवी, जहां बसे मछन्दर जोगी, मछन्दर जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े एक बिछोड़े एक रींधन बाय तोड़े, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को ग्रहणकाल में एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर लें। फिर मंगलवार या शनिवार को मनिहारी की मोगरी से मंत्र को पढ़ते हुए झाड़ा दें। दो-तीन बार के प्रयोग से ही रींधन बाय की पीड़ा समाप्त हो जाएगी।

वायुरोग निवारक मंत्र

ॐ नमो अजब कंकोल गड़ीयो वाय फिरंग रगत वाय चेपियो वाय अनन्त सर्व वाय नाशय, दह दह पच पच भख भख हन हन ॐ फट् स्वाहा।

मंत्र का बारह माला जप करके सिद्ध करें। फिर रेशम के पांच रंगों के धागों को लेकर नौ गांठें लगा दें। प्रत्येक गांठ पर धूप-दीप देकर एक सौ आठ बार मंत्र पढ़ें और रोगी के गले में बांध दें। इसके प्रभाव से हर तरह का वायु रोग सहज ही मिट जाता है।

कंठरोग निवारक मंत्र

असो यस्ताम्र अरुण उत वभुः सुमंगलः, ये चैनं रुद्रा अभिसो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशो वैषां हैड ईमहे।

कंठ का जैसा भी रोग हो, इक्कीस बार इस मंत्र से राख को अभिमंत्रित करके गले पर मल दें। कुछ दिनों के प्रयोग से कंठ का जो भी रोग होगा, दूर हो जाएगा।

दाद नाशक मंत्र

ॐ गुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाहतो राजा वैरधिन आज्ञा राजा वासुकी के आन हाथ वेगे चलाव।

इस मंत्र को पानी पर पढ़कर, वह पानी पिला देने से दाद दूर हो जाता है।

यदि इसके साथ ग्यारहमुखी रुद्राक्ष को गगाजल में घिसकर, उस जल को एक सौ आठ बार मंत्र से अभिषिक्त करके दाद पर लगाया जाए, तो लाभ शीघ्र होता है।

अनिद्रारोग शमन का मंत्र

ॐ कुम्भकर्णाय नमः।

जिन्हें निद्रा न आने की शिकायत हो और नींद की गोलियां खाकर नींद लाने की उनकी विवशता बन गई हो, वह बिस्तर पर लेटने के बाद श्वास रोककर अधिक से अधिक संख्या में उपर्युक्त मंत्र का जप करें और धीरे-धीरे श्वास छोड़ें। कुछ दिनों की इस क्रिया से अनिद्रा रोग समाप्त हो जाएगा।

हिचकियां रोकने का मंत्र

ॐ सुमेरु पर्वत पर लोना चमारी सोने की रांपी सोने की सुताही हक चूक वाह बिलारी धरणी नालि काटि कूटि समुद्र सारी बहावो लोना चमारी की दुहाई फुरो मंत्र दुहाई।

हिचकिया अधिक और लगातार आने पर इस मंत्र से अभिमंत्रित जल पीने या पिलाने से तत्काल थम जाती हैं। अथवा एक पके केले पर काला नमक लगाकर, मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित कर खिला देने से भी हिचकियां रुक जाती हैं।

❑❑

12

चमत्कारी शाबर मंत्रों के सफल प्रयोग

शाबर मंत्र सभी प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं। कोई ऐसी समस्या नहीं है, जिसे शाबर मंत्र के द्वारा सुलझाया न जा सके। कोई ऐसा रोग नहीं है जो शाबर मंत्र से दूर न हो सके। शाबर मंत्र कभी भी, किसी भी स्थिति में निष्प्रभावी नहीं होते। इनका सफल प्रयोग बड़ा ही चमत्कारी है। ये शाबर मंत्र सभी प्रकार की आपदाओं से मुक्ति दिलाते हैं। इनका अलौकिक प्रभाव बड़ा रहस्मय होता है और कोई भी व्यक्ति इन शाबर मंत्रों का प्रयोग साधारणतः कर सकता है। यहां ऐसे शाबर मंत्र दिए जा रहे है, जिनके प्रभाव अचूक और सफल सिद्ध हैं और लोगों का लाभ करने वाले हैं।

भय-भ्रमादि मनोव्याधि नाशक मंत्र

आत्मबल, धैर्य, प्रसन्नता का वातावरण, आश्वासन, मधुर व्यवहार, प्रेमपूर्ण संभाषण, प्रशंसा और निर्भयता—ये सब मनोविकार दूर करने में सर्वाधिक सहायक होते हैं। किंतु वर्तमान युग में निरंतर बढ़ती जा रही असामाजिकता, आर्थिक असंतुलन, अपराध-प्रवृत्ति, राजनीतिक अस्थिरता, प्राकृतिक-प्रकोप आदि के कारण व्यक्ति को संतोष, धैर्य आत्मबल और प्रसन्नता की प्राप्ति अलभ्य जैसी प्रतीत होने लगी है। वह एक समस्या का निवारण करता है, तब चार और सामने आ खड़ी होती हैं।

ऐसी विवशता की स्थिति में, जबकि मनुष्य अपने पौरुष से, प्रारब्ध और प्रकृति से परास्त होकर यातना सहन करने के लिए विवश हो शाबर मंत्र साधना सर्वोत्तम और सहज-सुगम उपाय है। अग्रलिखित मंत्र को सिद्ध करके यदि आवश्यकतानुसार प्रयुक्त किया जाए तो विभिन्न प्रकार की मनोव्याधियां दूर हो जाती हैं। शत्रु, प्रेतादि, मनोरोग और स्थान या वातावरण के दोष—ये सारे उपद्रव शांत हो जाते हैं।

मंत्र इस प्रकार है—

आगे दो झिलमिली, पीछे दो नन्द
रक्षा सीताराम की, रखबारे हनुमंत
हनुमान हनुमंता आवत, मूठ करौ चौखण्डा
सांकर टोरो लोह की फारो बजर किवार
अज्जर कीलें, बज्जर कीलें, ऐसे रोग हाथ से ढीलें
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी पर जल छिड़कें, भभूति मलें या छिड़क दें, शरीर पर (रोग-विकार वाले स्थान पर) हाथ फेरें अथवा मंत्रोच्चारण करते हुए काले धागे में सात गांठें लगाकर उसे रोगी को धारण करा दें अथवा मंत्रसिद्ध भभूत और लौंग किसी कवच में रखकर रोगी के गले में डाल दें या बाजूं से बांधें तो लाभ अवश्य ही होता है। मंत्र को पढ़ते हुए उपर्युक्त कोई भी विधि अपनाई जा सकती है। प्रत्येक उपाय रोग निवारण की पूर्ण क्षमता रखता है।

दुष्प्रभाव से निवृत्ति का प्रभाव

शाबर मंत्रों की श्रृंखला में कई ऐसे मंत्र है, जो वायव्य-आत्माओं के दुष्प्रभाव (भूत-प्रेतबाधा जनित रोग) को शीघ्र दूर कर देते हैं। प्रायः संसार के सभी देशों में भूत-प्रेतों के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। वैसे यह प्राणी अदृश्य रूप में रहते हैं, किंतु कभी-कभी किसी साकार रूप में भी दिख पड़ते हैं।

सामान्यतः ये वायुरूप में विचरण करते हैं, इसलिए उन्हें 'वायुचरी' अथवा 'वायव्य-आत्मा' कहा जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं—सौम्य और दृष्ट! सौम्य प्रेतादि सहायक होते हैं। जबकि दुष्ट प्रेतात्माएं पीड़ा देती हैं। सौम्य प्रेत कदाचित ही मिलते हैं, जैसे संसार में सज्जन पुरुष दुर्लभ हैं तो दुष्ट प्रेतों की संख्या विपुल है। वे कहीं भी मिलकर व्यक्ति को परेशान कर सकते हैं। प्रेतों की छाया (प्रभाव) पड़ते ही व्यक्ति की मानसिकता बदल जाती है। वह अपनी मौलिक चेतना, प्रगति, स्वभाव, भावना, व्यवहार, रुचि और अस्थिर रूप में कार्य करने लगता है। कभी-कभी यह प्रेतोन्माद इतना अधिक बढ़ जाता है कि व्यक्ति या तो जीवन भर के लिए पागल हो जाता है अथवा घोर नारकीय-यंत्रणा सहते हुए अंततः बड़ी दयनीय मृत्यु को प्राप्त होता है। वस्तुतः इस प्रकार की व्याधि से ग्रस्त व्यक्ति (पुरुष अथवा स्त्री) को शाबर मंत्र के प्रयोग से कष्टमुक्त किया जा सकता है।

शाबर मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं भ्रीं फट् स्वाहा
परबत हंस स्वामी आत्मरक्षा सदा भवेत

नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दोहाई
हाथ में भूत, पांव में भूत, भभूत मेरा धारण
माथे राखो अनाड़ की जोत, सबको करो सिंगार
गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, दोहाई भैरव की।

दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहण के अवसर पर इस शाबर मंत्र को एक हजार ग्यारह बार जपकर सिद्ध कर लें। मंत्रसिद्धि के बाद एक सौ आठ बार मंत्र पढ़कर और लोबान की सात आहुतियां देकर हवन-क्रिया करें। इस प्रकार मंत्र प्रभावशाली हो जाएगा। उपचार के निमित्त रोगी को लिटा दें। पास ही आम की लकड़ी की अग्नि में लोबान की आहुति देते हुए ग्यारह बार मंत्र पढ़ें। हर बार मंत्र की समाप्ति पर अग्नि में लोबान डालें। उसके धुएं से आसपास का वातावरण शुद्ध हो जाएगा। तत्पश्चात उसी हवन की भस्म रोगी के शरीर, मस्तक व हृदय आदि पर लगा दें। भस्म लगाते समय भी मंत्रोच्चारण करते रहें।

एक क्रिया यह भी है कि हवनोपरांत एक चुटकी भस्म लें और मंत्र पढ़कर रोगी के सिर पर फूंक मारें। फिर उसके मस्तक, छाती, सिर, पीठ आदि स्थानों पर वह भस्म लगा दें। अधिक लाभ के लिए भोजपत्र पर रक्त चंदन और अनार की कलम से यही मंत्र लिखें। फिर मंत्र पढ़ते हुए लोबान की धूनी के धुएं में इसे धूपित-शोधित करके लपेटें और तांबे के कवच में भरकर रोगी के गले या भुजा पर धारण करा दें। इसका प्रभाव अधिक पड़ता है और लाभ शीघ्र होता है।

आकर्षण मंत्र के प्रभावी प्रयोग

आकर्षण का अर्थ है किसी का तन-मन अपनी ओर खींचना, अनुकूल बनाना अथवा बुलाना। यह सर्वविदित तथ्य है कि जो व्यक्ति साधक के प्रति आकर्षित हो जाता है, वह उसका समर्थन करने लगता है। सहायता व सहयोग पाने के लिए लोग आकर्षण का प्रयोग करते हैं। कभी-कभी अनैतिक लाभ के लिए भी ऐसे प्रयोग किए जाते हैं। आकर्षण मंत्र सिद्ध कर लेने पर किसी भी व्यक्ति से मनोनुकूल कार्य कराया जा सकता है, उससे लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

आकर्षण के अनेक उद्देश्य होते हैं। कोई रूठ कर घर से भाग गया हो, कोई किसी कारण से उदासीन हो गया हो, कोई किसी के बहकावे में आकर विपरीत व्यवहार करने लगा हो, ऐसी स्थिति में उसे अपनी ओर भावनात्मक रूप से आकृष्ट करके अनुकूल बनाने हेतु आकर्षण प्रयोग किए जाते हैं। यद्यपि आकर्षण, सम्मोहन, विद्वेषण और मारण आदि अभिचार-कर्म (पातक-कर्म) माने जाते हैं। इनका प्रयोग नैतिकता की दृष्टि से वर्जित है, किंतु स्थिति-विशेष में, लोकहित जैसे प्रसंगों

में ये प्रकारांतर से क्षम्य भी कहे गए हैं। केवल व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए (किस दुष्प्रयोजन-अनुचित लाभ, व्यभिचार आदि) इनका प्रयोग निंदित और वर्जित माना जाता है।

कभी-कभी परिवार में ऐसी स्थिति आ जाती है कि कोई एक सदस्य कहीं भाग जाता है, अज्ञातवास करने लगता है, घर-परिवार के प्रति उदासीन हो जाता है अथवा विरक्ति, घृणा, क्रोध, भय, पश्चात्ताप, विनम्रता जैसी मानसिक भावनाओं, संवेगों से प्रेरित होकर किसी की खोज़-खबर नहीं लेता, किसी को अपना अता-पता न देकर, सबसे नाता तोड़ लेता है। ऐसी स्थिति में परिवारीजन उसके प्रति मोहवश चिंतित हो उठते हैं। अनेक प्रकार की संभव-असंभव कल्पनाएं उन्हें उस भागे हुए अज्ञातवासी व्यक्ति के प्रति विचलित करने लगती हैं।

इसी प्रकार कभी-कभी कोई व्यक्ति परदेशी होने के कारण घर-परिवार के प्रति उदासीन हो जाता है। नौकरी पेशे वाले व्यक्ति, जो विदेशों में रहते हैं, बहुधा ऐसी विरक्तिवादी मानसिकता से ग्रस्त हो जाते हैं। घर-परिवार के प्रति उनकी मोह-भावना कम हो जाती है। किसी भी कारण से यदि कोई व्यक्ति प्रवासी हो गया है, दूर-दराज में रहता है, घर-परिवार के प्रति उदासीन रहता है, तो इसे बुलाने के लिए आकर्षण मंत्र का प्रयोग किया जाता है।

पहला मंत्र

ॐ कं हां हूं।

दीपावली या ग्रहण के अवसर पर इस मंत्र का ग्यारह सौ की संख्या में जप कर, एक सौ आठ बार हवन करने मात्र से मंत्र की सिद्धि हो जाती है। फिर आवश्यकता पड़ने पर इस मंत्र को ग्यारह बार पढ़ें। अभीष्ट व्यक्ति अनुकूल हो जाएगा।

दूसरा मंत्र

ॐ स्त्रीं स्त्रीं फट्।

इसे भी पहले मंत्र के समान सिद्ध कर लें। मंत्र को सिद्ध करने के बाद जब कभी आवश्यकता पड़े, किसी व्यक्ति विशेष को अपने अनुकूल बनाना हो तो उसके पास जाकर या जब वह पास आए तो मन ही मन इस मंत्र का जप आरंभ कर दें। इस मंत्र का अदृश्य प्रभाव उसके मानसिक संवेग को साधक के अनुकूल कर देता है।

तीसरा मंत्र

ॐ नमः आदिपुरुषाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।

किसी शुभ मुहूर्त में गोरोचन और काले धतूरे का रस निकाल कर स्याही

फिर भोजपत्र पर इस स्याही और कनेर की जड़ की लेखनी से मंत्र [क के स्थान पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम लिखें। तत्पश्चात कत्था वृक्ष का लकड़ा जलाएं और उसकी अग्नि में उस भोजपत्र को डाल दें, साथ ही मंत्र को भी पढ़ते रहें। तीन या पांच रविवार या मंगलवार को यह प्रयोग करने से दूरस्थ गया व्यक्ति शीघ्र लौट आता है।

चौथा मंत्र

ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

इस मंत्र का ग्यारह माला जप पूरा करने के बाद निम्नलिखित मंत्र को एक सौ आठ बार नित्य जपें।

नमो भगवते रुद्राय रादृष्टि लेपिना हरः स्वाहा।
दुहाई कसासुर की, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्यारह दिनो में ग्यारह हजार जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद बिनौला (कपास), पीली सरसों तथा चूहे के बिल की मिट्टी एक हाथ में लेकर तीन बार इस मंत्र को पढ़कर फूंक मारें। इससे यह मिश्रण मंत्र सिद्ध होकर अत्यधिक प्रभावी हो जाता है। जिस भी व्यक्ति पर आकर्षण का प्रयोग करना हो, उसका पहना हुआ कोई वस्त्र लेकर उस पर यह मंत्रसिद्ध मिश्रण मंत्र पढ़ते हुए छिड़क दें। अभीष्ट व इच्छित व्यक्ति जहां भी होगा, वहां से घर लौट आएगा।

चूहा भगाने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र के प्रयोग से खेत-खलिहानों, दूकान या मकान से चूहों को आसानी से भंगाया जा सकता है।

पीत पीताम्बर मूसा गांधी, ले जावहु हनुमंत तु बांधी, ए हनुमंत लंका के राउ एहि कोणे पैसेहु एहि कोणे जाहु।

सर्वप्रथम किसी शुभ मुहूर्त में इस मंत्र को एक सौ आठ बार जप कर इतनी ही बार हवन करें। ऐसा करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। बाद में जब कभी आवश्यकता पड़े, खेत-खलिहान या दूकान-मकान जैसे स्थानों में चूहों का उत्पात बढ़ रहा हो और उन्हें भगाने की समस्या हो तो इस मंत्र का प्रयोग लाभ करता है। प्रयोग के लिए रविवार या मंगलवार के दिन स्नानादि से निवृत्त होकर मंत्र का इक्कीस बार जप करें। फिर हल्दी की पांच गांठें और थोड़े से चावल हाथ में लेकर मंत्र को पढ़ते हुए पांच बार फूंकें और उस स्थान पर, जहां चूहों का उत्पात है, छिड़क दें। यह तांत्रिक प्रयोग चूहों को कुछ ऐसा भयभीत और भ्रमित कर देगा कि वे वह स्थान छोड़कर भाग जाएंगे।

चोर पकड़ने के मंत्र

चोर अथवा चोरी का पता लगाने के लिए समाज और शासन द्वारा विभिन्न साधन अपनाएं जाते हैं। किंतु उनके प्रयासों में सफलता कम ही मिलती है और कभी-कभी तो बड़े नाटकीय ढंग से, बड़ी आसानी से चोरी का रहस्य उजागर हो जाता है तथा माल भी बरामद कर लिया जाता है। किसी-किसी घटना में चोरी करते या चोरी करके माल सहित भागते हुए चोर को पकड़ लिया जाता है। पहले के चोर भीरु होते थे, चोरी के समय तनिक-सी आहट पाते ही भाग खड़े होते थे, किंतु अब स्थिति बदल गई है। आज के चोर हथियार और बारूद से लैस होकर आते हैं। यदि उन्हें निकल भागने में कोई अड़चन मालूम होती है, तो वह तत्काल हथियारों का प्रयोग कर बैठते हैं और भाग निकलते हैं।

आज के वैज्ञानिक युग में चोर पकड़ने के लिए कई तरह के उपकरण प्रयुक्त किए जाते हैं। कुत्ता पालना, चौकीदार रखना, सामूहिक पहरेदारी करना आदि सब पुराने तरीके हैं और आज भी ये तरीके इस्तेमाल किए जाते हैं। कुछ ऐसे शाबर मंत्र भी हैं, जिनसे चोर और चोरी गए माल का पता लगाया जा सकता है। आवश्यकता है उनके सही ढंग से प्रयोग करने की। संभव है, बहुत से लोगों को यह जानकर आश्चर्य हो कि क्या कोई मंत्र ऐसा भी हो सकता है, जिसके द्वारा चोर का पता लगाया जा सके? बहरहाल, प्रत्येक शाबर मंत्र अपने आप में एक आश्चर्य ही है। इनकी शक्ति को आंका नहीं जा सकता, शब्दों में बांधा नहीं जा सकता। निम्नलिखित मंत्र भी ऐसा ही अद्‌भुत है।

ॐ सत्तरह सै पीर, चौंसठ सै जोगिनी
बावन सै वीर, बहत्तर से भैरों, तेरह सै तंत्र
चौदह सै मंत्र, अठारह सै परवत, सत्तरह सै पहाड़
नौ सै नदी, निन्यानवे सै नाला,
हनुमंत जती गोरख वाला, कांसी की कटोरी, चार अंगुल चौड़ी
कहो वीर, कहां सों चलाई, गिरनारी पर्वत सौं चलाई
अठारा भार बानासपती चली, लोना चमारी की वाचा फुरी
कहां कहां फुरी, चोर के जाय, चण्डाल के जाय
कहां कहां लावै, चोर के लावै, गड़ा धन जाइ बतावे
चल चल रे हनुमंत वीर, जहां हो चले, जहां है रहे
न चलै तो गंगा जमुना उल्टी बहै,
शब्द सांचा पिण्ड काचा, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

होली, दीपावली या ग्रहणकाल में इस मंत्र को एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर लें। फिर एक छटांक काले उड़द लेकर इसी मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़ते हुए अभिषिक्त करें। जब चोरी की कोई घटना हो जाए तो संदिग्ध व्यक्तियों को बुलाकर भूमि पर बैठाएं और कांसे की एक हल्की, छोटी-सी कटोरी संदिग्ध व्यक्तियों के सम्मुख चौरस जगह पर रखकर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए, उस पर वही मंत्रसिद्ध उड़द फेंकते रहें। इस प्रयोग से कटोरी अपने आप सरकने लगेगी और उस व्यक्ति के पास जाकर रुक जाएगी, जिसने चोरी की होगी। इस तरह चोर का पता चल जाएगा।

कटोरी चलने का दूसरा मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो नाहर सिंह वीर
जब जब तू चाले, पवन चाले, पानी चाले
काया थम वै माया परा करे
वीर या नाथ की पूजा पाठ टले
गोरखनाथ की आज्ञा
मेरे नौ नाथ चौरासी सिद्धों की आज्ञा।

इस मंत्र को भी होली, दीपावली अथवा ग्रहण के समय एक माला जपकर सिद्ध करें और थोड़े से चावलों को भी मंत्र का एक माला जप करके अभिषिक्त कर लें। फिर संदिग्ध लोगों को बुलाकर, कांसे की कटोरी भूमि पर रखें और मंत्रोच्चारण करते हुए चावलों को उस पर फेंकते रहें। इस प्रयोग से कटोरी अपने आप चलने लगेगी और उस व्यक्ति के पास जाकर रुक जाएगी, जिसने चोरी की होगी। इस तरह चोर का पता चल जाएगा।

चोरी का सामान प्राप्त करने का मंत्र

उद्द मुद्द जल जलाल, पकड़ चोटी कर पछाड़।
भेज कुन्दाल्या व मुद्दा या कहार या कहार।

किसी शुभ अवसर पर इस मंत्र को दस हजार आठ बार जपकर तथा एक सौ आठ बार लोबान की आहुति से हवन करके सिद्ध करें। बाद में जब कभी आवश्यकता पड़े तो चोरी वाले स्थान पर जाकर, मंत्र पढ़ते हुए उसका निरीक्षण करें। फिर रात में किसी जलाशय या नदी के तट पर जाकर किसी साफ जगह पर बैठकर एक सौ इक्कीस बार मंत्र पढ़ें और रात में वहीं सो जाएं। स्वप्न में चोर और चुराए गए माल (सामान) का ठिकाना मालूम हो जाएगा। यदि एक रात में पता न चले तो दो-तीन बार यह प्रयोग किया जा सकता है।

चोर के मुख से रक्त निकालने का मंत्र

ॐ नाहरसिंह वीर हरे कपड़े
ॐ नाहरसिंह वीर चावल चुपड़े।
ॐ सरसों के फक फक करें, शाह को छोड़े
चोर को पकड़े, आदेश गुरु को।

पहले किसी शुभ मुहूर्त में मंत्र को एक हज़ार की संख्या में जपकर सिद्ध करें। फिर पुराने जमाने का एक चौकोर सिक्का लेकर, उसे दूध से धोकर, लोबान के धुएं में पढ़ते हुए शोधित करें। इसके बाद थोड़े से चावल लेकर और गोमूत्र में धोकर सुखा लें। तदनंतर एक सफेद कपड़ा बिछाकर सारे चावल उस पर रखें। सिक्का भी उस पर रख दें। फिर लोबान और गूगल की धूनी से उन्हें धूपित करें। इस क्रिया में मंत्रोच्चारण करते रहें। फिर जिन-जिन लोगों पर चोरी का संदेह हो, उन सभी को थोड़े-थोड़े चावल चबाने को दें। जो चोर होगा, उसके मुख से रक्त निकलने लगेगा।

चोरी सूचक अन्य मंत्र

पहला मंत्र

ॐ इंद्रियाग्नि बन्ध बन्ध ॐ स्वाहा।

किसी शुभ समय अथवा शुभ योग में इस मंत्र को एक हज़ार की संख्या में जपकर सिद्ध करें। एक सौ आठ बार लोबान की आहुति भी दे। चोरी की घटना होने पर शनिवार के दिन संदिग्ध लोगों के नाम भोजपत्र के टुकड़ों पर अलग-अलग रक्त चंदन से लिखें। उन टुकड़ों को एक सौ आठ बार मंत्र पढ़कर फूंक मारकर अभिमंत्रित करें और अग्नि में डाल दें। जो निर्दोष व्यक्ति होंगे, उनके टुकड़े जल जाएंगे, किंतु जो चोर होगा, उसके नाम का टुकड़ा अग्नि में नहीं जलेगा। इस तरह चोर का पता लग जाएगा।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो इंद्र अग्निमुख बंधु उसारा अग्निमुख बंधु स्वाहा।

इस मंत्र की सिद्धि एवं प्रयोग विधि पहले मंत्र के समान है। साधक किसी भी एक मंत्र का प्रयोग कर सकता है। दोनों का प्रभाव एक समान है।

तीसरा मंत्र—

ॐ नमो किष्किन्धा पर्वत पर
कदली वन को फल दंढ ताल कुंज
देवी नून प्रसाद अगल पावली यारी
साध बूंटी चोर तेरे कुंजन का
देवी तनी आज्ञा फुरो।

एक हजार की संख्या में मंत्र जपकर व इक्कीस बार गूगल या लोबान की आहुति देकर मंत्र को सिद्ध करें और आवश्यकता पड़ने पर संदिग्ध लोगों के नाम (मंत्र पढ़ते हुए) कागज के टुकड़ों पर रक्त चंदन से लिखें। उन्हें आटे की छोटी-छोटी गोलियों में भर दें। फिर अपने सामने एक मटके को पानी से भरकर रखें और प्रत्येक गोली पर इक्कीस बार मंत्र पढ़कर, फूंक मारने के बाद मटके में डालते रहें। जो गोली पानी में डूबे नहीं, उसको निकालकर खोलें। उस पर जिसका भी नाम लिखा होगा, वही चोर होगा।

विद्या एवं ज्ञान प्राप्ति का मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वती ऐं नमः स्वाहा। विद्यां देहि मम ह्रीं स्वाहा।

ग्रहण के अवसर पर इस मंत्र का जप आरंभ करें। पहले दिन एक सौ चौवालीस बार जपें, फिर नित्य एक माला जप करते रहें। इसके प्रभाव से साधक को ज्ञान, विद्या, स्मरण-शक्ति और प्रभावपूर्णता प्राप्त होती है।

मोहनकर्म का मंत्र

यह बड़ा अद्‌भुत मंत्र है। इसके प्रयोग से किसी को भी मोहित किया जा सकता है। यदि आप चाहते हैं कि जो भी आपको देखे, वह देखता ही रह जाए तो निम्नलिखित मंत्र को सिद्ध करके प्रयोग करें—

मोहन मोहन क्या करे मोहन मेरा नाम, भीत पर तो देवी खड़ी मोहों सारा ग्राम, राजा मोहों प्रजा मोहों मोहों गणपत राय, तैंतीस कोटि देवता मोहों नर लोग कहां जाय, दुहाई ईश्वर महादेव पार्वती नैना योगिनी कामक्ष कामाक्षा की।

आश्विन दशहरे के दिन से इस मंत्र का जप प्रारंभ करना चाहिए। प्रतिदिन एक माला जप दस दिन तक करना चाहिए। जपकाल में गूग्ल और कपूर के मिश्रण की धूनी देते रहें। इसी से मंत्र सिद्ध हो जाता है। गोरोचन को सिद्ध मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर, उसका तिलक लगाकर जिस किसी के भी सामने जाएंगे, वह मोहित हो जाएगा। मोहन कर्म का यह सर्वाधिक प्रभावी मंत्र है।

सर्प भगाने का मंत्र

भगवान शिव को सर्प चाहे जितने प्रिय हों, किंतु मनुष्य के लिए तो घातक ही हैं। बुजुर्गों का तो यहां तक कहना है कि जहां सर्प होने की आशंका हो, वहां कभी निवास नहीं करना चाहिए। यदि उस स्थान पर निवास करना आवश्यक हो, तो सर्प को वहां से भगा देना चाहिए। अग्रलिखित शाबर मंत्र का प्रयोग करके सर्प को वहां से भगाया जा सकता है।

ॐ नमो आदेश गुरु को जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत ओसइ करहु राध बिनि कबूत पवनसुत हनुमंत घाव हन हन रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्डखेतहि श्रवइ अण्ड बिहण्ड खेतहि श्रवइ वाजं गर्भ हि श्रवइ स्त्री चीलहि श्रावहि शाप हर हर जम्बीर हर हर।

दीपावली की रात्रि में इस मंत्र का एक माला जप करें। तत्पश्चात इक्कीस आहुतियां देकर एवं हवन-क्रिया करके मंत्र सिद्ध करें। अब जिस स्थान पर सर्प होने की संभावना हो, वहां मिट्टी का छोटा-सा ढेला, मंत्र को पढ़ते हुए सात बार फूंक मारकर रख दें। सर्प तुरंत उस स्थान को छोड़कर चला जाएगा और फिर कभी लौटकर नहीं आएगा।

नजर झाड़ने के मंत्र

नजर लगना एक आम बात है, शायद ही इससे कोई बच पाता हो। बहुत से लोगों का विचार यह होता है कि नजर केवल बच्चों और शिशुओं को ही लगती है, किंतु उनका यह विचार सत्य से युक्त नहीं है, क्योंकि नजर किसी को भी लग सकती है। नजर लिंग-भेद भी नहीं करती है। यदि नजर स्त्री को लग सकती है, तो पुरुष भी इससे अछूता नहीं रह सकता। निम्नलिखित मंत्रों के प्रयोग से नजर शीघ्र उतर जाती है।

पहला मंत्र—

ॐ नमो सत्य आदेश गुरु को
ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी
बोले छलसों अमृत वाणी
कहो नजर कहां ते आई
यहां की ठौर तोहि कौन बताई
कौन जात तेरो कहां ठाह
किसकी बेटी कहा तेरो नाम
कहां से उड़ी कहां को जाया
अब ही बसकर ले तेरी माया
मेरी बात सुनो चित लाय
जैसी होय सुनाऊ आय
तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी कायस्थनी
खतरानी कुम्हारी महतरानी राजा की रानी
जाको दोष ताही के शिर पड़े
जाहर पीर नजर से रक्षा करे

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

जिस किसी बच्चे या बड़े स्त्री-पुरुष को नजर लगी हो, उसे सामने बैठाकर इस मंत्र को पढ़ते हुए, पीड़ित की अवस्था को देखकर पांच, सात या ग्यारह बार मोरपंख से झाड़ दें।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, उलटंत गोरख पलंटत काया भाग भाग जमदूत गोरखनाथ आया, लोहे की कोठरी वज्र की ताली, आगे मेरे हरि बसे पीछे देव अनंत, रक्षा हे गोरखनाथ जी की चौकी है हनुमंत की।

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में रात्रि के समय इस मंत्र को एक हज़ार बार जपने तथा एक सौ आठ आहुति देने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर मंत्र को पढ़ते हुए झाड़ा लगाने से नजर उतर जाती है।

तीसरा मंत्र

अपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें
कढ़ी है बांह बेदन कहीं न सारि जाति है
औषध अनेक जन्म मंत्र-टोटकादि किये
बादि भये देवता मनाहे अधिकाति है
करतार भरतार हरतार कर्म काल
को है जगजाल जो न मानत इताति है
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कहयो रामदूत।

यदि कोई नजर लग जाने के कारण व्याधि आदि से ग्रस्त हो गया हो तो उपर्युक्त मंत्र को जपते हुए सात बार मोरपंख से झाड़ा लगा दें।

चौथा मंत्र

हरि हरि स्मरिके हम मन करूं स्थिर
चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर
डायन दूतिन दानवी देवी के आहार
बालक गण पहिरे हाड़ गला हार
राम लखन दूनों भाई धनुष लिए हाथ
देख डायनी भागत छोड़ शिशु साथ
गई पराय सब डायनी योगिनी
सात समुद्र पार में खावे खारी पानी
आदेश हाड़ि दासी चण्डी माई
आदेश नैना योगिनी की दुहाई।

इस मंत्र को इक्कीस बार पढ़ें और झाड़ा लगाकर फूंक मारें तो कैसी भी नजर होगी, उसका प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

नज़र नाशक भस्म का मंत्र

ॐ नमो आदेश तुझ्या नावे भूत पले
प्रेत पलै खवीस पले सब पलै अरिष्ट पले
मुरिष्ट पलै न पले तर गुरु की गोरखनाथ की वीदमा ही चले
गुरु की संगत मेरी भगत्त चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को दीपावली या दशहरे की रात्रि में एक हज़ार आठ बार जपकर सिद्ध कर लें। फिर जब प्रयोग करने की आवश्यकता पड़े, तब सात बार मंत्र से अभिषिक्त भस्म को रोगी के शरीर पर लगा देने से भयंकर नजर का भी अंत हो जाता है।

❑❑

13

वश में करने वाले शाबर मंत्र

वश में करने वाले मंत्रों को 'वशीकरण मंत्र' कहा जाता है। वशीकरण का अर्थ है—किसी व्यक्ति को अपने अनुकूल करना। जैसा आप चाहें, वैसा ही वह करे, आपके आदेश को माने। आकर्षण में जहां किसी दूर वाले व्यक्ति को अपनी ओर खींचने की साधना रहती है, वहीं वशीकरण में प्रायः निकट वाले व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने का उद्देश्य रहता है। अर्थात वशीकरण का प्रयोग व्यक्ति की मानसिकता को अपने नियंत्रण में करने के लिए किया जाता है। वशीकरण से प्रभावित व्यक्ति की अस्मिता समाप्त हो जाती है। वह अपना 'स्व' और 'अहं' भूलकर साधक का दासानुदास बनं जाता है और उसकी इच्छानुसार आचरण करने लगता है।

प्रायः लोग वशीकरण का प्रयोग अनुचित लाभ उठाने के लिए कर बैठते हैं, किंतु यह उचित नहीं है। किसी साधना का दुरूपयोग कभी श्रेयस्कर नहीं होता। किसी को वशीभूत करके उससे तन, मन, धन का लाभ उठाना, उसकी संपत्ति हथिया लेना अथवा व्यभिचार जैसे अनैतिक कार्य करना बहुत ही निंदनीय माना जाता है। ऐसे दुरूपयोग से साधक स्वयं भी तेजहत हो जाता है। अपराध फिर भी अपराध है और किसी भी प्रकार का अपराध अथवा अनैतिक-कार्य व्यक्ति को किसी न किसी रूप में क्षतिग्रस्त अवश्य करता है। अतः ऐसे प्रयोग करते समय औचित्य और अनैतिकता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

पुष्प द्वारा वशीकरण

पहला मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का
एक फूल फूल भर दोना
चौंसठ योगिनी ने मिल किया टोना
फूल फूल वह फल न जानी

हनुमन्त वीर घेर घेर दे आनी
जो सूंघे इस फूल की बास
उसका जी प्राण हमारे पास
सोती होय तो जगाय लाव
बैठी होय तो उठाय लाव
और देखे जरे बरै,
मोहि देखि मोरे पायन परे
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा
वाचा वाची से टरे
तो कुम्भी नरक में परे।

किसी भी शनिवार को आरंभ करके इक्कीस दिनों तक लगातार रात में शुद्ध होकर बैठ जाएं। फिर दीपक जलाकर और लोबान की धूनी देकर उपर्युक्त मंत्र को एक सौ चौवालीस बार जपें। इस तरह मंत्र सिद्ध हो जाता है। बाद में किसी भी सोमवार के दिन कोई पुष्प लेकर उस पर उपर्युक्त मंत्र पढ़ते हुए इक्कीस बार फूंक मारें। वह फूल अभीष्ट व्यक्ति को सुंघाने पर वह साधक के प्रति अथवा साधक जिसके बारे में कहेगा, उसके प्रति सम्मोहित हो जाएगा।

दूसरा मंत्र

ॐ कामरू देश कामाख्या देवी
तहां बसै इस्माइल जोगी
इस्माइल जोगी ने बोई बारी
फूल उतारे लोना चमारी
तीजै फल हंसे, दूसरा विगसे
तीजे फूल में छोटा बड़ा नाहरसिंह बसे
जो सूंघे इस फूल की बास
सो आवै हमारे पास
और के पास जाय
हियो फाट मर जाय
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी शुभ रविवार को पूजा के लिए सुपारी, पान, लौंग, पुष्प, मिठाई, दीपक, गूगल या अगरबत्ती तथा घृत एकत्र करें। फिर स्नानादि कर पूजा करें। तत्पश्चात यह सामग्री एकेक करके पान पर चढ़ाएं और धूप-दीप देकर अग्नि

प्रज्वलित करें। तदनंतर मंत्र बोलते हुए एकेक पुष्प को घृत में डुबोकर हवन करते रहें। एक सौ आठ पुष्पों की आहुति देकर पुनः मंत्र का एक सौ आठ बार जप करें। इक्कीस दिनों तक यह क्रिया की जानी चाहिए। बाईसवें दिन सामर्थ्य के अनुसार ब्राह्मणों को भोजन कराएं और दक्षिणा दें। पूरी साधना अवधि में ब्रह्मचर्य से रहें। इस प्रकार मंत्र सिद्ध हो जाएगा। किसी को अपने प्रति वशीभूत करने के लिए सुगंधित पुष्प पर सात बार इस सिद्ध मंत्र को पढ़कर फूंक मारें। इससे वह पुष्प मंत्र-शक्ति से युक्त हो जाएगा। जब वह पुष्प किसी अभीष्ट स्त्री या पुरुष को सुंघाएंगे तो वह वशीभूत होकर आपकी ओर आकृष्ट हो जाएगा।

तीसरा मंत्र

ॐ मूठी माता मूठी रानी
गूठी लगावे आग।
'अमुक' के चटक लगाय
बेधड़क कलह मचावै
मुख न बोले, सुख न सोवे
कहत मंत्र उठाय, मारयौ उरझै
क्यों काचा सूत की आटी उरझै
अब देखूं नाहसिंह वीर तेरे मंत्र की शक्ति
शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शनिवार की संध्या में लाल कनेर के वृक्ष के पास जाएं और उसे न्योता देकर, पुष्पों वाली टहनी में कलावा बांध दें। दूसरे दिन रविवार को प्रातः उस टहनी को तोड़कर ले आएं। रात होने पर दीपक जलाकर ऊनी आसन पर बैठें। लाल वस्त्र पर उस टहनी को रख दें और धूप-दीप से उसकी पूजा करें। फिर उपर्युक्त मंत्र का एक सौ इक्कीस की संख्या में जप करें। इस क्रिया से मंत्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में टहनी से पुष्प तोड़कर इक्कीस बार मंत्र पढ़कर उस पर फूंक मारें। यह पुष्प जिसे उपहार में देंगे, वह वश में हो जाएगा।

प्रबल प्रभावी वशीकरण मंत्र

हाथ पसारूं मुख मलूं, काची मछली खाऊं।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, जग मोह घर जाऊं॥

महीने के किसी भी शनिवार की रात्रि में इस मंत्र का एक सौ एक जप करें। मंत्र जप के समय घी का दीपक जलता रहे। गूगल की धूनी दें तथा पुष्प और मिठाई प्रसाद के रूप में चढ़ाएं। फिर उस मिठाई को मंत्र से अभिषिक्त करके जिसे भी खिला देंगे, वह वशीभूत होकर कहना मानने पर बाध्य हो जाएगा।

तिलक द्वारा वशीकरण

ॐ नमो आदेश गुरु को। राजा मोहूं, प्रजा मोहूं, मोहूं ब्राह्मण बनियां। हनुमंत रूप में जगत मोहूं तो रामचंद्र मणि मणियां, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को इकतीस दिन में तीन सौ बार प्रतिदिन जप कर सिद्ध करें। फिर जिस किसी स्थान पर जाएं, यदि वहां कोई चौराहा हो तो उस चौराहे की चुटकी भर मिट्टी लेकर सात बार मंत्र से अभिमंत्रित कर, ललाट पर उसका तिलक करें। ऐसा करने से जो भी देखेगा, उसी का वशीकरण हो जाएगा।

सर्व वशीकरण मंत्र

बांध इंद्र की बांध तारा, बांधूं बिद लोही की धारा, उठे इंद्र न बोले बाव, सूक साख पूंजी हो जाय, बन ऊपर लोकी कड़े हीय लपर लो सूत में, तो बंधन बांधयो सास-ससुर जाया पूत, मन बांधूं मंवन्त बांधूं विद्या दे साथ, चार खूंट लों फिर आब अमुकी अमुक के साथ रहे गुरु गुरो स्वाहा।

अंधेरी रात के शनिवार के इकतीस दिन तक नित्य रात के समय एक माला जप उपर्युक्त मंत्र का करें। इस कृत्य से मंत्र सिद्ध हो जाएगा। प्रयोग के समय यही मंत्र ग्यारह बार पढ़कर एक-दो बताशे अभिमंत्रित कर जिस स्त्री को खिला देंगे, वह वशीभूत हो जाएगी। मंत्र में अमुकी के स्थान पर स्त्री का और अमुक के स्थान पर अपना नाम बोलना चाहिए।

स्त्री वशीकरण मंत्र

दीपावली की रात्रि में स्नानादि से निवृत्त होकर, साफ़ ऊनी आसन पर बैठ जाएं। कोई सुगंधित तेल, मिष्ठान एवं पुष्प पहले से सहेजकर रख लें। इसके बाद घृत का दीपक जलाएं और आम की लकड़ी की अग्नि में लोबान की धूनी दे। फिर मिष्ठान व पुष्प अर्पित करें। तदोपरांत निम्नलिखित मंत्र का बाईस माला जप करके लोबान की आहुति से सात बार हवन करें। इस क्रिया से मंत्र सिद्ध हो जाएगा।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ मोहना रानी, मोहना रानी, चली सैर को
सिर पर धरे तेल की दोहनी
जल मोहूं, थल मोहूं, मोहूं सब संसार
मोहना रानी पलंग चढ़ बैठी, मोह रहा दरबार
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
दुहाई गोरा पार्वती की, दुहाई बजरंगबली की।

यदि प्रयोक्ता किसी स्त्री को आकृष्ट करना चाहता है तो उसके नाम पर, सम्मोहन की कामना करते हुए तेल को सात बार मंत्र से अभिषिक्त करें। फिर वह तेल उस स्त्री को लगाने के लिए दें। उस तेल को लगाने के बाद वह साधक के पास पहुंचने का हर संभव प्रयास करेगी।

वश में करने के सरल मंत्र

पहला मंत्र

ॐ नमः काय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय
ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्व जनस्य
हृदयम् मम वशं कुरु कुरु स्वाहा।

गुरु पुष्य योग, दीपावली या ग्रहण के दिन से इस मंत्र का नियमित जप आरंभ करें। जप संख्या दस हज़ार है। जब यह संख्या पूरी हो जाए तब एक सौ आठ बार गूगल की आहुतियां देकर हवन करें। आहुति देते समय भी इसी मंत्र को पढ़ना चाहिए। हवनोपरांत एक ब्राह्मण को भोजन कराएं। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्रसिद्धि के पश्चात आवश्यकतानुसार अभीष्ट व्यक्ति के पास जाकर एक सौ आठ बार मंत्र पढ़ते हुए उस पर फूंक मारें। इसके प्रभाव से व्यक्ति वशीभूत हो जाएगा।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
त्रिलोचनाय त्रिपुर वाहनाय
अमुक मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

किसी सिद्ध योग में परम शांतचित्त और पवित्रता के साथ एकांत-शुद्ध स्थान में बैठकर उपर्युक्त मंत्र का एक सौ आठ जप करें। जप पूरा हो जाने पर इतनी ही आहुतियां देकर हवन करें। इसी से मंत्र सिद्ध हो जाता है। बाद में जब कभी आवश्यकता पड़े तो इसी मंत्र द्वारा एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके कोई खाद्य-वस्तु इच्छित व्यक्ति को दें। उसे खाने के बाद वह साधक के प्रति समर्पित हो जाएगा। मंत्र में अमुक के स्थान पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए।

तीसरा मंत्र

ॐ चैतन्य गोरक्षनाथाय नमः।
ॐ चैतन्य कानिफनाथाय नमः।
ॐ चैतन्य मच्छिन्द्रनाथाय नामः।

किसी को वश में करके कोई कार्य कराना हो तो नौ दिन तक नियमित स्नान के गीले कपड़े पहने हुए ही स्थिरता से उपर्युक्त मंत्र का एक सौ आठ बार जप करें।

पान द्वारा वशीकरण

हरे पान, हरियाले पान, चिकनी सुपारी, श्वेत खैर। दाहिने कर चूना मोहि लेय। पान हाथ में देय, हाथ रस लेय। पेट दे, पेट रस लेय। श्री नरसिंह वीर तुम्हारी शक्ति मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वर महादेव की वाचा।

इस मंत्र से इकतीस बार अभिमंत्रित कर देसी मीठा पान जिसे भी खिलाएंगे, वह वशीभूत हो जाएगा और वही करेगा, जो आप उससे चाहेंगे।

मंत्र द्वारा वशीकरण

ऐं भग भुगे भगनि भगोदरि भग माले योनि भग निपातिनी सर्व भग वशंकरि भग रूपे नित्यक्लैं भग स्वरूपे। सर्व भगानि मे वशमानय। वरदे रेते सु रेते भग क्लिन्ने। क्लीं न द्रवे, क्लेदय द्रावय अमोघे। भग विधे, क्षुभ क्षोभय सर्व सत्वान्। भगेश्वरी ऐं क्लैं मैं ब्लूं मो वलूं हे क्लिन्ने। सर्वाधिक भगानि तस्मै नमः।

सर्वप्रथम स्नान-ध्यान से निवृत्त होकर कुश के आसन पर बैठें। अपने सामने एक बड़ा घी या तेल का दीपक जलाकर रखें। फिर उपर्युक्त मंत्र का सवा लाख की संख्या में जप करें। समय चाहे जितना भी लग जाए, जब तक मंत्र की संख्या पूरी न हो जाए, अपने स्थान से न उठें। दीपक भी लगातार जलता रहना चाहिए। इस प्रकार मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। मंत्रसिद्धि के पश्चात योनि का ध्यान करके इसी मंत्र का इक्कीस माला जप करने से इच्छित स्त्री का वशीकरण होता है।

मीठी वस्तु द्वारा वशीकरण

ॐ नमो भगवते मदन मोह मये पंच भूत मोहिनी।
चतुर्विध जीव गलनु मोहिसु मोहिसु।
तन्नो नो उदकेण तुरित व्यतलिन्नकाणा कालुके।
प्याऽदे कल बहु दिवोडि वरील वार विर्दरे।
महा मायाणे काल भैरव-गणे ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरणे श्रीराम ईतनाणे।
क्लीं मोहिनी मोहिसु मोहिसु।
निगेगे निन्नाणे मोहिसु ॐ गुरु प्रसादं।

कोई भी मीठी वस्तु उपर्युक्त मंत्र द्वारा एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके इच्छित व्यक्ति को खिलाने से उसका वशीकरण हो जाता है।

चंदन द्वारा वशीकरण

ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन का ही नाम हुं फट् स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र का सवा लाख जप करके मंत्रसिद्ध करें। फिर प्रयोग के समय

चंदन को इकतीस बार मंत्र से अभिमंत्रित करें। इस चंदन को घिसकर और इसका तिलक करके जिसके सामने भी जाएंगे। उसका वशीकरण हो जाएगा। इस प्रयोग से एक से अधिक लोगों का वशीकरण किया जा सकता है।

प्रेमिका वशीकरण मंत्र

सकोरे में, ताबे में, शीशे में, पानी में, सीपी में कीड़ा मरे वश में हरे। पारबती के वचन न टरें। अमुक को वश में करे नहीं तो महादेव के त्रिशूल की चोट न खा लें। जय शंकर भगवान सत गुरु सत कबीर।

प्रेमिका के सामने खड़े होकर उपर्युक्त मंत्र को दो सौ सोलह बार पढ़ें। वह वशीभूत होकर आपकी ओर आकर्षित हो जाएगी। मंत्र में अमुक के स्थान पर प्रेमिका के नाम का जप करें।

पति को वश में करने का मंत्र

या भुज ते महिषासुर मारि
और शुम्भ-निशुम्भ दोऊ दल थम्बा
आरत हेतु पुकारत हौं
जाइ कहां बैठी जगदम्बा
खड्ग टूटो कि खप्पर फूटो कि
सिंह थको तुमरो जगदम्बा
आज तोहे माता भक्त शपथ
बिनु शांति दिए जानि सोवहु अम्बा।

पति को वश में करने का यह मंत्र सवा लाख बार जप करने पर सिद्ध हो जाता है। प्रयोग के समय इसका एक सौ आठ बार जप करें। किसी वस्तु को मंत्राभिषिक्त कर पति को खिला दें। वह सदा आज्ञाकारी बना रहेगा।

पत्नी वशीकरण मंत्र

पान पढ़ि खिलावे, त्रिया जोरि बिसरावे, क्षीरे त्रिया तोरा साथ नहि जावे, नाग वागे नागिन फेन काढ़े, तोर मुख न हित जाए वो, रे नागा, दोहाई गुरु नानक शाही का, दोहाई डाकिन का।

उपर्युक्त मंत्र को एक सौ आठ बार जप करके सिद्ध कर लें। फिर प्रयोग काल में इस मंत्र द्वारा पान को ग्यारह बार अभिमंत्रित करके पत्नी को खिला दें। वह तुरंत वश में हो जाएगी और आज्ञा मानने को बाध्य रहेगी। यदि वह पान न खाती हो तो मिठाई अभिमंत्रित करके खिलाएं।

भूत वशीकरण मंत्र

ॐ श्रं श्रं कं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

मूल नक्षत्र में चौके का जल बबूल वृक्ष की जड़ में डालकर इकतालीस दिनों तक नित्य इस मंत्र का एक हज़ार एक सौ आठ बार जप करें। बयालीसवें दिन जल न डालने पर भूत सामने उपस्थित होकर जल मांगेगा। ऐसे में भूत से अपने किसी भी कार्य को संपन्न कराने का वचन लें। इस प्रकार वह आपके वश में हो जाएगा। जब तक आप बबूल के वृक्ष में जल देते रहेंगे, तब तक वह आपके वश में रहेगा। यह प्रयोग किसी योग्य तांत्रिक के निर्देशन में करना ही उचित है। प्रयोग के समय रक्षाकारी सुरक्षा का कवच मंत्र अवश्य जप लें।

खिलाने मात्र से वशीकरण

पहला मंत्र

जे भुज ते महिषासुर मारो, शुम्भ-निशुम्भ हत्यो बल थम्बा। सेवक को प्रण रख ले मात। भई पर मंत्र तु ही अवलम्बा। आहत होय पुकारत हौं, कर ते तरवार गहो जगदम्बा। आनि तुम्हें शिव-विष्णु की, जनि शत्रु बधे बिन सो वहु अम्बा।

कटी हुई सुपारी के थोड़े से दाने लेकर दो माला मंत्र के जप से अभिमंत्रित कर, जिसे भी खिला देंगे वह वश में होकर आज्ञानुसार कार्य करेगा।

दूसरा मंत्र

पान मंगाहूं, पनागर ले, सत लोक ले, जल बैकुण्ठ ले, श्रीफल मंगा के परवाना देर्थो, अस्थिर हो जा।

इस मंत्र को एक सौ आठ बार जपकर व इससे एक पान का बीड़ा अभिमंत्रित करके अभीष्ट स्त्री या पुरुष को खिलाने से उसका वशीकरण हो जाता है।

तीसरा मंत्र

ॐ नमो सुपारी काम निगारी राजा प्रजाखरी पियारी, मंत्र पढ़ि लगाऊं तोहि हिया कलेजा लावे तोहि जीवता चाहे पगतली मूवा संग मसान। सो वश्य न होय तो यती हनुमान की आन, शब्द सांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का, ॐ ॐ ॐ।

सूर्य अथवा चंद्रग्रहण में खाने की कोई भी वस्तु लेकर उपर्युक्त मंत्र द्वारा एक हजार एक सौ आठ बार अभिमंत्रित कर जिसको भी खिला देंगे, वह वश में हो जाएगा।

चौथा मंत्र

ॐ नमो अप्सरा उर्वशी सुपारी काम निगारी राजा परजा खरी पियारी

मंत्र पढ़ि लगाऊं तोहि हिया कलेजा लावै तोहि जीवता चाटे पगतली मूवा संग मसान जो अमुक वश्य न होय तो जती हनुमंत की आन। शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का सूर्य या चंद्रग्रहण में बीस माला जप करें। इसी से यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। प्रयोगकाल में एक छोटी सुपारी को गंगाजल से धोकर मंत्र द्वारा उसे इकतीस बार अभिमंत्रित करें। अब यह सुपारी किसी भी तरह से जिसे खिला दी जाएगी, वह वश में हो जाएगा। मंत्र में अमुक की जगह पर अभीष्ट स्त्री या पुरुष का नाम बोलना चाहिए।

इलायली द्वारा वशीकरण

ॐ नमो काला कलबा काली रात
जिसकी पुतली मांझा राख
काला कलवा घाट बाट
सोती को जगाई लाव, बैठी को उठाई लाव
खड़ी को चला लाव, बेगी धर्‌या लाव
मोहनी जोहनी चल राज की टांड
'अमुकी' हजार जाप करे।

एक छोटी इलायली पर इस मंत्र का दस माला जप करें और इस अभिमंत्रित इलायची को अभीष्ट स्त्री को खिला दें। इससे उसका वशीकरण हो जाएगा। फिर वह आपकी हरेक बात मानने को बाध्य होगी। मंत्र में अमुकी की जगह उस स्त्री का नाम बोलना आवश्यक है।

ध्यान द्वारा वशीकरण

ॐ ताल तुम्बरी दह दह दरै झाल झाल आं आं आं हुं हुं हुं हें हें हें काल कमानी कोटा कमरिया ॐ ठः ठः।

राजहंस का स्वतः गिरा हुआ पंख, कोचनी का पुष्प एवं सफेद गाय का दूध—इन सबको मिलाकर खीर बनाएं। फिर उपर्युक्त मंत्र द्वारा खीर की एक सौ आठ आहुतियां दें। इससे मंत्र सिद्ध हो जाएगा। प्रयोग के समय नित्य ग्यारह दिनों तक इसी मंत्र का एक सौ जप करके इच्छित स्त्री या पुरुष का ध्यान करें। जिसका भी ध्यान किया जाएगा, वह वश में हो जाएगा।

अभीष्ट को वश में करने का मंत्र

ॐ वीर वैताल...अभीष्ट स्त्री/पुरुष का नाम...का मन फेर, मेरे वश में कर, चरणों में पड़े, कहियो करे, सौ ताला तोड़ हाजर होय, कहुं सो होय, ग्रं टं फट्।

होली की रात्रि में मिट्टी की हांड़ी लाकर उसमें साबुत हल्दी की एक गांठ, एक नीबू तथा सात काली मिर्च डाल दें। फिर उस हांड़ी पर लाल कपड़ा बांधकर उपर्युक्त मंत्र का एक घंटे जप करें। अब उस हांड़ी को घर से दूर वीराने में गाड़ दें और वापस आकर हाथ-मुंह धो लें। जिसके लिए भी प्रयोग किया गया है, वह वश में हो जाएगा।

वशीकरण के विविध दुर्लभ मंत्र

पहला मंत्र

माता अंजनी का हनुमान। मैं मनाऊं तू कहना मान। पूजा दे, सिंदूर चढ़ाऊं 'अमुक' को रिझाऊं और उसको पाऊं। यह टीका तेरी शान का। वह आवे, मैं जब लगाऊं। नहीं आवे तो राजा राम की दुहाई। मेरा काम कर नहीं आवे तो अंजनी की सेज पड़।

मंगलवार के दिन सवेरे हनुमान मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना करें। फिर उपर्युक्त मंत्र को सवा लाख जपकर सिद्ध करें। इसके पश्चात मस्तक पर चंदन का तिलक लगाकर, वहां से इसी मंत्र का जप करते हुए इच्छित स्त्री या पुरुष के पास जाएं। इस क्रिया से वह आपके वश में हो जाएगा/हो जाएगी। अमुक के स्थान पर उसका नाम अवश्य लें।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो काल भैरव काली रात
काला आया आधी रात
चलै कतार बांधूं तू बावन वीर
पर नारी सो राखै सीर
छाती धरिके वाको लाओ
सोती होय जगा के लाओ
बैठी होय उठा के लाओ
शब्द सांचा पिण्ड काचा
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा
सत्य नाम आदेश गुरु का।

होली या दीपावली जब रविवार के दिन हो, तो एरण्ड के पौधे को उपर्युक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए बाएं हाथ द्वारा एक झटके से उखाड़कर ले आएं। फिर इसके छोटे-छोटे टुकड़े करके मंत्र से इक्कीस बार अभिमंत्रित कर जिस स्त्री से स्पर्श करा देंगे, वह तत्काल वशीभूत हो जाएगी।

तीसरा मंत्र

काला कलुवा चौंसठ वीर ताल भागी तोर जहां को भेजूं वहीं को जाये मांस मज्जा को शब्द बन जाये अपना मारा, आप दिखावे चलत बाण मारूं उलट मूंठ मारूं मार मार कलुवा तेरी आस चार चौमुखा दीया मार बादी की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे माता का दूध पिया हराम।

जिस स्त्री का वशीकरण करना हो, उसके बाएं पैर के नीचे की मिट्टी लेकर और इस मंत्र द्वारा सात बार अभिमंत्रित करके, उसके सिर पर डाल दें। वह स्त्री वशीभूत हो जाएगी।

❑❑

14

भूत-प्रेत, ऊपरी बाधा निवारण

जिन स्त्री-पुरुषों पर भूत-प्रेत अपना अधिकार कर लेते हैं अथवा जो घातक ऊपरी बाधा के शिकार हो जाते हैं, वे अनायास ही अपने शरीर को नोचना, खचोटना व काटना शुरू कर देते हैं। वे खूब चिल्लाते हैं या एकदम चुप्पी साध लेते हैं, बड़बड़ाते भी हैं तथा आकाश की ओर या अकारण ही किसी ओर देखकर बातें करने लगते हैं। उछलना, कूदना, दौड़ना व गिरना साधारण-सी बात हो जाती है। अचानक उनके शरीर में इतना बल आ जाता है कि वह कई आदमियों का एक साथ मुकाबला करने लगते हैं। उनके शरीर का रंग पीला पड़ जाता है और शरीर दिन-प्रतिदिन दुर्बल होता जाता है। ऐसा लगता है मानो कोई उनका रक्त चूस रहा है। उनकी आंखें हमेशा लाल रहती हैं, हर समय शरीर तपता रहता है। वे ठीक से सोते नहीं हैं। मुंह से झाग फेंकते हैं, पैर पटकते हैं तथा उनके शरीर से कुछ दुर्गन्ध-सी आने लगती है।

यदि भूत-प्रेतग्रस्त रोगी का उपचार समय पर हो जाए तो वह ऐसे घातक कष्ट से शीघ्र मुक्ति पा सकता है। भगवान शंकर द्वारा रचित और गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रचलित इन प्रसिद्ध शाबर मंत्रों में अनेक मंत्र ऐसे हैं, जिनके प्रयोग से भूत-प्रेत व ऊपरी बाधा का निवारण कर व्यक्ति को स्वस्थ और नीरोग किया जा सकता है।

भूत-प्रेतादि नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को घोर घरे इनघेर काजी की किताब घोर मुल्ला की बांग घोर रेगर की कुंड घोर धोबी की कुंड घार पीपल का पान घोर देव की दिवाल घोर आपकी घोर बिखरता चल पर घोर बिठाता चल वज्र का किवाड़ तोड़ता चल सार का किवाड़ तोड़ता चल कुन कुन सो बंद करता चल भूत को पलीत को देव को दानव को दुष्ट को पुष्ट को चोट के पेट का मेले को घरेले का उलके को, हिड़के को भड़के को, ओपरी को पराई को, भूतनी को, पलेतनी को, डंकनी को, स्यारी को, भूचरी को, खेचरी को,

कलुवे को, मलयो को, उनको मघबाय के ताप को, तिजारी को, माया को, मतवाय को, मुगरा की पीड़ा को, पेट की पीड़ा को, सांस को, कांस को, मरे को, मुसाण को, कुण-कुण सा मुसाण कचीया मुसाण भूकीया मूसाण कीटिया मुसाण चीड़ी चोपटी का मुसाण नुईसा मुण इन्हें, को बंद करी ऐड़ी की ऐड़ी बंद करी पीड़ा की पीड़ी बंद करी, जांघ की झाड़ी बंद करी कटिया की कड़ी बंद करी, पेटी की पीड़ा बंद करी, छाती की शूल बंद करी, शरीर की शीत बंद करी, चोटी बंद करी, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा रोम-रोम में घर पिण्ड में दखल कर, देश बंगाल का मनसारा मसेवड़ा आकर मेरा कारज सिद्ध न करे तो गुरु उस्ताद से लाजे शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यह मंत्र इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि अभी तक यह गोपनीय रहा है। भूत-ज्वर, ग्रह दोष, भूत-प्रेत-पिशाच आदि के उपद्रव को समाप्त करने तथा हर प्रकार की ऊपरी बाधा को दूर करने में यह पूर्ण रूप से सहायक है। रविवार को साधक घर में या जंगल में, एकांत में दक्षिण की ओर मुंह करके बैठ जाए। सामने लोबान की धूप और सरसों के तेल का दीपक जलाकर रखे। अपने कपड़ों पर थोड़ा इत्र लगा लें। यह साधना ग्यारह रविवार तक की जाती है तथा प्रत्येक रविवार उपर्युक्त मंत्र का एक सौ एक माला जप किया जाता है। जब ग्यारह रविवार पूर्ण हो जाएं, तो जहां बैठकर मंत्र साधना की गई है, वहां थोड़ी भांग, सुलफा या अफीम रखें और तुरंत वह स्थान छोड़ दें। मंत्रसिद्धि के पश्चात साधक को चाहिए कि वह सामने उपद्रव ग्रस्त व्यक्ति को बैठाकर हाथ में चाकू या झाड़ू लेकर रोगी के शरीर से स्पर्श कराए और सात बार मंत्र को पढ़कर झाड़ा लगाए। यदि हालत ज्यादा खराब हो तो कागज पर केसर के पानी या चंदन के पानी से इस मंत्र को लिखे और उसे कपड़े में सिल कर, मंत्राभिषिक्त कर रोगी के गले या बाजू से बांध दे। इससे उसे आराम हो जाएगा।

प्रेतबाधा से मुक्ति का मंत्र

बांधो भूत जहां तु उपजो
छाड़ों गिरे पर्वत चढ़ाइ
सर्ग दुहेली तु जभि
झिलमिलाहि हुंकारे हनुमंत
पचारै सीमा जारि जारि
भस्म करे, जौं चापें सींउ।

सर्वप्रथम होली या दीपावली की रात्रि में, एकांत में बैठकर इस मंत्र को एक

सौ आठ बार जप कर और साधारण हवन-क्रिया कर सिद्ध कर लें। अब स्त्री या पुरुष, जिस पर भी भूत-प्रेत का प्रकोप हो गया है, उसे स्वस्थ करने के लिए निम्न प्रयोग करें—

रोगी को अपने सामने बैठाकर आम की लकड़ी की अग्नि में लोबान द्वारा आहुति देकर, मंत्र को धीमे स्वर में पढ़ते हुए ग्यारह बार हवन-प्रक्रिया करें। रोगी को ऐसी स्थिति में बैठाना चाहिए कि लोबान का धुआं उसके शरीर को छूता और चेहरे से टकराता रहे। इससे प्रेतबाधा का शमन हो जाता है।

अथवा रोगी को सामने बैठाकर एक लोटे में जल लें और उस पर सात बार उपरोक्त मंत्र पढ़कर फूंक मारें। तदुपरांत मंत्र पढ़ते हुए ही वह जल रोगी पर सात बार छिड़कें। इस क्रिया से भी भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाती है। तीसरी क्रिया में रोगी को सामने बैठाकर मोरपंख से उसके शरीर को सिर से पांव तक मंत्र का जप करते हुए झाड़ा लगाएं। सात बार यह क्रिया करने से ही भूतोन्माद से ग्रस्त व्यक्ति रोगमुक्त हो जाता है।

भूत भगाने का मंत्र

प्रायः दुर्बल शरीर के स्त्री-पुरुषों को प्रेत बहुत कष्ट देते हैं। जिसको भी ये पकड़ लेते हैं, उसे तन-मन आदि से जर्जर कर डालते हैं। कोई प्रेत तो इतना शक्तिशाली और दुष्ट होता है कि साधारण उपायों से पीछा नहीं छोड़ता। कुछ तो प्रयोक्ता तक को अपनी चपेट में ले लेते हैं। ऐसे प्रेतों से निपटारा सहज नहीं होता। निम्नलिखित मंत्र ऐसे प्रेत को भगाने में बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। पहले मंत्र के समान ही निम्न मंत्र को भी सिद्ध कर लेना चाहिए। इस प्रकार के मंत्रों को सिद्ध करने की विधि एक समान ही है।

मंत्र इस प्रकार है—

हाड़ के दिया चाम की बाती
धरी पछाड़ो भूत की छाती
चम्पा फूले फूले कचनार
तेहि पर भूत करे सिंगार
तर के उखरी उसकी बान
मेंरे गुन उठावे बान
हमसे सरवर के करे सेयान
मियां पोखर तीन अस्थान
दुहाई बाबा मसान की
गुन बान चक्कर बान

मेरा धरती उठे बान
मेरा बान ले के मेरा गुरु के बान
छांड़ों छांड़ों दोनों जन
लोहे का सिक्कड़ बज्जर के किवाड़
तहां राखौं पिण्ड प्राण
दुहाई कामरू कामाक्षा की।

इस शक्तिशाली मंत्र को इक्कीस बार पढ़कर, इक्कीस बार ही मोरपंख से रोगी को झाड़ा दिया जाए तो निश्चित ही भूत भाग जाता है। यह प्रयोग रविवार या मंगलवार को अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। यों आकस्मिक आपदा की स्थिति में रोगी की दशा को देखते हुए कभी भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

भूत-प्रेत झाड़ने का मंत्र

पूर्वोक्त विधि से सिद्ध करने के पश्चात ही निम्न मंत्र का प्रयोग करें—

सूत्र बनावें बन बीच आनंद कंद रघुवीर
लखे सिय सम्मुख महं होय धीर मतिधीर
तेही समय लखन तहं आये
पूछहिं राम लखन बुलाये
बोले हरि कवन कारण तुम भाई
इत आवन बहु विलम्ब लगाई
लखन बोले गयऊं दूर पहारा
देखेउ तहां भूतदल झारा
तहां एकौ मानजु न दिखाये
निज आश्रम को छोड़ पराये
इतना हरि सुन बान चलायेऊ
भागे भूत आनंद गिरि भयेऊ
'अमुक' के अंग नहीं भूत नहीं भार
राम के नाम से भयो समुद्र पार
आदेश श्री श्रीसीताराम की दोहाई।

यदि किसी स्त्री-पुरुष या बालक को भूत-प्रेत बाधा ने ग्रस्त कर रखा है, जिसके कारण वह अपनी स्वाभाविक मन:स्थिति में न रहकर, पगला-सा गया हो, पागलों जैसी हरकतें कर रहा हो, उस पर सवार प्रेतात्मा बोल रही हो तो उपरोक्त मंत्र को तीन बार पढ़कर, फूंक मारने से रोगी प्रेतबाधा से मुक्त हो जाता है। मंत्र में 'अमुक' की जगह रोगी का नाम लेना चाहिए। यदि एक बार में प्रेत रोगी को

छोड़कर न चला जाए तो इसी मंत्र से थोड़ा-सा गंगाजल अभिमंत्रित करके रोगी पर उसके छींटे मारने चाहिए। प्रेत चीखता हुआ भाग जाएगा।

भूतरोग विनाशक मंत्र

किसी विशेष अवसर (ग्रहणादि काल में) पर निम्नलिखित शाबर मंत्र को दस माला जप कर सिद्ध कर लें। मंत्र के जप के पश्चात एक माला मंत्र पढ़कर लोबान की ग्यारह आहुतियां देकर हवन अवश्य करें। इस प्रकार मंत्र प्रभावी हो जाएगा।

ॐ ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा परबत हंस स्वामी आत्मरक्षा सदा भवेत् नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई। हाथ में भूत, पांव में भूत, भभूत मेरा धारण माथे राखो अनाड़ की जोत, सबको करो सिंगार गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, दुहाई भैरव की।

सर्वप्रथम रोगी को सामने बैठाएं। तसले में आम की लकड़ियां जलाकर, उसके अंगारों पर लोबान की आहुतियां देते हुए सात बार मंत्र पढ़ें और हर बार मंत्र की समाप्ति पर अग्नि में लोबान की बुरकी दें। फिर उसी हवन की भस्म रोगी के पूरे शरीर, हृदय और मस्तक पर लगा दें। भस्म को लगाते समय भी मंत्र पढ़ते रहें। यदि स्थिति अधिक खराब हो तो अनार की कलम और रक्त चंदन के पानी से भोजपत्र पर यही मंत्र लिखें और कवच में बंद करके मंत्र से ग्यारह बार अभिमंत्रित करें और लोबान से धूपित कर रोगी के गले में बांध दें। इसका शीघ्र प्रभाव दिखाई देगा।

जादू-टोना निवारक मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी को आदेश। नजर काटो, बजर काटो मुहूर्त में देकर पाय, रक्षा करे जय दुर्गा माय नरसिंह ओना टोना बहाय। अमुक का रोग सागर पार चला जाय, आज्ञा हाडि दासी चण्डी की दुहाई।

रोगी को अपने सामने बैठाकर उपर्युक्त मंत्र को तीन बार पढ़ते हुए उसके शरीर पर मोरपंख से झाड़ा लगाएं। यह क्रिया दिन में तीन बार करनी है। पांच या सात दिन की इस क्रिया से रोगी स्वस्थ हो जाता है। किसी भी प्रकार का जादू-टोना उस पर शेष नहीं रहता। किंतु प्रयोग से पहले मंत्र को पूर्वोक्त तरीके से सिद्ध अवश्य कर लेना चाहिए। तभी वह प्रभावी होता है।

चुड़ैल के झाड़े का मंत्र

ॐ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारि का सर्ग पाताल आंगन द्वार घर मंझार, खाट बिछौना गड़ई सोवनार, सागलन और जेवनार विरासों धावै

फुलैल लवंग सोपारीजे मुंह तेल उवटन अबटन और अवनहान पहिरण लहंगा सारी जान डोरा चोलिया चादर झीन मोट रुई ओढ़न झीन शंकर गोरा क्षेत्रपाल, पहले झारो बारम्बार काजर तिलक लिलार आंखि नाक कान कपार मुंह चोटी कण्ठ अवकंश कांध बांह हाथ गोड़ अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल नाभि पेटी नीचे जोनि चरणि मत भेटी पीठ करि दाव जांघ पेंडुरी छूठी पावतर ऊषर अंगुरा चाम रक्त मांस डांड गुदी धातु, जो नहीं छडु अंतरी कोठरी करेज पित्त ही पित्त जिय प्राण सब वित बात अंकमने जागु बड़े नरसिंह की आनु कबहुं न लाग फांस, पित्तर रांग कांच, लोहरूप सोन साच पाट पट वशन रोग जोग कारण दीशन डीठि मूठि टोना थापक, नवनाथ चौरासी सिद्ध के सराप डाइन योगिनी चुरइन भूत व्याधि परि अरि जेतुत मनै मोरख नैन, साथ प्रगटरे विलाउ काली और भैरव की हांक, फुरो ईश्वरो वाचा।

चुड़ैल आदि का साया स्त्रियों पर ही अधिक पड़ता है। जब कभी कोई ऐसी स्त्री आए तो किसी एकांत में रोगी स्त्री को निर्वस्त्र करके नमक तथा पानी के साथ इस मंत्र से इक्कीस बार झाड़ा लगा दें। कुछ दिनों के प्रयोग से चुड़ैल का साया उस पर से हट जाएगा।

डाकिनी दोष का मंत्र

ॐ नमो नारसिंह पार्डहार भस्मना, योगिनी बंध डाकिनी बंध चौरासी दोष बंध अष्टोत्तर शत व्याधि वंध, खेदी खेदी, भेदी, मारे मारे, सोखे सोखे, ज्वर ज्वर, प्रज्वल प्रज्वल, नारसिंह वीर की शक्ति फुरो।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगिणी को सिर से पांव तक एक सौ आठ बार झाड़ा लगाने से डाकिनी दोष समाप्त हो जाता है।

राक्षस दोष का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, सुरगुरु बेची एक मंडली आणि, दोय मंडली आणि, तीन मंडली आणि, चार मंडली आणि, पांच मंडली आणि, छह मंडली आणि, सात मंडली आणि, हलती आणि चलती आणि नंसती आणि माजंती आणि सिहारो आणि उहारी आणि, उग्र होकर चढंती घाल वाय, सुग्रीव वीर तेरी शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यदि इस मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रभावित व्यक्ति को इक्कीस बार झाड़ा लगाएं तो वह शीघ्र ही राक्षस संबंधी सभी दोषों से मुक्त हो जाता है।

प्रेतनी बाधा नाशक मंत्र

बैर बैर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी

कहूं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी गांसी
वर बैल करे तूं कितना गुमान
काहे नहीं छोड़ती यह जन स्थान
जो चाहे तू देखना आपन मान
पल में भाग कैलाश ले अपनो सान
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई
आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

सर्वप्रथम किसी विशेष अवसर (दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहण के समय) पर उपर्युक्त मंत्र को एक हजार ग्यारह बार जप कर सिद्ध कर लें। जप के बाद एक सौ आठ बार मंत्र पढ़कर और लोबान की सात आहुतियां देकर हवन करें। इस प्रकार मंत्र सिद्ध हो जाएगा। जब कोई व्यक्ति भूत-प्रेतनी बाधा से ग्रस्त हो, तो उसे सामने बैठाकर मंत्रोच्चारण करते हुए उस पर फूंक मारें। यह क्रिया इक्कीस बार करें तथा हवन की थोड़ी-सी राख चुटकी में लेकर मंत्र से अभिमंत्रित कर रोगी के सिर पर डाल दें। यदि एक बार में आराम न हो, तो यह क्रिया नित्य कुछ दिनों तक करें।

ऊपरी बाधा निवारक मंत्र

तेली नीर तेल पसार चौरासी सहस्त्र डाकिनी
हेल ऐत नेर भार मुंह तेल पढ़िया देई।
अमुकं कार अंग अमुकं कार भर अड़ दल शूल यक्षा
यक्षानी दैत्या दैत्यानी भूता भूती प्रेता प्रेती
दानव दानवी निशाचरा सूचमुखा गाभर डलन
बात भाइया नाड़ी मोगाई अंगेधा काल जटार माया
खाउ ह्रीं फट् स्वाहा, सिद्ध गुरुर चरण राटेर कालिका चण्डीर आज्ञा।

दीपावली के दिन दस माला जप करके मंत्र को सिद्ध कर लें। फिर जब भी आवश्यकता पड़े तो मंत्र से सरसों का तेल सात बार अभिमंत्रित करके रोगी के शरीर पर मालिश करने से ऊपरी बाधा का निवारण हो जाता है।

प्रेत भगाने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को
हनुमंत बीर बजरंगी वज्रधार
डाकिनी-शाकिनी भूत-प्रेत
जिन-खब्बीस को ठोंक ठोंक
मार-मार, नहीं मारे तो

निरंजन निराकार की दुहाई।

पूर्वोक्त विधि से मंत्र सिद्ध करके रोगी को सामने बैठाएं। फिर थोड़े से साबुत उड़द के दाने और चौराहे से उठाकर लाई गईं छोटी-छोटी कंकड़ियों को एकेक करके और मंत्र पढ़-पढ़कर, फूंक मारते हुए रोगी के शरीर पर मारें। इस क्रिया से प्रेत रोगी को छोड़कर भाग जाता है।

□□

15

स्तंभनकारक मंत्र

हर व्यक्ति को जीवन में कभी न कभी स्तंभनकारक शाबर मंत्रों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ ही जाती है। इन मंत्रों का सीधा प्रभाव व्यक्ति के मस्तिष्क पर होता है। इन मंत्रों के प्रयोग से बुद्धि को जड़, निष्क्रिय, हत्प्रभ करके व्यक्ति को विवेकशून्य, वैचारिक रूप से पंगु, असमर्थ बनाकर उसके क्रियाकलाप को रोक देना स्तंभन कृत्य की प्रमुख प्रतिक्रिया है। वस्तुतः इन मंत्रों का त्वरित प्रभाव व्यक्ति के शरीर पर ही होता है। अकस्मात् उसकी गति रुक जाती है और वह विवशप्रायः हो जाता है। यह प्रयोग मनुष्य, पशु अथवा किसी भी वस्तु पर करके उसे निष्क्रिय बना देते हैं। इन मंत्रों का प्रभाव अचूक एवं अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होता है।

शस्त्र स्तंभन मंत्र

शत्रु के शस्त्र को निष्किय करने के लिए निम्नलिखित शाबर मंत्र का प्रयोग किया जाता है। प्राचीनकाल में जल, तलवार और भाले आदि से आमने-सामने की लड़ाई होती थी, तब ऐसे मंत्रों का बहुत अधिक प्रयोग किया जाता था।

शस्त्र स्तंभन का मंत्र इस प्रकार है—

ॐ काली देवी किलकिला भैरों चौंसठ जोगिनी बावन वीर तांबे का पैसा वज्र की लाठी मेरा काला चले न साथी ऊपर हनुमंत वीर गाजे मेरा कीला पैसा चले तो गुरु गोरखनाथ लाजे, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पढ़ते हुए तांबे के सात पैसों पर सात बार फूंक मारकर शत्रु पर मारें। इससे उसके शस्त्र का स्तंभन हो जाएगा अर्थात उसका शस्त्र निष्क्रिय हो जाएगा।

प्रहार की गति नष्ट करने का मंत्र

माता-पिता गुरु बांधों, धार बांधों
अस्त्रा वश्ये कटै मुनै बांधों
हनुमंत सुर नव लाख शूद्रन पाके पाऊं
रक्षा कर श्री गोरख राउ
संता देइ न वाचा नरसिंह के दुहाई
हमारी सवति आ।

पहले किसी होली, दीपावली, ग्रहण जैसे पर्व के अवसर पर या फिर गुरु पुष्य, शिवरात्रि, विजयदशमी जैसे अवसर पर इस मंत्र को ग्यारह माला जपकर लोबान की इक्यावन आहुतियां देकर सिद्ध कर लें। बाद में जब कभी आवश्यकता पड़े तो मंत्र को सात-सात बार पढ़कर थोड़ी-सी धूल को अभिमंत्रित करके (फूंक कर) अपने शरीर पर मल लें। ऐसा करने से शरीर शस्त्र के वार से सुरक्षित रहता है। चोट लगने पर भी असर नहीं होता, क्योंकि शस्त्र का वेग, उसकी धार या प्रहार की गति नष्ट हो जाती है।

तोप स्तंभन का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को
जल बांधूं, जलवाई बांधूं, ताखी ताई
सवा लाख अहेरी बांधूं, गोली चले तो
हनुमंत जती की दुहाई, शब्द सांचा
पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

गाय का दूध किसी एक हांड़ी, घड़े या किसी अन्य मिट्टी के पात्र में भरकर लाएं। उसे सात बार उपर्युक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर, फूंक मारकर तोप के मुंह पर पटक दें। इस प्रयोग से तोप का स्तंभन हो जाएगा। यानी जब वह दागी जाएगी तो उससे गोला नहीं निकलेगा।

नोट—आज के वैज्ञानिक युग में यह प्रयोग संभव नहीं है, फिर भी प्रसंगपूर्ति के लिए यहां लिख दिया गया है। यद्यपि प्राचीनकाल में ऐसे प्रयोग प्रचलित थे। हम नहीं कह सकते कि उस काल में भी यह प्रयोग सफल होता था या नहीं।

शत्रु शस्त्र स्तंभन मंत्र

बांधों तूपक अवनि बार न धरै,
चोट न परै, घाउ करै श्री गोरखनाथ।

यह मंत्र पढ़ते हुए सर्वांग में धूल लगा लें या धूल में लोट जाएं तो फिर शरीर

पर शस्त्राघात का प्रभाव नहीं पड़ता। शस्त्र स्तंभन के लिए यह प्रयोग अनेक ग्रंथों में प्राप्त होता है। धूल धारण के समय मंत्र का सात बार उच्चारण अवश्य करना चाहिए।

शस्त्र प्रहार बेअसर करने का मंत्र

ॐ धार धार अधार धार धार
बांधूं सात बार कटै न रोग, न भीजै पीर
खाण्डा की धार ले गयो हनुमंत वीर
शब्द सांचा, पिण्ड काचा
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पहले सवा लाख की संख्या में जपकर सिद्ध करें। फिर प्रयोग के समय मंत्र को सात बार पढ़ें और थोड़ी धूल अभिमंत्रित कर शरीर पर लगा लें। इस प्रयोग से तलवार आदि का प्रहार शरीर पर बेअसर हो जाता है।

ओलावृष्टि स्तंभन मंत्र

ॐ नमो समुद्र, समुद्र में दीप
दीप में कूप, कूप में कुईं
तहां ते चले हरि हर परे
चारों तरफ बरावह चला हनुमंत
बरावत चला भीम, ईश्वर गौरी चला

कभी-कभी पहाड़ी इलाकों में पानी के साथ ओले और पत्थर भी बरसने लगते हैं। ऐसी ओलावृष्टि बहुत हानिकारक और कष्टप्रद होती है। ऐसी स्थिति में यदि उपर्युक्त शाबर मंत्र का जप और प्रयोग किया जाए तो यह वृष्टि थम जाती है, ऐसा कहा यगा है (यद्यपि हमें इसमें संदेह है)। यदि इस वृष्टि के समय उपर्युक्त मंत्र का लगातार जप किया जाता रहे तो इस आफत से बचाव हो जाता है।

अग्नि स्तंभन मंत्र

महि थांमो, महि अर थांमो, थांमो मोटी सार
थांमनो आपनो वैसन्दर, तेलहि करो तुषार।

यह प्रयोग सही दृष्टि से दुष्कर्म है और अभिचार कर्म की श्रेणी में आता है। फिर भी पाठकों के ज्ञानवर्धन के लिए इसका उल्लेख किया जा रहा है। यदि चूल्हे पर कोई दाल-सब्जी किसी पात्र में पक रही हो तो सात बार नमक की डली पर मंत्र पढ़कर चूल्हे में डाल दें। इससे चूल्हे पर रखा पात्र गरम नहीं होगा।

शत्रु स्तंभन मंत्र

ॐ नमो चौंसठ योगिनी बावन वीर
छप्पन भैरों सत्तर पीर आय बैठो डाल के बीच
हाली हलै न चाली चलै बाड़ शत्रु सो मिले
डाल हलै चलै तो गोरखनाथ की दुहाई फुरो।

पहले किसी शुभ समय में मंत्र का ग्यारह माला जप करके एवं मंत्र के एक सौ आठ जप से साधारण हवन करके मंत्र को सिद्ध करें। इसके बाद थोड़े से जल को मंत्र से ग्यारह बार अभिमंत्रित कर शत्रु के ऊपर छिड़क दें। इससे उसका स्तंभन हो जाएगा और आपका कुछ भी बुरा या हमला करने के लिए उसका शरीर अक्षम हो जाएगा।

आसन स्तंभन मंत्र

ॐ नमः दिगम्बराय 'अमुकं' आसनं स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का जप श्मशान भूमि में किया जाता है। यह आवश्यक नहीं कि मंत्रसिद्धि रात में ही की जाए, दिन में भी इसकी सिद्धि की क्रिया की जा सकती है। इस मंत्र का एक हजार आठ बार जप करके, चिता की अग्नि में एक सौ आठ बार नमक (साबुत) से आहुति देने से मंत्रसिद्धि हो जाती है। मंत्र में 'अमुकं' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए, जिसके आसन का स्तंभन करना है। प्रयोग के समय थोड़ा जल हाथ में लेकर और उस पर ग्यारह बार मंत्र पढ़कर आसन पर फेंकने से आसन का स्तंभन हो जाता है।

विरोधी स्तंभन मंत्र

अफल अफल दुश्मन के मुंहे कुफल,
मेरे हाथ कुंजी रुपया तोर कर दुश्मन का जर कर।

इस मंत्र का प्रयोग जिस अदालत में मुकदमे की सुनवाई अथवा फैसला हो रहा हो, वहां किया जाता है। सात शनिवार को सवा लाख मंत्र का जप करके इसे सिद्ध किया जा सकता है। फिर अदालत में जाने से पहले एक सौ आठ बार मंत्रोच्चारण करके विरोधी की ओर फूंकें तो विरोधी स्तंभित हो जाएगा और अदालत में विरोध में कुछ भी नहीं कह पाएगा।

पहला मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमः आदेश अंग में बांधि राख, नरसिंह यती मोसते बांधि राख, श्री गोरखनाथ कांखते बांधि राख, हपूलिका राजा सुण्डो से बांधि राख, दृढ़ासन देवी यह मन पवन काया को राख, थंभे गर्भ

औ बांधे घाव थांभै माता पार्वती यह गण्डौं बांधू ईश्वर यती, जब लग डांडो कट पर रहे ब लग गर्भ काया में रहे, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

स्त्री की चोटी से एड़ी तक सात बार कच्चा सूत नापें और कुंआरी कन्या से इसे वटवाकर सात बार उपर्युक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके सात बच्चों से इसमें एकेक गांठ लगवाएं। फिर इसे स्त्री की कमर में धारण करवा दें। इससे उसके गर्भ का स्तंभन हो जाएगा अर्थात वह सुरक्षित रहेगा।

दूसरा मंत्र

ॐ नमो गंगा डाकरे गोरख बलाय धीपर गोरख यती पूजा जाय, जयद्रथ पुत्र ईश्वर की माया।

किसी कुंआरी कन्या द्वारा काते सूत को ग्यारह बार इस मंत्र से अभिमंत्रित कर स्त्री की कमर में बंधवा दें। यदि गर्भ के गिरने की आशंका हो तो इससे गर्भ स्थिर हो जाता है।

तीसरा मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को जंभीर वीर ग्रधामा हरे अठोत्तर है गर्भ ही तीनों तने पाके न फूटे गिरे न पीरा करे। करे तो जंभीर बीर की दुहाई, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

स्त्री की लंबाई जितने सूत के छह धागे लेकर उसे छह बार बटें। फिर उसमें छह गांठें लगाएं और उपर्युक्त मंत्र से छह बार अभिमंत्रित कर स्त्री की कमर में बंधवा दें। यह प्रयोग छठे महीने करना चाहिए। इस प्रयोग से गर्भ का स्तंभन हो जाता है।

सर्प स्तंभन का मंत्र

बजरी बजरी बजर किवाड़ बजरी कीलुं आस-पास मरे सांम होय खाक, मेरा कीला पत्थर फूटे न गेर कोला छूटे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शिवरात्रि के दिन से आरंभ कर इस मंत्र का सवा लाख जप पूरा करें। इस प्रकार मंत्र के सिद्ध हो जाने पर गाय के गोबर की राख लेकर उसे मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर सर्प के ऊपर डाल दें। इसके प्रभाव से उसका उसी समय स्तंभन हो जाएगा।

मदारी स्तंभन का मंत्र

यह मंत्र मदारी हो या जादूगर अथवा खेल-तमाशे दिखाने वाला, सभी पर प्रभावशाली सिद्ध होता है। मंत्र इस प्रकार है—

**ॐ नमो गदाधारी हनुमान वीर स्वामी
भास्कर का तेज वैरी का शरीर महर्षि चक्र
मातृ कालिका चलाया चलो वैरी न कर
वैरी न कर वैरी करी हो तेरे जीव को
घात में न डरूं, तेरे गुरु पीर से मारूं,
तुझे एक ही तीर से मारूं,
मेरा मारा एक सक घूमें जैसे भुजंगी सर्प की
लहर परे तोहि गीख मारूं बाण
फेरे चले तो गुरु गोरखनाथ की आन।**

उड़द के सात दाने लेकर उन पर सात बार उपर्युक्त मंत्र को पढ़कर मदारी की ओर फेंक दें। ये उड़द उसके शरीर से स्पर्श अवश्य होने चाहिए। उसका इस प्रयोग से तत्काल स्तंभन हो जाएगा। फिर वह अपना कोई खेल नहीं दिखा पाएगा।

दृष्टि स्तंभन मंत्र

ॐ नमो बटुमी चामुण्डी ठः ठः ठः स्वाहा।

पद्मनाल पर कन्या द्वारा काता गया सूत लपेटकर, उसे उपर्युक्त मंत्र के एक सौ आठ जप से अभिमंत्रित करें। फिर इस सूत को बंटकर घुमाएं। जो भी उसे देखेगा, उसकी दृष्टि का स्तंभन हो जाएगा। अर्थात उसकी दृष्टि बंध जाएगी।

वाद्ययंत्र स्तंभन का मंत्र

**ॐ नमो बादी आया, बांद करता कूं बैठाया
बड़ बड़ पीतल की छाया रहुरे, बादी बाद न कीजै
बांधूं तेरा कण्ठ और काया, बांधूं पूंगी और नाद
बांधूं योगी और साधु, बांधूं कण्ठ की पूंगी और मसान की बानी
अब तो रह रे पूंगी, सुजान तलै बांधे नारसिंह
ऊपर हनुमंत गाजै, मेरी बांधी पूंगी बाजै तो गारेखनाथ लाजै
शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।**

उड़द के गिनती के इक्कीस दाने लेकर और इस मंत्र से एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके पूंगी आदि जिस वाद्य यंत्र पर भी मार देंगे, वह बजेगा नहीं। वादक के सारे प्रयत्न व्यर्थ हो जाएंगे।

स्त्री को रोकने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, काला कलुवा सक्या बीर तलवा सिरसों चटै शरीर लट झाड़े, मुंह मटका वेरक्ता कलुया पैर चलावे चलाय चलाय मसाणी

कलुवा अमुकीं उमें चाटे हमारा तलवा, लगा के फूल तंरा की साखी अमुकीं चलती को खड़ी कर राखी, सत्त साहिब आदेश गुरु को।

यह प्रयोग उन स्त्रियों और युवतियों के लिए है, जिनके पांव घर में नहीं रुकते। बार-बार मना करने पर भी वह घर से बाहर पांव निकालती हैं। प्रेमादि प्रसंग अथवा किसी पर पुरुष के फेर में पड़ जाना भी इसका एक कारण हो सकता है। उन्हें घर में रोकने के प्रयोग के निमित्त सर्वप्रथम तांबे की एक सुई लें। उसमें नीला धागा पिरो दें। अब वह सुई-धागा और साबुत बेदाग नीबू हाथ में लेकर दक्षिण की ओर मुख करके बैठ जाएं। यह प्रयोग रात्रि हो जाने पर करें। उपर्युक्त मंत्र के एक हजार आठ जप से उस सुई-धागे और नीबू को अभिमंत्रित करें। आकाश में जब कोई तारा टूटे, तो उस नीबू में सुई द्वारा धागा पिरोकर, मुख्य द्वार की चौखट के बाहर भूमि में गाड़ दें। मंत्र में अमुकीं के स्थान पर अभीष्ट स्त्री के नाम को बोलें। इस प्रयोग से उसका स्तंभन हो जाएगा और वह चाहकर भी घर से बाहर कदम न रख सकेगी।

टिड्डी स्तंभन का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को अजर कीलनी बजर कीलनी की लूंटीढ़ी धरूं मसान धर मार धरती सों मार सवा अंगुल पाख धरती में गाढ़े उहर मुहम्मद बीर की चौकी चढ़ै थम धरती चाटे खाय, बायें हाथ मेल्हे हाथ में उठाय मेरा गुरु उठाय तो उठजे और चक्र सों उठै तो दुहाई गोरखनाथ की फिरै आदेश गुरु को।

पहले इस मंत्र का दस माला जप करके साधारण हवनादि क्रिया कर मंत्र को सिद्ध करें। फिर सवा किलो साबुत चावलों को मंत्र के एक सौ आठ जप से अभिमंत्रित कर लें। जब खेतों में फसल खड़ी हो जाए तो उन चावलों को पूरे खेत में उछाल फेंकें। इसके प्रभाव से टिड्डी दल फसल को हानि पहुंचाने के लिए नीचे नहीं उतर सकेगा और ऊपर आकाश में ही मंडराकर चला जाएगा।

भूख स्तंभन का मंत्र

ॐ गाजुहद रख्यां उन्मुख मुख मांसर चिलम् ताली आहुम्।

पहले इस मंत्र को होली या दीपावली की रात्रि में एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय हस्त नक्षत्र में चर्चिका बीज को एक सौ आठ बार उपर्युक्त सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित कर सेवन करें। इस प्रयोग से भूख का स्तंभन हो जाता है अर्थात् भूख नहीं लगती है। ❑❑

16

जीवनरक्षा के मंत्र

अपने जीवन की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य है। सड़क पार करते समय एवं वाहन चलाते समय वह यही प्रयास करता है कि उसके साथ कोई दुर्घटना न घटे। किसी निर्जन स्थान पर जाते समय उसे हिंसक जीव आदि से भयभीत रहना पड़ता है। ऐसे ही झाड़-झंखाड़ अथवा खेत-खलिहानों में विचरण करते हुए उसे विषैले कीड़े-मकोड़ों के दंश का भय रहता है। नजरदोष अथवा असामाजिक तत्वों से रक्षा के प्रति उसे सतर्क रहना पड़ता है। यदि व्यक्ति को कभी ऐसी किसी स्थिति से दो-चार होना पड़ जाए तो निम्नलिखित शाबर मंत्र उसके जीवन की रक्षा करते हैं।

दुर्घटना से बचाव का मंत्र

पंथान सुपथा रक्षे मार्ग क्षेमंकरी तथा राजद्वारे महालक्ष्मी सर्वतः स्थिता।

आप पैदल जाने वाले हों या वाहनादि द्वारा, आसपास जाएं या लंबी यात्रा पर उपरोक्त मंत्र को ग्यारह बार जपकर ही घर से बाहर निकलें। आपके साथ कोई दुर्घटना नहीं घटेगी और आपका जीवन सदा सुरक्षित रहेगा।

हिंसक पशु से रक्षा का मंत्र

ॐ नमो परमात्मने परब्रह्म मम शरीरे, पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा।

जब कभी आपको किसी जंगल इत्यादि को पार कर जाना हो तो उपर्युक्त मंत्र को लगातार जपते रहें। हर प्रकार के हिंसक जीवों से आप रक्षित रहेंगे।

बिच्छू काटे का मंत्र

ॐ काला बिच्छू कंकड़ वाला
सोने का डंक रूपे का प्याला
मैं क्या जानूं बिच्छू तेरी जात
जंम्या चौदस-अमावस की रात

चढ़ी को उतारो, उतरती को मारो
साहब मकड़ी फुंकारो
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पहले सूर्य या चंद्र ग्रहण में इस मंत्र को दस हजार की संख्या में जपकर सिद्ध करें। मंत्रसिद्धि के पश्चात कुछ मीठा बच्चों में बांट दें। जब मंत्र का प्रयोग करना हो तो जहां बिच्छू ने काटा है, उस स्थान पर सात बार मंत्र पढ़कर, सात बार फूंक मारें। फिर सात बार मंत्र से कलावे को अभिषिक्त करके बिच्छू के काटे गए स्थान पर बांध दें। इससे दाह समाप्त होती है और विष का प्रभाव भी नष्ट हो जाता है।

बिच्छू विष निवारण का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, कालो बिच्छू कांकरवालो, उत्तर बिच्छू न कर टालो, उतरो तो उतारूं, चढ़े तो मारूं, गरुड़ मोरपंख हकालू, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का एक लाख जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। जब मंत्र सिद्ध हो जाए तो जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा है, उसे सामने बैठाकर उस स्थान पर दोनों हाथों से तेजी से हाथ फेरते हुए मात्र तीन बार मंत्र को पढ़कर फूंक मारने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

सर्प विष उतारने के मंत्र

पहला मंत्र

ॐ नमो सर्पा रे, तू थूलमूला मुख मेरा बना कमल का फूला रे, सर्पा बांधूं तेरी दादी बुआ जिनको तोको गोद खिलाया, सर्पा रे सर्पा, बांधूं तेरा रतन कटोरा जाये तो कू दूध पिलाया सर्पा बीज कीलनी बीज पान मेरा कीला करे जो घाव तेरी दाढ़ भस्म हो जाय, गुरु गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरु का, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को शिवरात्रि से आरंभ करके दूसरे दिन संध्याकाल तक लगातार जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। जब मंत्र सिद्ध हो जाए तो जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो, उस व्यक्ति के काटे हुए स्थान पर इस मंत्र को तीन बार लोहे की चीज या झाड़ू से झाड़ देने से सर्प का विष उतर जाता है।

दूसरा मंत्र

कोने में बैठे लखींदर, विहुला बैठी घर में
दोनों मिलि चरखा कातें, हाथ-पांव के भर में
बिहुला बोलत विषहर तो ही पहिचान
मोर स्वामी को डंस लिये थे प्राण

अभी तोहीं करूं नमस्कार बारम्बार
तू हमरे घर भूल न आना इस बार
जावो विषि वेगि झट से जाव
नहीं तो माय मनसा के माथा खाव।

प्रयोग से पहले एक हजार आठ बार मंत्र को जपकर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता पड़ने पर नीम की टहनी से मंत्र को इक्कीस बार पढ़कर झाड़ा लगाएं। इससे विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। इस प्रयोग को एक से अधिक बार भी किया जा सकता है।

तीसरा मंत्र

ॐ नमो भगवति वज्रमये हन हन। ॐ भक्ष भक्ष। ॐ खादय खादय। ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्मांगि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रकरांचिते पूर्वां दिशं बंध बंध। ॐ दक्षिणां दिशं बंध बंध। ॐ पश्चिमां दिशं बंध बंध। ॐ उत्तरां दिशं बंध बंध। ॐ नागान् बंध बंध। ॐ नागपत्नी बंध बंध। ॐ असुरान् बंध बंध। ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् रक्ष रक्ष। ॐ ऊर्ध्वं रक्ष रक्ष। ॐ अधो रक्ष। ॐ क्षुरिके बंध बंध। ॐ ज्वल महाबले घट घट। ॐ मोटि मोटि सटावलि वज्रांगि वज्रप्रकारे हूं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् ह्रीं हः फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्ष रक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वांगानि रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से पानी को तीन बार अभिमंत्रित कर पिलाने से विष का शमन हो जाता है। इस प्रयोग को बारम्बार करना चाहिए।

चौथा मंत्र

अरे विष तोरे कोरियारंगनि रेख रहेयो
जेहि पीवत महादेव के नीलकंठ भयो
जावो रे विष मनसा देवी दूध झारी लियो
शीघ्र जावो विष देवी के गुहार भयो
आज्ञा देवी मनसा माई,
आज्ञा विष हरि राई की दुहाई फिरै।

मनसा देवी का ध्यान करते हुए इस मंत्र से एक सौ आठ बार झाड़ने से विष का प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जाता है।

पांचवां मंत्र

ॐ गंगा गौरी दोउ रानी
ठोकर मार करो विष पानी
गंगा पीसे गौरी खाय

अठारह विषनिर्विष है जाय
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार को नीम की टहनी लेकर तथा इस मंत्र को पढ़कर सात बार झाड़ें। इसके प्रभाव से सभी तरह के विषों का प्रभाव समाप्त हो जाता है। यह प्रयोग सर्प विष निवारण में भी लाभकारी है।

छठा मंत्र

ॐ सार झखार काले कोठा वार पलाता दह दह छह उजरा छह कारी छह पीरी अठारह जाति जाग जाग शब्द वाचा फुरो सांचा।

गूया के ताजा पुष्पों के साथ साबुत सूखी अढ़ाई मिर्च को पीसकर तथा इस मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित कर सर्पदंशित रोगी को पिला दें तो विष उतर जाता है।

चूहा विषनाशक मंत्र

वैसे तो चूहा एक भीरु प्रकृति का जीव है, जो चुपचाप घर में छिपकर अनाज, कपड़े और पुस्तकें कुतरता रहता है। किंतु कभी-कभी यह उन्मत्त होकर भयंकर रूप धारण कर लेता है। यह रात में सोते हुए लोगों को अपने तेज दांतों से काट लेता है। किसी-किसी चूहे के दांत विषैले होते हैं। ऐसा चूहा यदि किसी को काट ले तो अनेक प्रकार के उपद्रव, ज्वर, उन्माद, फफोले, निद्रा व घाव आदि उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसे में निम्न मंत्र का प्रयोग लाभदायक सिद्ध होता है।

ॐ गेरिठः।

किसी शुभ नक्षत्र में पहले इसे मंत्र को एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर लें। फिर जिसे चूहे ने काट खाया है, उसके शरीर पर चूल्हे की राख सात बार पढ़कर छिड़क दें।

पागल कुत्ते के काटे का मंत्र

ॐ नमो सुरणहीं सुरणहां कुकरी, दाड़ उगती मारूं रे बाण चक्र चुगती। दुग्गल की वाचा फुरे गुरु की शक्ति तेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

गोबर से चौका लगाएं, थोड़े गेहूं, एक पैसा और सात साबुत सुपारी लें। कुत्ते के काटे गए व्यक्ति को सामने बैठाएं, रोली से टीका करें और एक सौ आठ बार झाड़ा नित्य तीन दिनों तक लगाएं। तीसरे दिन गेहूं, पैसा और सुपारी किसी वृक्ष की जड़ में रखवा दें। इसके स्थान पर निम्नमंत्र का प्रयोग भी किया जा सकता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी, जहां बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी का झामरा कुत्ता, सोना डाढ़ रूपा का कूंडा, बंदर नाचे रीछ बजावे,

सीता बैठी औषध बांटे कूकर का विष भाजे, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पागल कुत्ते ने जहां पर काटा है, वहां पर झाड़ें तो विष उतर जाता है और किसी प्रकार की पीड़ा भी शेष नहीं रहती।

उच्चाटन का मंत्र प्रयोग

ॐ अंजनी पुत्र पवनसुत हनुमान वीर वैताल साथ लावे मेरी सौत (नाम) से पति को छुड़ावे, उच्चाटन करे करावे मुझे वेग पति मिले, मेरा कारज सिद्ध न करे तो राजा राम की दुहाई।

यह प्रयोग तब किया जाता है, जब किसी स्त्री का पति किसी अन्य स्त्री के फेर में गया हो। उस स्त्री के चंगुल से पति को छुड़ाने के लिए उपर्युक्त मंत्र को पांच हजार जप कर पहले मंत्र को सिद्ध करें। फिर दो हकीक पत्थर और एक सियारसिंगी अपने सामने रखें। एक हकीक पत्थर पर अपने पति का व दूसरे पर अभीष्ट स्त्री का नाम लिखें। सात बार मंत्र पढ़कर तीनों को अभिषिक्त करें। जिस हकीक पर स्त्री का नाम लिखा गया है, उसे घर से दूर किसी सुनसान स्थान पर जाकर भूमि में गाड़ दें। दूसरे हकीक को सियारसिंगी के साथ लाल कपड़े में बांधकर घर में किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। इसके प्रभाव से पति और अभीष्ट स्त्री के बीच मनमुटाव उत्पन्न हो जाएगा। इसी के साथ उनके बीच जो भी संबंध बना है, उसका अंत हो जाएगा।

मित्र उच्चाटन का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु सत्य नाम को, बारहा सरसों तेरह राई बाट की मीठी मसान की छाई, पटक मारूं कर जल वार। अमुक फुटेन देख अमुक द्वार। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

थोड़ी पीली सरसों, थोड़ी-सी राई, थोड़ी मेथी, आम तथा ढाक वृक्ष की सूखी लकड़ी ले आएं और फिर श्मशान में जाकर किसी बुझी हुई चिता की राख लाएं। अब आम और ढाक की लकड़ियों को जलाएं और सरसों, राई, मेथी और चिता की राख को परस्पर मिलाकर उपर्युक्त मंत्र को पढ़ते हुए अग्नि में एक सौ आठ बार आहुतियां दें। मंत्र में अमुक के स्थान पर मित्रों के नाम का उच्चारण करें। इस क्रिया से दोनों में परस्पर उच्चटन हो जाएगा।

संबंधी उच्चाटन का मंत्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा करालाय 'अमुक' सुपुत्र सबांधव सह हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः।

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में शुद्धतापूर्वक इस मंत्र का दस हजार

की संख्या में जप करें। इसके बाद जहां गधा लोट रहा हो, उसके नीचे की थोड़ी-सी मिट्टी उठाकर लाएं और उसे एक सौ आठ बार इस मंत्र से अभिषिक्त करके (मंत्र में अमुक के स्थान पर संबंधी का नाम जपें), जिस संबंधी के घर में डालेंगे, उसका उच्चटन हो जाएगा।

विद्वेषण मंत्र के प्रयोग

किन्हीं दो व्यक्तियों के बीच प्रेम-संबंध भंग करके उन्हें एक-दूसरे का विरोधी, निंदक अथवा शत्रु बना देना, उनके पारस्परिक स्नेह-सूत्र को तोड़ देना, यही 'विद्वेषण' कहलाता है। यहां पर विद्वेषण के कुछ मंत्र प्रयोग प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

पहला मंत्र

ॐ नमो नारायणाय 'अमुक....अमुक' सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा।

ग्रहण, दीपावली, गुरुपुष्य योग अथवा अन्य किसी शुभ अवसर पर इस मंत्र को दस हजार की संख्या में जपकर सिद्ध कर लें। ध्यान रहे मंत्र में 'अमुक-अमुक' स्थान पर उन लोगों का नाम बोलना चाहिए, जिनके मध्य विद्वेष उत्पन्न करना हो। अब कौआ और उल्लू का पंख (स्वतः गिरे) प्राप्त करें। उन्हें परस्पर काले धागे में बांधकर एवं किसी नदी या जलाशय के किनारे बैठकर, एक सौ आठ बार उन्हीं पंखों से जल का तर्पण करें। इस समय में मंत्रोच्चारण निरंतर चलता रहना चाहिए। इस क्रिया से उन दोनों व्यक्तियों के बीच विरोध उत्पन्न हो जाएगा। इसके बाद पंखों को भूमि में दबा देना चाहिए।

दूसरा मंत्र

बारह सरसों, तेरह राई, पाट की माटी, मसान की छाई, पढ़कर मारूं करद तलवार अमुक कढ़ें, न देखें अमुक का द्वार, मेरी भक्ति शुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्तनाम आदेश गुरु का।

किसी शुभ मुहूर्त में मंत्र को दस हजार जप कर सिद्ध कर लें। मंत्रसिद्धि के पश्चात किसी मंगलवार के दिन सरसों, राई, चिता की राख लाकर और मिलाकर रखें। फिर पलाश और आक की लकड़ियों की अग्नि में मंत्र जप करते हुए उपर्युक्त मिश्रण की आहुति देते हुए हवन करें। मंत्रोच्चारण में अमुक-अमुक के स्थान पर उन व्यक्तियों के नाम बोलते रहें, जिनके बीच विद्वेषण करना है। एक सौ आठ आहुतियों के बाद हवन की थोड़ी-सी राख वहां डाल दें, जहां वे दोनों व्यक्ति मिलते हों। इस क्रिया से उनकी पारस्परिक-सद्भावना समाप्त हो जाएगी और वे एक-दूसरे के विरोधी हो जाएंगे। ❑❑

17

शाबर मंत्रों के काम्य प्रयोग

जिन लोगों ने तंत्रसम्मत बीज मंत्रों तथा वैदिक मंत्रों का अध्ययन किया है, उन्हें शाबर मंत्र निश्चय ही कुछ अटपटे से लगे होंगे, किंतु वास्तविकता यह है कि काम्य प्रयोगों में इन शाबर मंत्रों का चमत्कारिक प्रभाव तत्काल घटित होता है, क्योंकि शाबर मंत्र विशेष सिद्ध-पीठों द्वारा सिद्ध किए गए मंत्र हैं। इनको सिद्ध करना भी कठिन नहीं होता। इनके प्रयोग भी बहुत सरल होते हैं। इनकी शब्द-रचना भी ऐसी है कि ये शीघ्र याद भी हो जाते हैं। यहां दिए जाने वाले शाबर मंत्रों के काम्य प्रयोग निश्चय ही पाठकों का ज्ञानवर्धन करेंगे।

अभिचार कर्म का मंत्र

एक ठो सरसों सौला राई
मोरो पटवल को रोजाई
खाय खाय पड़े भार
जे करै ते मरे, उलट विद्या ताही पर परे
शब्द सांचा पिण्ड काचा
हनुमान का मंत्र सांचा
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यदि किसी के ऊपर किसी तांत्रिक या ओझा ने तांत्रिक अभिचार कर दिया हो और बार-बार करता हो तो थोड़ी-सी राई, सरसों तथा नमक मिलाकर रख लें। इसके बाद इस मंत्र का जप करते हुए सात बार रोगी का उसारा करें और फिर जलती हुई भट्ठी या चूल्हे की तेज अग्नि में वह सारी सामग्री एक झटके से डाल दें। इससे तांत्रिक का सारा किया-कराया वापस लौट जाएगा।

रक्षाकारी मंत्र का प्रयोग

याही सार सार सार जिन्न देव पारी नवस्कंफार

एक खाये दूसरे को फार चहुं और अनिया पसार
मलायक अस चार दुहाई दस्तखे जिबराइल
बाई वे खैभि काइल दाईं दस्न दस्न हुसैन पीठ
खदे खेई आमिल कलेजे राखे इजराइल दुहाई
मुहम्मद अलोलाह इलाह की कंगूर लिल्लाह की खाई
हजरत पैगंबर अली की चौकी नख्त मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

यह सर्वश्रेष्ठ रक्षाकारी मंत्र है। जब भी कहीं कोई तांत्रिक क्रिया प्रारंभ करें तो इस मंत्र को सात बार पढ़कर ताली बजा दें। उसका प्रयोग निष्फल हो जाएगा। यदि कोई तांत्रिका क्रिया से आक्रांत व्यक्ति आए तो इस मंत्र को सात बार पढ़कर मोर पंख से झाड़ दें। वह स्वस्थ हो जाएगा। श्मशान आदि साधना में बैठने से पहले इस मंत्र को तीन बार पढ़कर अपने चारों ओर रेखा खींच दें। इससे शरीर रक्षित रहेगा।

चुड़ैल दोष निवारण का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का
कवलाछरी बावन वीर
कलू बैठनो जल के तीर
तीन पान का बीड़ा खवाऊं
जैठे बैठा जत लाऊं
मालीमर तोर गत बहाऊं
वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को जपते हुए झाड़ा करने से स्त्री हो या पुरुष, चुड़ैल संबंधी समस्त दोषों से मुक्त होकर पुनः सामान्य जीवन जीने लगता है। इस मंत्र को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। यदि एक बार में आराम न हो तो कुछ दिन नित्य इस प्रयोग को करना चाहिए।

भूतादि भय निवारक मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जंभय जंभय अंधय बधिरय बधिरय मूकवत् कारय कारय कुरू कुरू ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

जिस समय शत्रु आक्रमण करने आए तो मुट्ठी बंद करके इस मंत्र का एक सौ आठ बार जप करें। अब जैसे ही मुट्ठी शत्रु के सामने खोलेंगे तो वह स्वयं परास्त

हो जाएगा। किसी को भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो तो मुट्ठी बंद करके इस मंत्र का एक सौ आठ बार उच्चारण करें व झाड़ें, तो उपद्रव शांत हो जाएगा। यदि ईशानकोण की तरफ मुंह करके आधी रात के समय, आठ रात्रि तक इस मंत्र की साधना करें, धूप-दीप दें और मंत्र का ग्यारह सौ की संख्या में जप करें तो व्यंतर देव का उपद्रव शांत हो जाएगा।

भूत से मुक्ति का मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च मम वांछितं पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

पीले वस्त्र, पीला आसन और पीली माला का प्रयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर मंत्र जप करना आरंभ करें। ग्यारह हजार जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। भूतादि बाधा के समय इस सिद्ध मंत्र की एक माला फेरने से संकट टल जाएगा। यानी प्रेतबाधा हट जाएगी।

चुड़ैल बाधा शमन का मंत्र

वैर वर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी मांसी॥

इस मंत्र को दीपावली, होली, दशहरा अथवा ग्रहण के समय ग्यारह हजार बार जपकर सिद्ध कर लें और आवश्यकता पड़ने पर मंत्र को पढ़कर रोगी पर फूंक मारें। यह क्रिया तब तक करें, जब तक कि रोगी स्त्री या पुरुष चुड़ैल बाधा से पूरी तरह मुक्त न हो जाए।

प्रेतादि निवारक मंत्र

तह कुष्ठ इलाही का बान, कुडुम की पत्ती चिरावत भाग अमुक अंग से, भूत मारूं धुनवान कृष्णवर पूत आज्ञा कामरू कामाक्षा माई की, हाड़ि दासी चंडी की दुहाई।

इस मंत्र को तीन बार पढ़कर, एक मुट्ठी धूल को अभिमंत्रित कर रोगी को मारें और थोड़ी धूल चारों ओर दिशाओं में फेंक दें। इससे प्रेतादि के प्रकोप का कोई डर नहीं रहता, क्योंकि इस प्रयोग से प्रेतादि की छाया का निवारण हो जाता है। मंत्र में अमुक के स्थान पर रोगी का नाम बोलें और होली की रात्रि में पहले दस हजार जप करके मंत्र को सिद्ध अवश्य कर लें।

भूत झाड़ने का चमत्कारी मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का मंत्र सांचा। कण्ठ काचा, दुहाई हनुमान वीर की जाने लंका जारी, पलका मंझारी आन लक्ष्मण वीर की जाने माने जाके

तीर की, दुहाई मेंमना पीर की, बादशाह जादा काम में रहे आमाद दुहाई कालिका माई की, धौला गिरवारी चढ़े सिंह की सवारी जाके लांगर है अगारी प्याला पिये रक्त की, चंडिका भवानी वेद पानी में बखानो, भूत नाचे, बेताल लज्जा रखे, अपने भक्त की काली महर काली आ कलकत्ते वारीं हाथ कंचन की थारी लिए ठाढ़ी भक्त बालिका दुष्टन प्रहारी सदा संतन हितकारी, उत्तर करै भक्त की सहाई आ तू अपने में माई तेरी जोति रही जाग के, पकड़ के पछाड़ भात कर मत अवार, तेरे हाथ से कृपाण भक्षण कर ले जल्दी आय जाय, नहीं भूत पकड़ मारे जायं, जूत उतर उतर तोय राम की दुहाई गुरु फूरौ गोरख का फंदा करेगा तोय अंधा, फुरौ फुरौ मंत्र स्वाहा।

इस मंत्र का जप करते हुए भूतबाधा से ग्रस्त व्यक्ति का इकतीस बार झाड़ा करें तो भूत से छुटकारा हो जाता है। यदि भूत सशक्त और आसानी से न जा रहा हो तो इस प्रयोग को लगातार ग्यारह दिन करना चाहिए।

भूत ज्वर नाशक मंत्र

कई बार चौराहों पर फल, फूल, लड्डू, वस्त्र, नीबू, लौंग और जायफल आदि रखे दिखाई पड़ जाते हैं। ये वस्तुएं उसारा करके रखी जाती हैं। इनका प्रभाव बहुत शक्तिशाली होता है। इस सामग्री को लांघने वाला अथवा पैरों आदि से स्पर्श करने वाला व्यक्ति तुरंत रोगग्रस्त हो जाता है। वह वायव्य आत्माओं का शिकार बन जाता है और किसी-किसी को तो इसके कारण ज्वर चढ़ आता है, जो किसी औषधि से नहीं जाता। इसी को भूत ज्वर कहते हैं। निम्नलिखित शाबर मंत्र इस ज्वर से छुटकारे का अच्छा उपाय माना जाता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो कामरू देश की कामाख्या देवी, जहां बसै इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी की तीन पुत्रियां, एक तोड़े, एक पिछौड़े, एक शीत ज्वर गोड़ै।

इस मंत्र से रोगी को इक्कीस बार झाड़ा लगाएं। तीन दिन यह क्रिया करें और फिर उसके ऊपर से मुर्गी का एक उबला हुआ अंडा उसार कर चौराहे पर रखवा दें। इससे उसे भूत ज्वर से मुक्ति मिल जाएगी।

भीषण भूत ज्वर निवृत्ति का मंत्र

यदि भूत ज्वर उपरोक्त मंत्र के प्रयोग से न उतरे तो निम्नलिखित मंत्र के प्रयोग से अवश्य ही उसकी निवृत्ति हो जाती है।

मंत्र इस प्रकार है—

दोऊ भाई ज्वर सुरा महावीर नाम।

दिन रात्रि खटि मरे महादेव के ठाम॥
फूर छुदसे छित्तस रूप मुहूर्त मों धराय।
नाराज नामूक के घर दुआर फिराय॥
ज्वाला ज्वरपाला ज्वर काला ज्वर विश्राकि।
दाह ज्वर उमा ज्वर भूषा ज्वर बूवकि॥
घोड़ा ज्वर भूता तिजारी और चौथैया।
सवन को भंग घोटन शिव ने बुझैया॥
यह ज्वर ज्वर सुरा तूं कौन तकाव।
शीघ्र (अमुक) अंग छोड़ तुम जात॥
यदि अंगन में तू भूलि भटकाय।
तो महादेव के लागा तूं खाये॥
आदेश कामरू कामाख्या माई।
आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई॥

इस मंत्र के जप से हर प्रकार का भूत ज्वर शांत हो जाता है। रोगी का मुख उत्तर की ओर होना चाहिए। इक्कीस बार मंत्र का जप करके झाड़ा लगाएं। भूत ज्वर से निवृत्ति हो जाएगी।

मेथी द्वारा भूत निवारण

भूत सबका भाई काहे आनन्द अपार। जिनको गुमान से 'अमुक' को मार॥

हमरे संई को पऊं करो सलाम हजार। आते होय भूत आवेश किनार॥

जितनी मेथी छोड़ बड़े और आनि से अंत। तस के धूम्र गंध ते मल में भूत भसम॥

'अमुक' अंग भूत नहीं यह मेथी के लाय। उठि के आगे रत क्षण में जाय पराय॥

देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई॥

थोड़ी-सी सूखी मेथी हाथ में लेकर रोगी को अपने सामने बैठाएं। फिर मंत्र को सात बार पढ़ें और मंत्र में 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम बोलें। इसके बाद मेथी को रोगी के शरीर से स्पर्श कराकर एक झटके से उसे अग्नि में डाल दें। इससे भूतबाधा का निवारण हो जाएगा।

सरसों द्वारा भूत निवारण

ऐं सरसों पीला सफेद और काला। तू चलना-फिरना भाई सा चला॥
तोहर बाण से गगन फट जाए। ईश्वर महादेव के जटा कटाय॥

डाकिनी योगिनी व भूत पिशाच। काला पीला श्वेत सुसांच॥
सब मार काट धरूं खेत खरिहान। तेरे नजर से भागे भूत ले जान॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ी दासी की दोहाई।

इस मंत्र से सूखी सरसों को इक्कीस बार पढ़कर रोगी को सरसों के दाने मारें और थोड़े दाने अग्नि में भी डाल दें। इससे भूत-प्रेत बाधा शांत हो जाएगी।

हल्दी द्वारा भूत निवारण

हल्दी बाण बाण की लिया हाथ उठाये। हल्दी बाण से नील गिरी पहाड़ थर्राये॥

यह सब देख बोलत वीर हनुमान। डाइय योगिनी भूत प्रेत मुण्ड काटो तान॥

आज्ञा कामरू कामाख्या माई। आज्ञा हाडि दासी की चण्डी की दोहाई।

एक साबुत हल्दी की गांठ लेकर उसे तेरह बार उपर्युक्त मंत्र से अभिमंत्रित करें। फिर तेरह ही बार रोगी के सिर से पैर तक उसार कर अग्नि में छोड़ दें। इस मंत्र के प्रयोग से भी भूत-प्रेत का निवारण हो जाता है।

किया कराया उतारने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को ऊपर केश विकट भेष खम्भ प्रति प्रह्लाद राखै पाताल राखे पांव देवी जंघा राखे कालिका मस्तक रखे महादेवजी कोई या पिण्ड प्रान को छोड़े छेड़े तो देव दाना भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी गाड ताप तिजारी जूड़ी एक पहरूं दो पहरुं सांझ को संवारा को कीया को कराया को उलटा वाही के पिण्ड पर पड़े, दस पिण्ड की रक्षा श्री नृसिंह जी करें, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पहले इस मंत्र का एक हजार आठ बार जप करके मंत्र को सिद्ध करें। फिर जब कोई रोगी आए तो उसे सामने बैठाकर और मंत्र को सात बार पढ़कर रोगी को झाड़ा दें। इससे उस पर जो कुछ भी किया कराया होगा, नष्ट हो जाएगा।

तांत्रिक कर्म निवारण का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को बजरी बजरी वज्र किंवा बज्री पै बांधो दशों द्वार को घाले यात उलट वेदवाही कों खात पहली चौकी भैंरू की चौथी चौकी रोम रोम की रक्षा करने कों श्री नृसिंह देव आया, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का शनिवार से प्रारंभ कर इक्कीस दिन तक जप करें। इस समय में घृत का दीपक जलाए रखें और पुष्प, मिष्ठान व गूगल से आहुति देकर हवन करें।

इस प्रकार मंत्र सिद्ध हो जाएगा। अब जिस व्यक्ति पर तांत्रिक कर्म किया गया है, उसे सामने बैठाएं और थोड़े जल को मंत्र के सात जप से अभिमंत्रित कर रोगी को पिला दें तथा थोड़ा उसके शरीर पर भी छिड़क दें। इस कृत्य से तांत्रिक कर्म का निवारण हो जाएगा।

भूत बुलाने और नष्ट करने का मंत्र

यदि किसी पर भूत सवार हो गया हो तो पहले निम्न मंत्र को पढ़ें—

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल तरवाइ संद्रंष्ट्र कराल वक्ताय त्रिनैन भूषिताद धग धग तपश्टंग ललाट नेत्राय तीव्र को पान लाय मिते तजपात शूल खड़ांग डमरूक धनुर्बाणा मुद्रर भूपदंड त्रास मुद्रा वेगदश दौर दण्ड मंडि तायकपिल जटाजूट कूटार्द्ध चंद्र धारणे भस्मराग रंजित विगहाथ उग्र फणपति घटाटोप मंडित कण्ठ देशाय जय जय भूत डामरस आतम रूपम् दर्शे दर्शे सर सर चलसाशोन बंध बंध हुंकारेन त्रासय त्रासय वज्र दंडेन हन हन निशितिखडेन छिद छिद शूला ग्रेण भिंध मुद्‌गरेण चूर्णय चूर्णय सर्वग्रहाणां आवेशय आवेशय।

इस मंत्र को पढ़कर गाय के घृत में गूगल, नीम की पत्ती और सांप की केंचुली मिलाकर, उस पर कपूर डालकर जलाएं और उड़द के दाने उस पर से घुमाकर रोगी को मारें। इससे व्यक्ति पर सवार भूत बोलने लगेगा। तब शीघ्रता से निम्न मंत्र को पढ़ें—

ॐ नमो आदेश गुरु को नारी जाया नारसिंह अंजनी जाया हनुमंत वाने जारी बीज भवंताबा तोड़ी कढ़लंक तेरी पाखरी कोन भरे नाहरसिंह बलवंत बन में फिरे अकेलड़ा भंवर खिलाये के खरा माटी मर्द की पीवे बारा बकरा खाय न धापे तोतू नाहरसिंह दौड़ि मसाण जाय सात पांच ने मारि खाय सात पांच ने चरब खाय देखूं नाहरसिंह बीर तेरे मंत्र की शक्ति हाड़ हाड़ में सूं चाम चाम में सूं नख नख में सूं रोम रोम में सूं अमुकी के नौ नारी बहत्तर कोठा में सूं पेद का पकड़ आन हाजिर ना करे तो माता नाहरी का चूंखा दूध हराम करे राजा रामचंद्र की पीढ़ी फाट भंपड़े शब्द सांचा पिण्ड काचा।

इस मंत्र को पढ़कर दो लौंग रोगी के ऊपर से उसारकर कपूर में जलाएं। फिर एक नीबू उस पर से उसारकर चाकू से दो टुकड़े में काट दें। तदनंतर रोगी को दो-तीन काली मिर्च खाने को दें। फिर दो लौंगों पर यही मंत्र पढ़कर कपड़े में कर उसके बाजू से बांध दें। इस क्रिया से उस पर सवार भूत नष्ट हो जाएगा।

मूठ रोकने का मंत्र

यदि ओझा या तांत्रिक ने किसी पर मूठ चलाई (भेजी) हो तो उसे रोकने के लिए निम्नलिखित मंत्र का जप करें—

ॐ नमो आदेश गुरु को चण्ड़ी चड़ी तो ऊपर आवत मूठ करे नवखण्डी चकर ऊपर चकर धरूं चार चकर ले कहा करूं श्री नृसिंह का मुंह आगे धरूं मदमांस की करूं अग्यारी माकों चाचि मेरे साथ काकों चाचि तौ मूंठ फिराऊं तीन सौ साठ मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मूठ जिस पर चलाई जाती है, उसका बचना नामुमकिन होता है, इसलिए उसे बीच में ही रोकना अच्छा होता है। जब उपर्युक्त मंत्र के प्रभाव से मूठ रुक जाए तो बकरे की कलेजी और शराब का भोग देकर कहें कि जिसने भी मूठ चलाई है, उसी के पास वापस चली जा, उसी को जाकर मार। अपना भोग लेकर मूठ वापस लौट जाएगी।

परियों का खलल दूर करने का मंत्र

ॐ मह कूब कुवमह विमलमह बड़ी नदी में चार देव कौण कौण अहंकार महंकार मुहम्मदा वीर ताइया सिलार बजाऊं खाजे मुअय्युद्दीन तुम्हारी खुशवोई में चढ़ी कमाण सुलैमान परी लंक परी को हुक्म कीजे कौन कौन परी स्यह परी सबज परी हूर परी अर्श कुर्स की लाउली बीबी फातमा कीली झीली आयना पाना फल आय लेना सवा सेर शर्बत का प्याला आय ले आय हाजिर होना मीर मुहीयुद्दीन मखदूम जहानी या शेख सरफ अहिया पठाण आय हाजिर न हो तो रोज कयामत के दामन गीर हूगां।

जो व्यक्ति परियों के फेर में पड़ गया हो, उसे परियों के चंगुल से छुटकारा दिलाने के लिए आटे का एक चौमुखा दीपक बनाएं, आठ पान के बीड़े और मिट्टी के एक कच्चे प्याले में चीनी का शर्बत लेकर रोगी सहित किसी चौराहे पर जाएं। संध्या ढले का समय इसके लिए उपयुक्त रहता है। रोगी को चौराहे के बीच बैठाएं। चौमुखा तेल का दीपक जलाएं। फिर पान के बीड़े और शर्बत का प्याला हाथ में लेकर उपर्युक्त मंत्र को पढ़ते हुए सब रोगी के ऊपर से तीन बार उसारकर, जलते हुए दीपक के समीप रखें और रोगी के साथ लौट आएं। चाहे जैसी परिचित आवाजें आएं, लेकिन एक बार भी पलट कर न देखें। घर लौटकर मुंह-हाथ धो लें। एक बार की इस क्रिया से ही रोगी परियों के चंगुल से छूट जाएगा।

ऊपरी हवा निवारक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को लोना चमारी जगत की बीजुरी मोती हेल चमके अमुके के पिण्ड में ज्यान करे बिज्यान करे तो उस लंड़ी के ऊपर पारो दुहाई तल सुलेमान पैगम्बर की मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यदि किसी बच्चे या बड़े को ऊपरी हवा परेशान कर रही हो तो रोगी को

सामने बैठाकर उपर्युक्त मंत्र का तीन बार जप करके मोर पंख से सात बार झाड़ दें। ऊपरी हवा का प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

जिन्नादि प्रभाव निवृत्ति का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को हनुमंत वीर वीरन के वीर तिहारे तरकस में नौलख तीर क्षण बायें क्षण दाहिने कबहूं आमें होय धनी गुसांई सबता अमुक की काया भंग न होय इंद्रासन दो लोक में बाहर देखे मसान हमारी या अमुकी की देही छल छिद्र व्यापै तो जती हनुमंत की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

जिन्नादि की छाया से ग्रस्त व्यक्ति को स्वस्थ करने के निमित्त इस मंत्र को पढ़ें और अमुक की जगह रोगी पुरुष का तथा अमुकी की जगह रोगी स्त्री का नाम बोलें। एक बार पूरा मंत्र पढ़ जाएं। फिर मंत्र पढ़ते हुए रोगी स्त्री या पुरुष को सात बार झाड़ा दें तथा पीपल के एक पत्ते पर मंत्र लिखकर वह पत्ता उसके गले में लटका दें। दो-तीन बार के प्रयोग से ही रोगी स्वस्थ हो जाएगा।

कामण दोष जानने का मंत्र

ॐ नमो दुग्ध दुग्ध धवलेश्वरी आदि मूल परमेश्वरी तोहि देखि बालक कम्पै तख्त बैठा राजा कम्पै न रन को करे जा कम्पै आप चक्र फेरि पर चक्र स्थिर रक्ष रक्ष गोरखनाथ डाकिनी शाकिनी कुलदेव का मणा दे प्रगास आइ इह हंसे प्रकाश दे स्वाहा।

सोलह तेल के दीपक रखें। फिर सोलह छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर क्रमशः डाकिणी, शाकिनी, भूतनी, प्रेतनी, जड़ली, अऊत, पितल, नाहरसिंह, कामण, कुलदेवी, जलदेवी, क्षेत्रपाल, काली, क्षेत्रपाली, कर्म रोग, शीत दोष, मुण्डी ये सोलह नाम लिखें। जब एकेक दीपक के नीचे एकेक कागज का टुकड़ा रखें और फिर सारे दीपक जला दें।

जब सारे दीपक जल जाएं तो उन पर एक कूंडा उलटा रखें और फिर उपर्युक्क्त मंत्र को पढ़कर सोलह बार उड़द कूंडे पर मारें। अब कूंडा हटाकर देखें, जिस कामण का दोष होगा, उसका दीपक जलता रहेगा और बाकी सब बुझे मिलेंगे। इस प्रकार यह ज्ञात हो जाएगा कि किस कामण का दोष है।

कामण दोष निवारण का मंत्र

जब यह पता चल जाए कि किस कामण का दोष है तो उसकी निवृत्ति का उपाय करें। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ वज्र में कोटा वज्र में ताला वज्रा में बंध्या दसों द्वारा जहां सूं आयौ

जहां ही जाय जाने भेजा जाहि कूं खाय चटपंटति असधान खखिति: तत्र इस पिण्ड की मूठी टोणा चामण बीर बेताल ज्ञान परिज्ञान से इस पिण्ड कूं कुछ करें तो ईश्वर महादेव की आज्ञा फुरै श्री गोरखनाथ की आज्ञा फुरै।

सर्वप्रथम पीपल वृक्ष के इक्कीस पत्ते, इक्कीस कुओं (या नल) का पानी, सड़कें तिराहे की मिट्टी, थोड़ा-सा कच्ची घानी का तेल और मिट्टी का एक घड़ा आदि मंगाकर रखें। घड़े में कुओं अथवा नल का पानी भरें और वृक्ष के पत्तों को धागे द्वारा घड़े के गले में बांध दें। फिर उस घड़े पर सकोरी रखकर, उसमें थोड़ा-सा गेहूं का आटा डालें और आटे पर तेल का दीपक जलाकर रख दें। यह क्रिया रात में करें। एक दाने में पंचमेल मिठाई भी रखें। अब रोगी को सामने बैठाकर मंत्र का जाप आरंभ करें। जब मंत्र के इक्कीस जप पूरे हो जाएं तो घड़ा और मिठाई रोगी के ऊपर से उसारकर चौराहे पर रखवा दें। इस क्रिया से रोगी कामण दोष से मुक्त हो जाएगा। ❑❑

18

अचूक प्रयोग शाबर मंत्रों के

यह बात हम पहले भी बता आए हैं कि हम छोटे-बड़े शारीरिक कष्टों से लेकर दैविक और भौतिक बाधाओं से भी आक्रांत होते रहते हैं। ऐसी किसी भी प्रकार की बाधा और समस्या का निवारण शाबर मंत्रों के द्वारा संभव है। इनमें सरलता की एक बात यह है कि कोई भी व्यक्ति कभी भी, कहीं भी और किसी भी स्थिति में तथा किसी भी उद्देश्य के निमित्त शाबर मंत्रों का प्रयोग कर लाभ उठा सकता है। शाबर मंत्रों के प्रयोग अत्यंत प्रभावशाली और अचूक होते हैं। यद्यपि यह भी एक सच्चाई है कि जो लोग इन शाबर मंत्रों पर संदेह करते हैं, उन्हें यह कभी लाभ नहीं पहुंचाते। अतः इनका प्रयोग करते समय इन पर विश्वास अवश्य बनाए रखिए।

देहपीड़ा नाशक मंत्र

ज्वर, थकान, सर्दी आदि कारणों से व्यक्ति के शरीर में यदि अत्यधिक पीड़ा हो रही हो तो निम्नलिखित शाबर मंत्र से वह पीड़ा शीघ्र दूर की जा सकती है।

मंत्र इस प्रकार है—

उस पार से आती बुढ़िया छुतारी तिसकै कांधे पै सरके पिटारी कौन कौन शर वाण सु शर कु पौरा शर समान 'अमुक' के अंग की कथा तनपीर लौटि गिरै उनके कलेजे तीर, आज्ञा पिता ईश्वर महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का प्रयोग रोगी को सामने बैठाकर किया जाता है। पहले एक कटोरी में थोड़ा-सा सेंधा नमक लेकर पास में रखें। फिर मंत्र को सात बार पढ़कर अनामिका उंगली को नमक की डली पर फिराएं। सात बार मंत्र पढ़ें और सात बार यह क्रिया करें। इसके पश्चात वह नमक रोगी को खिला दें। इससे उसकी देहपीड़ दूर हो जाएगी।

विजय प्राप्ति का मंत्र

हाथ में बसें हनुमान भैरों बसे लिलार जो हनुमंत को टीका करे मोहे जग संसार जो आवे छाती पांव धरे बजरंग वीर रक्षा करें मुहम्मदा वीर छाती तोर जुगुनियां वीर सिर फोर उगुनिया वीर मार मार भास्वंत करे भैरों वीर की आन फिरती रहे बजरंग वीर रक्षा करे जो हमारे ऊपर घात डाले तो पलट हनुमासन वीर उसी को मारे जल बांधे थल बांधे आर्या आसमान बांधे कुदवा और कलवा बांधे चक चक्की आसमान बांधे वाचा साबि साहिब के पूत धर्म के नाती आसरा तुम्हारा है।

इकतीस हजार जप करने से इस मंत्र की सिद्धि हो जाती है। जीवन या समाज के किसी भी क्षेत्र में शत्रु-विरोधी, निंदक, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्वी को परास्त करके साधक को विजय प्रदान करने में यह शाबर मंत्र अमोघ है। आवश्यकता के समय मंत्र का एक सौ की संख्या में जप किया जाना चाहिए।

संदिग्ध कार्य में सफलता का मंत्र

तद्स्मिन कार्य निर्योगे वींरेवं दुरति क्रम किं पश्यसि समाधानं त्वं हि कार्य चिदांवर।

यदि किसी कार्य के प्रति मन में संदेह हो कि वह पूरा नहीं हो सकेगा तो उपर्युक्त मंत्र का जप इक्कीस की संख्या में करके कार्य में लग जाएं, वह कार्य अवश्य ही पूरा होगा।

उत्तम वर प्राप्ति का मंत्र

हे गौरि शंकरार्धांग्नि यथा त्वं शंकर प्रिया तथा मां कुरु कल्याणि कांतकांता सुदुर्लभम्।

जिस कन्या का विवाह न हो पा रहा है, वह अपने सामने भगवती गौरी का चित्र स्थापित कर ले। पंचोपचार से चित्र की पूजा करे और उपर्युक्त मंत्र को पांच बार जपे। यह क्रिया इक्कीस या इकतीस दिन करने से उत्तम वर की प्राप्ति होती है।

वैवाहिक बाधा निवारक मंत्र

ॐ गौरि आवै शिवजि व्यावै अमुक को विवाहि तुरंत सिद्ध करे, देर न करे, जो देर होय तो शिव त्रिशूल पड़े।

यदि किसी कारण से लड़के या लड़की का विवाह न हो रहा हो तो उनका पिता होली के दिन मिट्टी की एक छोटी-सी हांड़ी लाए और संध्या ढले उसमें बिल्ली की जेर (नाल), सात साबुत सूखी लाल मिर्चे और सात नमक की डाले और फिर हांड़ी का मुंह लाल लाल कपड़े से ढांप कर बांध दे। यदि प्रयोग लड़की के लिए किया जा रहा है तो हांड़ी पर सात कुंकुम की बिंदिया लगाए और यदि

लड़के के लिए किया जाना है तो रौली के टीके लगाए। तदनंतर उपर्युक्त मंत्र का जप एक घंटे तक करे। मंत्र में अमुक के स्थान पर लड़के या लड़की का नाम बोलें। जब एक घंटे का जप पूरा हो जाए तो उस हांड़ी को चुपचाप किसी चौराहे पर रख आए। इस कृत्य से विवाह से संबंधित बाधाएं दूर हो जाती हैं तथा लड़के या लड़की के विवाह की संभावनाएं प्रबल बन जाती हैं।

टूटा संबंध पुनः बनाने का मंत्र

मखनो हाथी जर्द अम्बारी
उस पर बैठी कमाल खां की सवारी
कमाल खां कमाल खां मुगल पठान
बैठे चबूतरे पढ़े कुरान
हजार काम दुनिया के करे
एक काम मेरा कर
ना करे तो तीन लाख
तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

जिस लड़की का विवाह न हो पा रहा है या संबंध टूट गया है, वह उपर्युक्त मंत्र का पांच माला जप नित्य इक्कीस दिनों तक करे। इक्कीस दिनों का चयन वह इस प्रकार करे कि बीच में महीना होने की कोई समस्या सामने न आए। इससे टूटा संबंध पुनः बन जाता है।

शीघ्र विवाहकारक मंत्र

तब जनक पाई वशिष्ठ आयसु ब्याह लाज संवारि कै।
माण्डवी, श्रुतकीर्ति, उर्मिला कुंअरि लई हंकारि कै॥

जिस कन्या के विवाह में देरी हो रही हो, वह हल्दी की सात गांठें पीले कपड़े में लपेटकर धारण करे तथा उपर्युक्त मंत्र का एक हजार आठ जप करे तो विवाह की समस्या शीघ्र हल हो जाती है तथा विवाह शीघ्र हो जाता है।

संक्रामक ज्वर नाशक मंत्र

ॐ नमो अप्रति चक्रे महाबले महावीर्ये अप्रतिहत्त शासने ज्वाला मालोद्वांत चक्रेश्वरे ए ह्वे हि चक्रेश्वरि भगवति कुल कुल प्रविश प्रविश ह्रीं आविश आविश ह्रीं हन हन महाभूत ज्वारार्ति नाशिनि एकाहिक द्वाहिक त्राहिक चातुर्थिक ब्रह्मराक्षस ताल अपस्मार उन्माद ग्रहान् अपहर ह्रीं शिरो मुंच मुंच ललाटं मुंच मुंच भुंज मुंच मुंच उदर मुंच मुंच नाभि मुंच मुंच कटि मुंच मुंच जंघां मुंच मुंच भूर्मि गच्छ मुंच हूं फट् स्वाहा।

संक्रामक (मलैरिया) ज्वर के रोगी के सिरहाने बैठकर इस मंत्र का ग्यारह माला जप उस समय तक करें, जब तक कि रोगी इस ज्वर से मुक्त न हो जाए। इस मंत्र का जप कोई भी कर सकता है।

भगंदर रोग निवारण का मंत्र

ॐ काका करता क्रोरी करता ॐ करता से होय, यरसना दश हंस प्रकटे खूनी गुदा न होय, मंत्र जानके न बतावे द्वादश ब्रह्महत्या का दोष होय, लाख जप करे तो उसके वश में न होय, शब्द सांचा पिण्ड काचा तो हनुमान का मंत्र सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी भी रविवार या मंगलवार के दिन से उपर्युक्त शाबर मंत्र का जप आरंभ करें। एक लाख जप हो जाने पर मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद आवश्यकता के समय सात बार यही मंत्र पढ़कर थोड़ा-सा जल अभिमंत्रित करके रोगी को पिला दें। यदि यह जल भगंदर, गुदाभ्रंश एवं बवासीर का रोगी शौच कर्म में प्रयोग करे तो वह शीघ्र रोगमुक्त हो जाता है।

बहती नाक रोकने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का
चार आटी, चार घाटी
नीख नीख है चौरासी
घाटी बहै नीर भीजै चीर
नाथ नाक थमि हो
श्रीनरसिंह वीर नाथ न थमे तो
माता अंजनि का पिया दूध हराम करे
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

थोड़ी-सी साफ रुई लेकर इस मंत्र का जप करते हुए सात बार फूंकें तथा सर्दी से पीड़ित रोगी की नाक में लगाएं तो उसकी बहती हुई नाक रुक जाएगी।

स्मरणशक्ति बढ़ाने का मंत्र

ॐ नमो देवि कामाख्या त्रिशूल खड्ग हस्त पाधा पाती गरुड़ सर्व लखी तू प्रातये समांगन तत्व चिंतामणि नरसिंह चल चल क्षीन कोटि कात्यायनि तालाब प्रसादक्षे ॐ हों ह्रीं क्रूं त्रिभुवन चालिया चालिया स्वाहा।

प्रात: के समय स्नान के पश्चात तुलसी को जल चढ़ाकर उसके ग्यारह पत्ते

तोड़ लें और इस मंत्र का जप करते हुए खा लिया करें। यह प्रयोग कुछ दिन नित्य करने से स्मरणशक्ति की वृद्धि हो जाती है।

तिल्ली पीड़ा से निवृत्ति का मंत्र

ॐ नमो हुताश परवत जहां पर सुरह गाय
सुरह गाय के पेट मा तिल्ली दबा दबा तिल्ली कटे
सरकण्डा बड़े फीया कटे फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

चाकू लेकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी के समक्ष भूमि पर आठ रेखाएं खींचें और उन्हें काट दें। इस उपाय से तिल्ली से पीड़ित व्यक्ति कष्ट से मुक्त हो जाएगा।

इच्छित व्यक्ति को वश में करने का मंत्र

ॐ श्री सीर सिंदुर कन्या कुंवारी मन पियारी, चौंसठ जोगिणी मोड़े अगास अस्त्री पुर्य मिलाए संगा। कालो गंगा से तो पाट छोडि दे। गोरी मैति सौरासी वाट चली आ गोरी। हमारी वाट तीहि जन लागो। दोसरी जगा की माया औ चाट चलाई 'अमुक' बोलाई आंकुड़ी। जैसी रीडति आकूल जैसी धलकंतिः स्वाय। जैसे बलकंति आ, पौन जैसी सरकंति आ। जोहि मोहि मेरा पिण्ड पैतला भया सरा। नकरि न आवे तो हणुमंता वीर तेरी आण पड़े। जैसे काम त्वीले रामचंद्र को सुदारो, तैशो काम मेरा नि सुदरो, तो माता अंजनी चली हात लावै। सवा सेर का रोटा न पावै। राजा रामचंद्र को आरुणन नि पावै। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार को रात्रि में एक पटरे पर काला कपड़ा बिछाकर उस पर जलता हुआ एक दीपक रखें। धूप-अगरबत्ती भी जला लें। फिर उत्तराभिमुख आसन पर बैठकर मूंगे की माला से उपर्युक्त मंत्र का एक सौ आठ जप करें। अमुक के स्थान पर इच्छित व्यक्ति का नाम बोलें। इस प्रयोग से इच्छित व्यक्ति वश में हो जाता है।

अनुकूल करने का मंत्र

कालू कालू बाबा जपैं, भैरों जपै मसान। देवी करै अंधेरी रात। चौंसठ जोगनी, बावन भैरों, लोहे का लाट, बज्जर का केला। जहां पहुंचाऊं, वहां जाय खेला। एक बाण मस्तक मारूं, दूजा बाण छाती, तीजा बाण कलेजा मारूं। जबान को खींच ले, हंसे को निकाल दें। काल भैरो! कपाल फलां...पर जा बैठ, फलां...की छाती छप्पर खाए। मसान में लोटे, फलां.. को मार के फौरन आओ। अगर तूने मेरा यह काम नहीं किया तो अपनी मां पिया दूध हराम करे। सत्य नाम आदेश गुरु को, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का

वचन सांचा। मेरे गुरु का वचन चूके तो लोना चमारी के गंदे नरक कुण्ड में गले-सड़े।

एक बेदाग कागजी नीबू तथा ग्यारह साबुत फूलदार लौंग लेकर इन्हें कुंकुम और कामिया सिंदूर से रंगकर, उन लौंगों को नीबू में चारों ओर घुसेड़ दें। फिर उपरोक्त मंत्र को एक सौ नौ बार जपें (मंत्र में फलां के बाद उसका नाम बोलें, जिसे अनुकूल करना है) और फिर उस नीबू को किसी वीराने में जाकर गाड़ दें। वह व्यक्ति आपके वश में हो जाएगा और आपके अनुकूल कार्य करने को प्रेरित होगा।

वशीकरण मंत्र प्रयोग

गेले के रस्तान मोय, कुर्वे की पणियारी मोय। हटा बैठया बणियां मोय, घर बैठी बणियाणी मोय, राजा की रजवाड़ मोय, महलां बैठी राणी मोय। डकणी को, सकणी को, भूतणी को, पलीतणी को, ओपरी को, पराई को, लाग कूं, धूम कूं, धकमा कूं। अलीया को, पलीया को, चौड़ को, चौगट को, काचा को, कलवा को, भूत को, पलीत को, जिन्न को, राक्षस को, बैरियां से बरी कर दे। नजरां जड़ दे ताला 'अमुक' को वश में करे, दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

रुई की तीखे नैन-नक्श वाली एक गुड़िया बनाकर (या किसी से बनवाकर), उसके स्तनों के स्थान पर दो फूल वाली अखंडित लौंग लगा दें। नाक में पीला जिरकान चिपका दें। इसके बाद उपर्युक्त मंत्र का तीन माला जप करें। मंत्र में अमुक के स्थान पर अभीष्ट स्त्री या पुरुष का नाम बोलें। यह प्रयोग इकतीस दिनों तक करने से जिसका नाम मंत्र में बोला जाएगा, उसका वशीकरण हो जाएगा।

राशि उड़ाने का मंत्र

ॐ हुंकालूं चौंसठ जोगिनी बावन वीर कार्तिक अर्जुन बीर बुलाऊं आगे चौंसठ वीर जल बंध बल बंध आकाश बंध पौन बंध दीन देश की दिशा बंध, उतरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तिक वीर्य असमान भो बावन वीर गाजें नीचे तो चौंसठ जोगिनी विराजें परितो पासि चल्यावें छपन्या भैंरू राशि उड़ावें, एक बंध आसमान में दूजा बंध राशि घर में ल्याया, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम उपदेश गुरु का।

दीपावली की रात्रि में निर्जन जंगल में जाकर सुस्सा की मेंगनी ढूंढ़कर लाएं और उसे इस मंत्र से इक्कीस बार अभिमंत्रित करके जिसके घर में डाल देंगे, उस घर की सब राशि चली जाएगी। यह प्रयोग तभी करना चाहिए, जब किसी ने धन के बल पर आपको बहुत परेशान किया हुआ हो।

व्यक्ति को बांधने का मंत्र

ॐ काली काली महाकाली ब्रह्मा की बेटी इंद्र की साली, खावे पान बजावे ताली जा बैठी पीपल की डाली, बांध बांध 'अमुक' को बांध परिवार समेत बांध, ना बांधे तो तुझे गुरु गोरखनाथ की आन।

पहले होली, दीपावली या ग्रहण के समय उपर्युक्त मंत्र को एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध करें। फिर जब किसी व्यक्ति को बांधना हो तो हाथ में सड़क की थोड़ी-सी मिट्टी लेकर इकतीस बार मंत्र से अभिषिक्त कर, उस मिट्टी को फूंक मार कर उड़ा दें। मंत्र में अमुक के स्थान पर जिस व्यक्ति का नाम पढ़ा जाएगा, उसका बंधन हो जाएगा।

छिपा धन देखने का मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वोषधि प्रणते नमो बिच्चे स्वाहा।

किसी मृत कौवे की जिह्वा को जलाकर और गाय के दूध में अच्छी तरह औटाकर दही जमा दें। फिर उसे बिलोकर व घृत निकालकर आंखों में लगाएं अथवा उसे दीपक में जलाकर उसका काजल पारें। जो व्यक्ति पैरों की तरफ से जन्मा हो, उसके नेत्रों में वह काजल लगाएं। इससे पृथ्वी में गड़ा धन दिखाई दे जाएगा।

लंबी दूरी तय करने का मंत्र

ॐ नमो विचण्डाय हनुमंत वीराय पवन पुत्राय हुं फट्।

वंशलोचन, श्वेत भांगरा और बकरी का दूध—इन सबको पुष्य नक्षत्र में उपर्युक्त मंत्र के एक हजार आठ जप से अभिषिक्त कर लें। फिर उन सबको पीस और मिलाकर मंत्रोच्चारण करते हुए अपने पैरों के तलुवों में लगा लें। जब वह सूख जाए तो चाहे जितनी दूरी तय कर लें, थकेंगे नहीं।

आपदा निवारक मंत्र

शेख फरीद की कामरी और अंधियारी निशि तीनों चीज बराइये आग ओला पानी विष।

मार्ग में सर्प आदि दिखलाई पड़ें या पानी बरसे, ओले पड़ें या आग लगे तो उपर्युक्त मंत्र को तीन बार पढ़कर ताली बजाएं। आप सुरक्षित हो जाएंगे। अर्थात हरेक आपदा का निवारण हो जाएगा।

बाघ भय निवारण का मंत्र

मंत्रा बांधूं वधाई निबांधूं बाघ के सातों बच्चा बांधूं राह बाट मैदान

बांधूं, दुहाई वासुदेव की, दुहाई लोना चमारी की, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सात मंगलवार के दिन इस मंत्र को सात बार जपें और बेधड़क बनादि में जाएं तो वहां बाघ आदि का कोई भय नहीं रहेगा।

देह समस्या निवारक मंत्र

बंध को बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध, कीड़े और मकोड़े का बंध, ताप और तिजारी का बंध, जूड़ी और बुखार का बंध, नजर और गुजर का बंध, दीठ और मूठ का बंध, कीये और कराये का बंध, भेजे और भिजाये का बंध, नावत पर हाथन का बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध, राह और बाटका बंध, जमीन और आसमान का बंध, घर और बाहर का बंध, पवन और पानी का बंध, वांपनि हारी का बंध, लौह कलम का बंध, बंध को बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध।

एड़ी से चोटी तक कच्चा डोरा नापकर सात गांठें लगाएं तथा सवा पाव मिठाई मंगाकर मुर्त्तजा अली के नाम से बच्चों में बांट दें और डोरा लोबान की धूनी से धूपित कर गले में बांध दें और इस समय में मंत्र जपते रहें। देह से संबंधित सभी समस्या का निवारण हो जाएगा। कोई रोग-शोक, आपदा और अभिचार कर्म उस समय तक प्रभावी नहीं होगा, जब तक डोरा गले में बंधा रहेगा।

विष उतारने का मंत्र

गंगा गोरी दोऊ रानी टाकन मारि काड़े विष पाणी गांगा बांटे गौरा खाय अठारा मार विष निर्विष हो जाय, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार को सात बार यह मंत्र पढ़कर किसी चीज से झाड़ दें तो खाया या दिया गया विष का प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

कीड़ा निवारक मंत्र

जा दिन गरते चाली रानी सहस कोटि लपच्यार वोट काली कावली सबै एक उनहार मंदिर माहीं घर करे प्रजा ने बहुत सतावे दुहाई जती की जो हमारी गैल में आवे लंका सो कोट समुद्र-सी खाई जे कीड़ा नगरो रहें तो जती हनुमान वीर की दुहाई। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

घर, बाहर या खेत-खलिहान जहां से भी कीड़े निकलते हों तो काले तिलों पर सात बार मंत्र पढ़कर उस स्थान पर डाल दें। सात दिनों तक यह प्रयोग करें। कीड़े निकलने बंद हो जाएंगे।

पशु का कीड़ा झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो की डारे तू कुंड़ीला लाल पूंछ तेरा मुंह काला मैं तोहे पूछूं कहां ते आया तोड़ मांस तैं सब क्यों खाया अब तू जाय भस्म हो जाय गुरु गोरखनाथ के लागूं पाय शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा।

यदि किसी पशु के खुरों या शरीर में अन्य कहीं कीड़ें पड़ गए हों, तो उपयुक्त मंत्र को पढ़ते हुए नीम की टहनी से सात बार झाड़ा दें। यह प्रयोग तीन से पांच दिन करें।

शत्रु को कष्ट पहुंचाने का मंत्र

ॐ काल भैरूं झंकाल का तीर मार तोड़ दुश्मन की छाति घोट चलै तो खरा जोगिनी का तीर छूटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

यदि शत्रु बहुत ज्यादा परेशान कर रहा है तो कनेर के इक्कीस पुष्प तथा गूगल की इक्कीस गोलियां लेकर एवं प्रत्येक बार के मंत्र जप के साथ एक पुष्प और एक गोली तेल में भिगोकर अग्नि में डाल दें। इस समय में शत्रु का ध्यान करते रहें। ग्यारह दिन अथवा अधिकाधिक इक्कीस दिन के इस प्रयोग से शत्रु स्वयं कष्ट में होकर परेशान करना छोड़ देगा।

पीर हाजिर होने का मंत्र

बिस्मिल्लाह अर्रहमान अर्ररहीम
साह चक्र ती बावड़ी, गले मोतियन का हार
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई
जहां फिरे मोहम्मदा पीर की दुहाई
कौन पीर आगे चले, सुलेमान वीर चले
नादिरशाह वीर चले, मुट्ठी पीर चले
नहीं चले तो हजरत सुलेमान की दुहाई
शब्द सांचा पिण्ड काचा
चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को बृहस्पतिवार (गुरुवार) के दिन से रात्रि के समय बबूल के वृक्ष के नीचे पश्चिमाभिमुख बैठकर इस भांति जपें कि तीस दिन में मंत्र का जप एक लाख की संख्या में पूरा हो जाए। मंत्र जप के काल में या जप की पूर्णता पर मुट्ठी नामक पीर हाजिर हो जाएगा। तब भयभीत न हों और उन्हें खील बताशे अर्पण कर प्रसन्न करें। अब किसी भी प्रयोग के समय मंत्र का पांच बार जप करें और अपना अभीष्ट कहें, पीर की कृपा से आपका हर कार्य पूरा होगा।

शैतान चढ़ाने का मंत्र

अल्प गुरु अल्प रहमान। अमुक की छाती न चढ़ै तो मां बहिन की सेज पै पग धरै। अली की दुहाई। अली की दुहाई। अली की दुहाई।

शुक्रवार की रात्रि को किसी निर्जन स्थान पर पीली मिट्टी का गोल चौका लगाकर एक दीपक रखें, जिसमें तिल का तेल हो। उसमें रुई की बत्ती ऊपर की ओर करके जला दें और स्वयं दक्षिण की तरफ मुंह करके उपर्युक्त मंत्र का जप करें। जो शत्रु है, उसका नाम मंत्र में अमुक की जगह लें। सत्रह हजार मंत्र पूरे होने पर शत्रु के ऊपर शैतान चढ़ जाएगा।

स्त्री की प्राप्ति का मंत्र

ॐ नमो धूलि धूलि विकट चांदनी पर मारूं धूलि, धूली लगे दीवानी घर तजे बाहर तजे ठाड़ा तजे भर्तार दिवानी, एक सठी बलवान तूं नारसिंह वीर अमुक को उठाये लाय, न लाये तो हनुमान वीर की दुहाई। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शनिवार के दिन श्मशान में जाकर किसी स्त्री की चिता की राख ले आएं और इस मंत्र से फूंककर (मंत्र में जिस स्त्री का नाम बोला जाएगा) जैसे ही स्त्री के मस्तक से लगाएंगे या उसके सिर पर डाल देंगे, वही प्राप्त हो जाएगी।

गृह भूतबाधा निवारक मंत्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वस्य नमो ज्योति पतंगाय नमो रुद्राय नमः सिद्धि स्वाहा।

यदि घर में भूत-प्रेत बाधा का निवास हो तो इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातः और सायं अपनी सामर्थ्य भर से अधिक संध्या में जप करते रहने से धर से भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

मुहम्मदा पीर का मंत्र

बिस्मिल्लाहिर्रहेमानिर्रहीम पाय घूंघरा कोट जंजीर जिस पर खेले मुहम्मदा पीर सवा मन का तीर जिस पर खेलता आवे पीर मार मार करता आवे बांध बांध करता आवे डाकिनी को बांध कुवा बावड़ी लाओ सोती को लावो पीसती को लावो पकती को लावो जल्द जावो हजरत हमाम हुसौन की जांघ से निकालकर लावो बीवी फातिमा के दामन सूं खोलकर लावो नहीं ल्यावो तो माता माचूरवा दूध हराम करे, शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को सिद्ध कर लेने से समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती है। मुहम्मदा

पीर का यह मंत्र नौचंदी जुमेरात की शाम में जपना शुरू करके रोजाना दस बार पढ़कर लोबान की धूप दें। इस क्रम को पूरा करते हुए जब इक्कीस जुमेरात पूरे हो जाएं तो इक्कीसवें जुमेरात को ही मुहम्मदा पीर प्रकट हो जाता है। उस समय उससे जो कुछ मांगा जाए और जो आदेश उसे दिया जाए, उसे वह अवश्य पूरा करता है।

क्रोधाग्नि शांत करने का मंत्र

हथेली तो हनुमंत बसै भैरूं बसै कपाल, नाहरसिंह की मोहनी मोहा सब संसार, माहन रे मोहंता बीर सब बीरन में, तेरा सीर सब दृष्टि बांधि दे मोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊं तोहि तेल सिंदूर कहां से आया कैलाश पर्वत से आया, कौन लाया अंजनी का हनुमंत, गौरी का गणेश, कारा गोरा तोतला तीनों बसैं कपाल, बिंदा तेल सिंदूर का दुश्मन गश पाताल, दुहाई कामियां सिंदूर की हमें देखि शीतल हो जाए, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सतनाम आदेश गुरु का।

यदि कोई बड़ा अफसर आदि क्रोधित हो तो रविवार को नृसिंह का विधिवत पूजन करके उपर्युक्त मंत्र का एक सौ इक्कीस बार जप करें। जप के समय में तेल का दीपक जलाए रखें तथा लोबान आदि जलाकर वातावरण को सुगंधमय बनाए रखें। सात रविवार यह क्रिया करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध हो जाने पर एक सौ इक्कीस बार सिंदूर को अभिषिक्त कर, उसका मस्तक पर तिलक कर अफसर के सामने जाएं। अफसर का क्रोध शांत हो जाएगा और वह बड़ी प्रसन्नता के साथ पेश आने लगेगा।

ढाल स्तंभन का मंत्र

ॐ चौंसठ जोगिनी बावन वीर, छप्पन भैंरूं सत्तर पीर, आया बैठ ढाल के तीर, हाली हलै न चाली चलै, बादी बाद शत्रु सों मेले या ढाल ले चले तो जाहर पीर की दुहाई फिरे। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शत्रु ने जिसे ढाल बनाया हो, तो इस मंत्र को एक हजार आठ बार पढ़कर पहले मंत्र को सिद्ध करें। फिर कंकड़ी पर एक सौ आठ बार मंत्र पढ़कर, वह कंकड़ी ढाल पर मारें तो शत्रु की ढाल का स्तंभन हो जाएगा।

नकसीर रोकने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को सार सार महासागर बांधूं सात बार आणी बांधूं तीन बार लोही की सार बांधूं हनुमंत वीर पाके न फूटे तुरंत सूखे शब्द सांचा।

इस मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर फूंक मारने से नाक से रक्त गिरना बंद हो जाता है।

टिड्डी उड़ाने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को आकाश की जोगिनी पाताल का देव आदि शक्ति माई पशिचम देश सों आई गोरखनाथ आकाश को चलाई पश्चिम देश मांझ में कुआ जहां भवानो जन्म तेरा हुआ टिड्डी उपजी स्वर्ग समाई सब टिड्डी गोरख ने बुलाई एक जाइ तांबा वैसी एक जाइ रूपा वैसी वैसी एक जाइ घोई धड़नी बकरा दंत मेंडक दंत सर्प दंत दिदंत अब छोड़ वन को खाव धूल छोड़ आकाश लग जाव खेत कूकड़ों मद्य की धार टिड्डी चली समंदर पार हुंकारे हनुमंत बुलावे भीम जा टिड्डी पैलाका सींव नीचे भैंरूं किलकिले ऊपर हनुमंत गाजे मेरी सींव में अन्न पानी खाइ तो गुरु गोरखनाथ लाजे मानो भव भवानी का धड़ कूजे जो मेरी सींव में अन्न पानी भखैगी तो दुहाई जैपाल चक्क वै की फिरेगी।

एक सफेद मुर्गा और शराब की एक बोतल पर सात बार मंत्र पढ़कर खेतकी सीमा के बाहर छोड़ें, तो खेतों पर मंडराता टिड्डी दल वहां से उड़ चला जाएगा।

तंत्र अभिचार से मुक्ति का मंत्र

उलटंत वेद पलटंत काया उतर आव बच्चा गुरु ने वेग बुलाया सतनाम आदेश गुरु का।

यदि किसी व्यक्ति पर तांत्रिक ने कोई अभिचार कर्म कर दिया है, तो चौराहे पर जाकर वहां बीचोबीच एक बताशा रखें और उस पर शराब की धार छोड़कर तथा एक सौ आठ बार मंत्र जपकर एवं चौराहे से सात कंकड़ी उठाकर इक्कीस बार मंत्र से अभिमंत्रित करके चार कंकड़ी तो चार दिशाओं में फेंक दें और तीन को अभिचारयुक्त व्यक्ति के शरीर पर मारें। इससे उस पर जो भी किया-धरा होगा, नष्ट हो जाएगा।

रोजी व धन की वृद्धि का मंत्र

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहनी सर्व कार्य करनी मम बिकल संकट हरणी भय मनोरथ पूणी मम चिंता चूरणी ॐ नमो पद्मावती नमः स्वाहा।

तीनों कालों में एकेक माला मंत्र का जप करें तो धन की वृद्धि हो और पच्चीस का एक यंत्र लिखकर, धूप-दीप से पूजन कर उसे सामने रखकर मंत्र जाप करें तो शीघ्र कार्यसिद्धि हो तथा रोजी मिले।

व्यापार द्वारा धनलाभ का मंत्र

ॐ ह्रीं श्री क्रीं श्री क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धन पूरय पूरय चिं दूरय दूरय स्वाहा।

नित्य प्रातः शौच व स्नानादि से निवृत्त होकर एक सौ आठ बार मंत्र का जप करें तो व्यापार में तेजी आ जाएगी, जिससे अच्छा धन का लाभ होगा।

पढ़ा हुआ याद रखने का मंत्र

ॐ नमो भगवति सरस्वति परमेश्वरि वाग्वादिनि मम विद्या देहि भगवति हंस वाहिनी समारु का बुद्धि देहि प्राज्ञा देहि देहि विद्यां देहि देहि परमेश्वरि सरस्वति स्वाहाः।

किसी रविवार से आरंभ कर इक्कीस दिनों तक नित्य एक सौ आठ बार इस मंत्र का जप करें, ब्रह्मचर्य से रहें और एक समय सात्विक भोजन करें तो पढ़ा-लिखा सब याद रहेगा।

स्वप्न में प्रश्नोत्तर मिलने का मंत्र

ॐ नमो मणिभद्रा चेट काय सर्वार्थ सिद्धि कर जापम स्वप्ने दर्शनाय कुरु कुरु स्वाहा।

कनेर के लाल पुष्प को एक सौ आठ बार मंत्र से अभिषिक्त करके सिरहाने तकिये के नीचे रखकर सोएं। सात दिन इस प्रयोग को करें। फिर आठवें दिन जिस प्रश्न को सोचकर सोएंगे, उसका उत्तर आपको स्वप्न में मिल जाएगा।

गृह कीलन का मंत्र

घर बांधों कक्ष बांधों, बांधों घर के द्वारे, सोलहों डाकिनी बांधों, बांधों लोहे का हारे, थाक थाकगे बेटी योगिनी मेरा बांधों परो, लरी सहचरी, जन भाव चौकों बांधों दुहाई महादेव गोरा पार्वती की।

यदि आपके मकान में किन्हीं वायव्य आत्माओं (भूत-प्रेतों) ने कब्जा जमाया हुआ है तो चार कीलें लेकर, सभी पर इक्यावन बार मंत्र पढ़ें। तदनंतर उन कीलों को मकान के चारों कोनों में भूमि में गाड़ दें। इससे आपका मकान कीलित हो जाएगा। पहली कील गाड़ते ही वहां मौजूद आत्माएं निकल भागेगीं और चारों कीलों के गड़ जाने के बाद फिर कोई आत्मा या भूत-प्रेत उसमें प्रवेश करने का साहस नहीं करेंगे।

पुरुष को वश में करने का मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं जंहिये जंहिये 'अमुक' 'अमुकी' के वश्यं कुरु कुरु मोह कुरु कुरु स्वाहा।

स्त्री द्वारा पुरुष को वश में करने का यह एक सिद्ध प्रयोग है। इसके लिए किसी शुभ दिन, शुभ पर्व अथवा शुभ मुहूर्त में गीली मिट्टी द्वारा एक पुतला

बनाकर, उस पर शुद्ध केसर, कामिया सिंदूर तथा गोरोचन से मंत्र लिखकर, धूप-द्वारा उसका सामान्य पूजन करें। फिर खैर की लकड़ी की अग्नि में उस पुतले को तपाते हुए उपर्युक्त मंत्र का एक माला जप करें। साथ ही गूगल की समिधा एवं कनेर के लाल पुष्प शुद्ध देसी घी में मिलाकर अग्नि में डालें। मंत्र में अमुक की जगह पुरुष का नाम व अमुकी की जगह अपना नाम बोलें। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में इच्छित पुरुष आपके वश में हो जाएगा।

मसान जगाने का मंत्र

ॐ नमो आठ खाट की लाकड़ी, मूंज बनी का कावा, मुवा मुरदा बोले, न बोले तो महावीर की आन, शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र के अनुष्ठान से मसान जाग्रत हो जाता है। इसके लिए शराब की एक बोतल, चमेली के पुष्प, लोबान, छारछबीला, लौंग, कपूर, काचरी, इत्र और आटे से बना चौमुखा दीपक लेकर किसी श्मशान में जाएं। लोबान की धूप करें, चौमुखा दीपक जलाकर रखें। घी-तेल न हो तो उसमें कपूर डालकर जलाएं। इसके बाद एकाग्रचित्त होकर उक्त मंत्र पढ़ें। इस क्रिया से कुछ ही देर बाद मसान जाग जाएगा और हाहाकार मचाने लगेगा। तब आप शांति से काम लें और घबराएं या भयभीत न हों। आप तत्काल इत्र के छींटे दें, शराब चढ़ाएं। तब मसान प्रकट होगा। अब आप चमेली के पुष्पों की वर्षा करते हुए उसका स्वागत करें और शेष सामग्री उसे अर्पित करके, उसे प्रणाम करें। आगे वह आपके किस काम आएगा, यह बात आप उसी से जान लें।

अगिया बेताल सिद्धि मंत्र

ॐ नमो अगिया वीर बेताल
पैठि सातवें पाताल
लांघ अग्नि की जलती झाल
बैठी ब्रह्मा के कपाल
मछली चील कागली गूगल हरिताल
इन वस्तां को लै चलि
न लै चलै तो माता कालिका की आन।

होली या दीपावली की रात्रि के मंत्र में उल्लिखित सामग्री लेकर किसी निर्जन, एकांत स्थान पर बैठकर उपर्युक्त मंत्र का जप करें। जप के समय धूप तथा मृत बकरे की चर्बी का दीपक जलता रहे। पूरी श्रद्धा, विश्वास और तन्मयता से मंत्र जपते रहें। जप में कोई त्रुटि या अशुद्धि न हो। इस प्रकार जब आपकी साधना और

मंत्र जप से प्रसन्न होकर अगिया बेताल आए, तो उसे वर्णित सामग्री प्रदान कर दें। इसके पश्चात वहां से कुछ कंकड़ी उठाकर, इसी मंत्र से एक सौं आठ बार फूंककर उन्हें जहां भी मारोगे, वहीं आग लग जाएगी।

धन पाने का मंत्र

ॐ नमो हंकालो चौंसठि योगिनी हंकालो बावना वीर, कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं आगे चौंसठि वीर, जल बंधि बल बंधि आकाश बंधि पवन बंधि तीन देश की विद्या बंधि, उत्तर तो अर्जुन राजा दक्षिण तो कार्तिक विराजै आसमान लौं वीर गाजै, नीचे चौंसठि योगिनी विराजैं, पी तो पास चलि आवै छप्पन भैरों राशि उड़ावै, एक बंध आसमान में लगाया दूजै बंधि राशि में लाया।

इस मंत्र को पहले ग्यारह बार पढ़कर सिद्ध कर लें। फिर उस स्थान पर जाएं, जहां से आप धन की प्राप्ति करना चाहते हैं। वहां पहुंचकर एक बार फिर मंत्र पढ़ें और अंतिम लाइन पढ़ते समय उस वस्तु को हाथ लगाएं। वह वस्तु आपको अवश्य ही प्राप्त हो जाएगी। जुआ खेलते समय दूसरों के पैसों को, लॉटरी की टिकट लेते समय टिकट बेचने वाले के गल्ले को, इनाम में कोई वाहन आदि वस्तु रखी है, तो उस वस्तु को हाथ लगाएं। जिस स्थान पर आपको कोई खजाना छिपा होने की आशा है, उस जगह मंत्र पढ़कर भूमि को हाथ लगाएं। वह खजाना आपको मिल जाएगा।

तंत्रशास्त्र की पुस्तकों में कहा गया है कि दीपावली की रात्रि में निरंतर इस मंत्र का जप करते हुए चूहों की मेंगनियां अर्थात चूहों की विष्ठा एकत्र कर ली जाए। इन मेंगनियों को सामने रखकर और तेल का दीपक जलाकर एक सौ आठ बार इस मंत्र को पढ़ें और सुरक्षित रख लें। आगे एक मेंगनी ले जाकर और एक बार मंत्र पढ़कर आप उसे जिस वस्तु पर भी रख देंगे, वह किसी न किसी प्रकार आपकी हो जाएगी।

धनवृद्धि एवं समृद्धि का मंत्र

ॐ नमः सर्व रुताधिपतये ग्रस ग्रस भैरवीं चाज्ञायति स्वाहा।

बहेड़े का पत्ता और जड़ लाकर, पंचामृत से स्नान कराकर, धूप-दीप से उनकी पूजा करें और मंत्र का इक्कीस माला जप करें तथा इक्कीस बार आहुति देकर हवन-क्रिया करें। इस विधि से बहेड़े का पत्ता और जड़ अद्भुत शक्ति से संपन्न हो जाते हैं। इन्हें भंडार, तिजोरी, संदूक, गल्ले अथवा घर के किसी पवित्र-स्थल में रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है, व्यापारिक कार्यों में तेजी आती है, समृद्धि होती है।

प्रभावशाली वशीकरण मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरुजी को नमस्कार, सिंदुर सिंदूर महासिंदूर नु कहां से आयो कौन ल्यायो गरुड़ पर्वत से आयो, गौरी का पुत गनेस ल्यावा, पैली सिंदुर माता अंजनी को चडायो आनि कासै कर ल्यायो, रिदसिद रीली भर ल्यायो दूसरी सिंदुर किसको चढ़ाऊं, अंजनी को पूत हनुमांकौ चडायो, हौ-हंकार हनुमंकौ तेसरी सिंदुर किसको चडायो बिल जति गोरखनाथ को चडायो, मन रिक्षा पुन वडो सिधि वर पायो चौथो सिंदुर किसको चडायो, चतुर्भुज गनेश को चडायो पांचों सिंदुर किसको चडायो तारा त्रिपुरा तोतला को चडायो, जो करै सिंदुर की निंदा, उसको षाशै माया रजीदास दो रजडावै, श्रीगास्णा पावै त्रिपुरा सुंदरी संग पावै, षड-काली मनाऊं काली वाशै संतुरी को विजडा पै, कालिका माता मन इच्छा पूरन कर सिद्धि करका। ॐ अपीलियि अली आगां काली आप्रगां कुरु कुरु कालीकायौ फट् स्वाहा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, ऐं मंत्र ले सिंदुर मंतणौ सिर लगाणौ विंदी अमुक वश में हो।

किसी भी शनिवार में रात्रि ग्यारह बजे के बाद पवित्रतापूर्वक पश्चिमाभिमुख होकर किसी आसन पर बैठें। सामने लकड़ी के एक पटरे पर रेशमी लाला वस्त्र बिछाएं और उस पर प्रियंगु की ढेरी बनाकर उस पर हरा अकीक स्थापित कर, इच्छित स्त्री या पुरुष का नाम मोहिनी काजल द्वारा एक कागज पर लिखकर कपड़े पर रख दें। फिर कामिया सिंदूर और अक्षतों से उसका पूजन कर देसी घी का दीपक जलाएं और उपर्युक्त मंत्र का एक सौ आठ जप करें तथा मंत्र में अमुक के स्थान पर इच्छित स्त्री या पुरुष का नाम बोलें। प्रत्येक बार मंत्र जप के बाद दीपक की लौ को अवश्य देखें। इच्छित स्त्री या पुरुष का वशीकरण हो जाएगा।

शत्रु को पीड़ा पहुंचाने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, हनुमंत बलवंता माता अंजनी का पूत हलंता आओ चढ़ चढ़ंता आओ गढ़ किला तोड़ंता आओ लंका जलंता बालंता भस्म करंता, आओ ले लांगू लंगूर, ते लिपटाये सुमिरते पटका, औ चंदी चंद्रावली भवानी मिल गावें मंगलाचार, जीते राम लक्ष्मण हनुमान जी आओ, आओ जी तुम आओ, सात पान की बीड़ा चाबत मस्तक सिंदूर चढ़ाये आओ, मंदोदरी का सिंहासन डुलाते आओ, यहां आओ हनुमान, आया जागते नरसिंह, आया आगे भैरों किलकिलाय, ऊपर हनुमान गाजे दुर्जन को फाड़ अमुक को मार संहार, रमारे सम्य गुरु हम सत्य गुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

श्मशान में जाकर जलती चिता के सिरहाने से एक कोयला ले आएं। फिर दीवार पर अपने शत्रु का चित्र बनाएं और उपर्युक्त मंत्र का एक हजार एक की संख्या में जप करें। मंत्र में अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम अवश्य बोलें। इसके बाद श्मशान से लाया गया कोयला शत्रु के चित्र से जहां-जहां स्पर्श कराएंगे, शत्रु श्मशान की अग्नि के ताप से वहीं-वहीं जलेगा।

श्मशान जाग्रत करने का मंत्र

ॐ नमो आठ काठ की लाकड़ी मन जवानी, मुवा मुरदा बोले नहीं तो माया महावीर की आन, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

कपूर,, कचरी, इत्र, बालछड़, छबीला, मिष्ठान, जाती पुष्प तथा धूप—इन सबको समान मात्रा में लेकर व शराब की एक बोतल लेकर, आधी रात के समय पूरी निडरता के साथ किसी श्मशान में जाएं और किसी शव के पास जाकर उस पर सबसे पहले शराब की धारा डालें, फिर धूप देकर फूलों को उसके ऊपर बिखरा दें। इसके बाद इत्र व अन्य सुगंधित द्रव्यों को चढ़ाएं। इस क्रिया के बाद शव से दूर हटकर उपरोक्त मंत्र का ग्यारह माला जप करें। प्रत्येक माला की समाप्ति पर बोतल से शराब की धार गिराते रहें।

इस विधि से श्मशान हाहाकार करता हुआ जाग्रत हो जाता है तथा प्रकट होकर साधक की मनोकामना पूछकर पूरी करता है। ऐसे समय में साधक को भयभीत नहीं होना चाहिए, बल्कि उसकी पूजा कर, शराब और मिष्ठान अर्पित करना चाहिए। प्रसन्न हो जाने पर वह साधक की समस्त सांसारिक इच्छाओं को पूरा करता है।

डाकिनी सिद्धि का मंत्र

नमो चंढ़ौ सूखार धरती चढ़ाया कुण कुण वीर हनुमंत वीर चढ़ैया धरती चढ़ पग पात चढ़ो गोंडा चढ़ी जांघ चढ़ी कटि चढ़ी कटि कटि पेट चढ़ी पेट सूं धरणी चढ़ी, धरणी सूं पासली चढ़ी, पासली सूं हिया चढ़ी, हिया सों छाती चढ़ी सौ खवा चढ़ी, वाखस सौ कंठ चढ़ी, कंठ सौ मुख चढ़ी, मुख सौ जिह्वा चढ़ी, जिह्वा सौ कान चढ़ी, कान सौ आंख चढ़ी, आंख सौं ललाट चढ़ी, ललाट सौं शीश चढ़ी, शीश सौं कपाल चढ़ी, कपाल सौं चोटी चढ़ी, हनुमान नरसिंह चले, वीर समदवीर दीठवीर आज्ञावीर सौ संतावीर चढ़ें।

ग्रहणकाल की रात्रि में, किसी एकांत स्थान पर, शुद्ध पवित्र भूमि को गाय के गौबर से लीपकर, वहां घी का एक दीपक जलाकर व एक पैर पर खड़े होकर शुद्ध रूप से मंत्र का एक सौ आठ जप करें। मंत्र पूरा हो जाने पर (यदि साधना में कोई त्रुटि न हुई हो तो) डाकिनी प्रसन्न होकर दर्शन देती है। उस समय साधक को

भयभीत नहीं होना चाहिए, बल्कि डाकिनी का पूजन कर उसे नैवेद्य आदि अर्पित करना चाहिए। अब साधक अपने जिस किसी भी कार्य को डाकिनी के समक्ष रखेगा, वह उसे तत्काल पूरा कर देगी।

वीर विरहना सिद्धि का मंत्र

वीर विरहना फूल विरहना धुं धुं करै सवा सेर का तोसा खाय अस्सी कोस का धावा करे सात के कुतक आगे चले सात सै कुतक पीछे चले, जिसमें गढ़ गजना का पीर चले और ध्वजा टेकात चले, सोते को जगावता चले, बैठे को उड़ावता चले, हाथों में हथकड़ी गेरे पैरों में बेड़ी गेरे, मांही पाठ करे मुरदार मांही पीठ करे, कलाबोन नवी कूं याद करे। ॐ ॐ ॐ नमः ठः ठः ठः स्वाहा।

वीर विरहना साधना द्वारा सिद्ध कर लिए जाने पर वह साधक की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करता है और सदैव उसके समीप रहकर उसकी रक्षा करता हुआ हर प्रकार के सुख प्रदान करता रहता है। उपर्युक्त मंत्र का ग्रहण की रात्रि में एक सौ आठ बार जप करके चमेली के पुष्प आदि चढ़ाने की प्रक्रिया करें तथा नैवेद्य धूप में सवा सेर आटे का शुद्ध देसी घी से बना हुआ हलुवा अर्पित करें। इस प्रकार चालीस दिन के जप के बाद वीर विरहना साधक के सामने प्रकट हो जाता है। उस समय साधक हाथ जोड़कर प्रणाम करे, मन की इच्छा को प्रकट करे। वीर विरहना उसकी सभी इच्छाओ को पूर्ण कर देता है। ❑❑

19

विविध गोपनीय मंत्रों का प्रयोग

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि निष्ठा एवं विधिपूर्वक की गई मंत्र साधना ही सफलीभूत होती है। ये मंत्र व्यक्ति के जीवन के किसी भी क्षेत्र से अछूते नहीं हैं। यदि व्यक्ति इन पर श्रद्धा और विश्वास बनाए रखे, मंत्रोच्चारण शुद्ध रूप में करे, तो इनसे बहुत से लाभ उठा सकता है तथा दूसरों का भी भला करने में समर्थ हो सकता है। प्रस्तुत सभी मंत्र अति गोपनीय हैं और पाठकों के ज्ञानवर्धन के लिए यहां दिए गए हैं।

दुष्टात्मा निवारक मंत्र

जल बांका, जल बांका, 'अमुक' काया बांका, डाइन रे दृष्टि पढ़न पानी, सुनो गोमाया अधर कहानी, समन काटि के माता दिहली, बार उज्जान छोड़े भाठी, घर धूला बान, धूसर बान, शब्द भेदी महाबान, ऐहि मंत्र पढ़े से, ॐ हानिः श्री राम हुंकारे।

यदि कोई बच्चा या बड़ा किसी दुष्टात्मा के फेर में पड़ गया है तो पहले इस मंत्र का एक सौ आठ जप करें तथा मंत्र में अमुक के स्थान पर रोगी का नाम लें। फिर धूल, राख अथवा सरसों को मंत्र से पांच बार अभिमंत्रित कर रोगी के शरीर पर मारें। इस क्रिया से रोगी का दुष्टात्मा से पिंड छूट जाता है और वह पुनः स्वस्थ हो जाता है।

सर्व बाधा निवारक मंत्र

श्री मणिभद्र देव एषः योगः फलतु। यथा—

ॐ नमो भगवते मणिभद्राय, क्षेत्रपालाय, कृष्णरूपाय, चतुर्भुजाय, जिन शासन भक्ताय, नव नाग सहस्त्रवलाय, किन्नर किंपुरुष गंधर्व राक्षस भूत प्रेत पिशाच सर्व शाकिनीनां निग्रहं कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

उत्तर की ओर मुंह करके, लाल रंग की माला से पहले 'श्री मणिभद्र देव एषः योगः फलतु' मंत्र का एक माला जप करें। फिर 'ॐ' से 'स्वाहा' तक के मंत्र

का तीन दिन में बारह हजार पांच सौ की संख्या में जप करें। जपकाल में ब्रह्मचर्य से रहें और एक समय भोजन करें। इस समय में दीपक अखंड जलता रहे। इस प्रकार मंत्रसिद्धि हो जाएगी। आवश्यकता के समय मंत्र को पांच बार पढ़कर मोरपंख से झाड़ा करने पर सर्व बाधा का निवारण किया जा सकता है।

आकर्षित करने का मंत्र

ॐ नमः आदिपुरुषाय अमुकस्याकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। तदनंतर प्रयोग से पूर्व इस मंत्र का एक सौ आठ बार जप करके कार्यसिद्ध किया जा सकता है। यथा—काले धतूरे का रस निकालें। फिर उसमें गोरोचन मिलाएं और स्याही बना लें। इस स्याही और कनेर की कलम से भोजपत्र पर आकर्षित किए जाने वाले का नाम लिखकर, उसके चारों ओर मंत्र भी लिख दें और एक सौ आठ की संख्या में मंत्र पढ़ते हुए खैर की लकड़ी की अग्नि में उसे तपाएं। इस किया से, जिसके लिए यह प्रयोग किया गया है, वह हजार मील दूर होगा, तो भी शीघ्र लौट आएगा।

मोहनकारक मंत्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा।

सर्वप्रथम रुई की बत्ती बनाएं और उस बत्ती को नवनीत से जलाएं। जलती हुई बत्ती की लौ से काजल पारें। फिर उपर्युक्त मंत्र को दस हजार की संख्या में पढ़कर पहले सिद्ध करें, फिर पांच बार मंत्र को जपकर काजल को अभिषिक्त करें और आंखों में आंज लें। इस काजल को लगाने से सारे जगत को मोहित किया जा सकता है। ऐसा सिद्ध किया काजल हर किसी को नहीं देना चाहिए ऐसा माना जाता है कि यह काजल देवताओं तक के लिए दुर्लभ है।

उच्चाटन करने का मंत्र

ब्रह्मदंडी और त्रिता की भस्म को मिलाकर सरसों के तेल के साथ मिलाकर पीस लें और बाद में शिवलिंग पर उसका लेप कर दें। तदोपरांत उसे निम्नलिखित मंत्र के एक सौ आठ जप से अभिमंत्रित करें (किंतु पहले दस हजार जप करके मंत्र को सिद्ध किया जाना आवश्यक है)।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो भगवते रुद्राय करालाय स्त्रीपुत्रैर्बांधवैः शीघ्रमुच्चाटयोच्चाटय स्वाहा ठः ठः ठः।

शनिवार के दिन शिवलिंग पर किए गए लेप को साबुत सुपारी या जायमल पर मलकर जिसके गृह में डाल देंगे, वहां स्त्री, पुत्र और बांधवों आदि सभी का परस्पर उच्चाटन हो जाएगा।

कलहकारक मंत्र प्रयोग

ॐ नमो नारदाय अमुकस्यामुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

पहले इस मंत्र को एक लाख की संख्या में जपकर सिद्ध करें। फिर साही का एक कांटा लें और उस पर एक सौ आठ बार मंत्र पढ़ें। अमुक के स्थान पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम लें। तदनंतर उस साही के काटे को अभीष्ट व्यक्ति के गृह-द्वार पर गाड़ दें। उस घर में रहने वाले सभी लोगों को विद्वेषण हो जाएगा अर्थात उनके बीच कलह उत्पन्न हो जाएगी।

अग्नि स्तंभन मंत्र

ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा।

मृत मेढक की चर्बी को घी-ग्वार के रस में मिलाएं और उपर्युक्त सिद्ध मंत्र से (मंत्र को दस हजार की संख्या में जपकर सिद्ध करें) उसे एक सौ आठ बार अभिषिक्त करके शरीर पर लेप कर लें। इससे अग्नि का स्तंभन हो जाता है, अर्थात् अग्नि में शरीर जलता नहीं है।

आसन स्तंभन मंत्र

ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसनं स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

चर्मकार (मोची) के कुण्डे का मैल तथा उसकी धूल लेकर मृत गौरैया का रक्त उसमें मिलाकर इस मंत्र से एक सौ आठ बार अभिषिक्त कर, जिसके आगे डाल देंगे, उसका उसी स्थान पर स्तंभन हो जाएगा।

बुद्धि स्तंभित करने का मंत्र

ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धिं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जप करने से ही यह सिद्ध हो जाता हे। सिद्ध मंत्र ही प्रभावी होता है। प्रयोगात्मक रूप में उल्लू की विष्ठा को लाकर छाया में सुखा लें और उपर्युक्त मंत्र के एक सौ आठ जप से अभिषिक्त करें। अब इसे पान में रखकर जिस किसी शत्रु को खिलाएंगे, उसी समय उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जाएगा।

बालग्रह विनाश का मंत्र

ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्षःस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूतप्रेत पिशाच डाकिनी कुलान्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्त दोषान्

हर हर, विदार विदार पच पच हन हन कम्पय कम्पय मथ मथ, ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः एह्येहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा।

शिरीष, नीम, बबूल, ढाक, बांस की छाल, मोर की पूंछ के स्वतः गिरे बाल, मालकांगनी तथा घृत—ये सभी बराबर मात्रा में लेकर एक साथ पीसें और फिर उपर्युक्त मंत्र से उसे अभिमंत्रित करके धूप दें तो इस कृत्य से बालग्रहों का विनाश हो जाता है।

ग्रहपीड़ा निवारक मंत्र

ॐ नमो भास्कराय मम सर्वग्रहाणां पीडानाशनं कुरु कुरु स्वाहा।

पहले इस मंत्र को एक लाख की संख्या में जपकर सिद्ध करें, फिर मिट्टी के एक पात्र में मदार की जड़, शीशम, आम, गूलर वृक्ष का पत्ता, घृत, दूध, चावल, चना, गेहूं, तिल, शहद और मट्ठा भरकर शनिवार के दिन संध्याकाल में पीपल वृक्ष के पास जाएं और पात्र को दस हजार मत्र से अभिषिक्त कर, वहीं वृक्ष की जड़ में गाड़ दें। इससे समस्त ग्रहों की पीड़ा नष्ट हो जाती है। यह प्रयोग करने वाला व्यक्ति जब तक जीवित रहता है, तब तक उसको ग्रहपीड़ा नहीं होती और उसके पाप तथा दरिद्रता का भी नाश हो जाता है।

क्षुधा नाशक मंत्र

ॐ नमो भगवते क्षुधां स्तम्भयं स्तम्भयं ठः ठः ठः।

आंवला, अपामार्ग के बीज, कमलगट्टा और तुलसी की जड़ को मिलाकर एवं पीसकर गोली बना लें। इस गोली को उपर्युक्त मंत्र से इक्कीस बार अभिमंत्रित करके निगलें और ऊपर से थोड़ा-सा गाय का दूध पी लें। इस प्रयोग से भूख और प्यास नष्ट हो जाएगी। अथवा गाय के दूध और घी में अपामार्ग के बीजों को पकाकर और भैंस के दूध में डालकर खीर बनाएं और मंत्राभिषिक्त कर सेवन कर लें। इस प्रयोग से दीर्घकाल तक भूख-प्यास नहीं लगती।

अधिकाहारात्मक मंत्र

ॐ नमः सर्वभूताधिपतये हुं फट् स्वाहा।

भिलावे के पत्र को उपर्युक्त मंत्र के एक सौ आठ जप से अभिमंत्रित करके जो व्यक्ति दाहिने हाथ में रखता या बांधता है, वह अधिक मात्रा में भोजन करने लगता है। ऐसा माना जाता है कि इस प्रयोग को करने वाला व्यक्ति भीमसेन जितना भोजन कर सकता है।

निधि दर्शन का मंत्र

ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधिदर्शनं कारय कारय स्वाहा।

जहां भूमि में धन होने की संभावना हो, वहां शिरीष और कनेर के पंचांग, धतूरे के बीज, विष, श्वेत गुंजा, उल्लू की विष्ठा, गंधक और मैनसिल को समान भाग में लेकर कटु तेल में पकाएं। पक जाने पर उसकी गड़े हुए धन के स्थान पर धूप दें और उपर्युक्त मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करें तो उस स्थान पर रहने वाले राक्षस, भूत, बेताल, देव, दानव, गंधर्व व सर्पादि सहज ही उस स्थान को छोड़कर चले जाते हैं। तब उस जगह की खुदाई करके निधि प्राप्त कर सकते हैं।

रसायन विधि का मंत्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादिनां दोषाय रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा।

गोमूत्र, हरताल, गंधक और मैनसिल—को समान मात्रा में लेकर जब तक ये सूख न जाएं, तब तक इन्हें खरल करें। विशेषत: यह ध्यान में रखें कि लाल रंग वाली गाय का मूत्र और लाल रंग का गंधक इसमें ग्राह्य है। इन्हें ग्यारह दिन तक उपर्युक्त मंत्र का पवित्रता से जप करते हुए खरल में घोटें। बारहवें दिन पूरी सामग्री का गोला बनाकर उसे लाल वस्त्र में लपेट दें। फिर उस पर चार अंगुल मोटी चिकनी मिट्टी की परत चढ़ाकर सुखा लें। अब पांच हाथ गहरा गड्ढा खोदकर, उसमें खांखरे की लकड़ी के कोयले रखकर, बीच में वह गोला रख दें और ऊपर भी वैसे ही कोयले डालकर उसमें आग जला दें। जब अग्नि जलकर भस्म बन जाए और शीतल हो जाए, तब उसे निकाल लें और अग्नि में तपे हुए ताम्रपत्र पर उस भस्म को डाल दें। इससे तत्काल उस ताम्रपत्र से एक रत्ती भर सुवर्ण बन जाता है।

उदर पीड़ा नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का श्याम गुरु पर्वत में बड़ बड़ में कूआ कूआ में तीन सूवा कौन कौन सूवा वाय सूवा जहर पीड़ सूवा भाज भाजबे जहर आइगा, जती हनुमंत मार करेगा भस्मंत, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र से सात बार पानी को अभिमंत्रित करके रोगी को पिला दें। इससे हर प्रकार की उदर पीड़ा का शमन हो जाएगा।

सिया का मंत्र प्रयोग

ॐ नमो कामरू देश कामाख्या देवी, जहां बसै इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी के तीन पुत्र, एक तोड़े एक पिछोड़े, एक तोते जरी तोड़े।

रोगी को खड़ा करें, जहां उसे ठंड लग रही हो, वहां अपना हाथ रखकर इक्कीस बार मंत्र को पढ़ें और फूंक मारें। इससे सिया जाता रहेगा।

पसली डबिका का मंत्र

समुद्र के किनारे सुरहमान सुरहगाय के पेट में बच्चा, बच्चे के पेट में कलेजे, कलेज के पेट में डब डब करेस खड़े दुहाई लोना चमारी की।

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र को एक सौ चौवालीस बार पढ़कर और लोबान की आहुति देकर सिद्ध करें। फिर रामेसर की लकड़ी और सींक को सात-सात अंगुल की काटकर उपर्युक्त मंत्र से झाड़ा दें। जब लकड़ी और सींक से झाड़ा दिया जाएगा, तो उनकी लंबाई बढ़ती जाएगी और जब रोग नष्ट हो जाएगा, तो वह अपने पूर्व आकार में आ आएंगी। यही रोग जाने की निशानी होगी।

वृश्चिक दंश निवारक मंत्र

ॐ नमो सरै गाय पर्वत जाय रै चरै सखो बंबल सल गाय गोबर कियो जिहि सों उपजा बीछू सात कालो कंकल वालो सांप सर्पनी वालो हरो लीली केलो उतरे तो उतारूं नहीं तो मारे कंठ को धरि हंकारूं शब्द सांचा पिण्ड काचा।

जूते की एड़ी या चाकू की नोक से सात बार मंत्र पढ़कर झाड़ दें। विष एक ही बार में उतर जाएगा और मंत्र को सिद्ध करने की भी आवश्यकता नहीं है। उपर्युक्त मंत्र के स्थान पर निम्नलिखित मंत्र का प्रयोग भी किया जा सकता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो आदेश गुरु को क्योंकि बीछू नैं काठा गोंद गिरी मुख चाष्यों मैं काठा ने पानी पकाकै काठयो उतर जाय उतरै तो उतारूं चढ़ै तो धारूं नातर गरड़ मोर हंकारूं लंका से कोट समुद्र कीर गई उतरे पीछू जती हनुमंत की दुहाई शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पानी पर इस मंत्र को सात बार पढ़ें और जमीन पर गिरा दें। वृश्चिक के विष का प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

बाबरे कुत्ते का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्ष्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती, दस कारी दस कद बरी, दस पाली दस लाल, इसको विष हनुमान हरे रक्षा करे गुरु गोरख बाल, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

थोड़ी राख लेकर इस मंत्र से तीन बार झाड़ दें। यदि विष का प्रभाव होगा, तो वह नष्ट हो जाएगा।

कारागार से मुक्ति का मंत्र

हरि मर्कट मर्कट वाम करे परिमुंचित मुंचित श्रृंखलि काम्।

यदि किसी निर्दोष व्यक्ति को कारागार (जेल) में डाल दिया गया है तो उसे चाहिए कि वह इस मंत्र को अपने दाहिने हाथ की उंगली से बाएं हाथ की हथेली पर लिखे और मिटा दे। इस कृत्य को वह सात दिन तक नित्य एक सौ आठ बार करे। इसके प्रभाव से वह इक्कीस दिन में कारागार से छूट जाएगा।

व्यावसायिक कार्य में सफलता का मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमो भगवते मम सर्व कार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं प्रज्ञां देहि ममापत्तिं निवारह निवारय स्वाहा।

किसी भी शिव लिंग पर इस मंत्र से सात बिल्व पत्र चढ़ाने के पश्चात मंत्र की न्यूनतम एक माला का जप अवश्य करना चाहिए। जप घर के एकांत कोने में या शिवालय में कहीं भी किया जा सकता है। अधिक अच्छा रहेगा कि इस प्रयोग को श्रावण मास में प्रारंभ करें। इस प्रकार नित्य जप करने से धन प्राप्ति के साधन जुड़ते हैं तथा व्यावसायकि कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। समस्त विपत्तियों का नाश हो जाता है।

कष्टों से मुक्ति का मंत्र

ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय भूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतना मारी महामारी यक्ष राक्षस भैरव बेताल ग्रह राक्षसादिकम् क्षणेन हन हन भंजय भंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामारेश्वर आज्ञा हाड़ि दासी की दोहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर नित्य उपर्युक्त मंत्र का एक सौ आठ जप पैंतालीस दिनों तक करें। किसी तांत्रिक, ओझा या मौलवी के फेर में न पड़ें, श्रद्धा और विश्वास बनाए रखें। नजर व भूत-प्रेतादि से संबंधित सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिल जाएगी।

वशीकरण के अतिप्रभावी मंत्र

ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रीं सहस्त्र किरणाय ऐं अतुल बल पराक्रमाय नवग्रह वश दिक्पाल लक्ष्मी देवाय धर्म कर्म सहितायै अमुक नाथय नाथय मोहय मोहय आकर्षय आकर्षय दासानुदासं कुरु कुरु वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। आदेश कामरू कामाक्षा माई, हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

किसी भी रात्रि को स्नानोपरांत उपर्युक्त मंत्र का एक सौ आठ बार जप करने

से मनचाहे स्त्री या पुरुष का वशीकरण हो जाता है। मंत्र में अमुक के स्थान पर मनचाहे स्त्री या पुरुष का नाम बोलना चाहिए।

ॐ नमो मोहिनी महामोहिनी अमृतवासनी ऐं नमो सिद्धि गुरु के पाय जानुं अर्जुन के वान, धनेश्वरी की माटी बंधो घाउन बंधो पाटि मेरि, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी भी स्त्री या पुरुष को मोहित, आकर्षित अथवा अपने वश में करना है तो नित्य सायं एक सौ आठ बार उपर्युक्त मंत्र का जप करें।

ॐ नमो भगवति पुर पुर वेशनि सर्वजगत भयंकरि ह्रीं ह्रैं ऊं रां रां रां क्लीं वालौ सः वच काम बाण सर्वश्री समस्त नर नारीणां मम वश्यं नमो नमः स्वाहा।

पहले इस मंत्र को दस हजार की संख्या में जपकर प्रभावी बना लें। तदोपरांत अपने चेहरे पर हाथ फिराते हुए इस मंत्र को पन्द्रह बार पढ़ें। इसके प्रभाव से साधक का व्यक्तित्व ऐसा मोहक हो जाएगा कि वह जिधर भी देखेगा, वहां मौजूद सभी लोग मुग्ध हो जाएंगे।

बड़ा पीपल का थान जहां बैठा आजाजील शैतान शबीह मेरी शक्ल बन अमुकी को न जाने तो अपनी बहन भानजी के सिर जान पग चलता अभिरान जो राने तो धोबी की नांद चमारी की खाल कुलाल की पाटी पड़े जो राजा चाहे तो राजा का मैं चाहूं तो अपने काम को मेरा काम न होगा तो आनसी में तो मेरा दमनगीर रहूंगा।

शनिवार की रात्रि में राई के इक्कीस दाने लें और प्रत्येक दाने पर इक्कीस-इक्कीस बार उपर्युक्त मंत्र को पढ़कर अग्नि में हवन करें। इस प्रकार सात शनिवार को यह प्रयोग करने पर इच्छित स्त्री का वशीकरण हो जाएगा।

मानक जिन्न उतारने का मंत्र

ॐ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग पाताल आंगन द्वार मंझार खाट बिछौना गडई सावनार सागलन ओ जवनार विरा सो धावे फुनेल लग्वेग सुपारी जे मुंह तेल उबटन अबटन और अबहान पहिन लंहगा साड़ी जान डोरा चोलिया चादरि ज्ञान मोह रुई ओढन झींन शंकर गोरा क्षेत्रपाला पहिले झारो बारम्बार काजल तिलक लिलार आंख नाक कान कपाल मुंह चोटा कण्ठ अबर्कष कांध बांह गोड अंगुली नख धुकधुकी अस्थल नाभि नेटी नीचे जोनि चरणि कत भेटी पोटि करि दाव जांघ पेडरी घूटा पावकर ऊपर अंगुरा चाम रक्त मांस डांड गुदा धातुओं जो नहिं छोडु अणतरी कोठरी करेज पित ही पित जिय प्रान सब रांग कांच लोह रूप सोन साच पार पठ वशन रोज जोग कारण

दशन डोठि मूठ टीना टापक नौ नाथ चौरासी सिद्ध के सराप डाइन योगिनी चुड़ैल भूतप्रेत व्याधिपरि जिन्न अर जेजत साच प्रकट औ भैरव की हांक, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम गुरु का।

जो व्यक्ति मानक वीर आदि जिन्न के प्रभाव से ग्रस्त हो गया है तो उपर्युक्त मंत्र से इक्कीस बार झाड़ा देते हुए गंगाजल रोगी पर छिड़क दें। कुछ दिनों के प्रयोग से ही व्यक्ति मानक वीर के प्रभाव से मुक्त हो जाएगा। यदि इस प्रयोग से अधिक लाभ होता दिखाई न दे तो निम्नलिखित उपाय अवश्य ही कारगर सिद्ध होगा।

ॐ स्यार की खवासिनी समंदर पार धाई आव बैठी हो तो आव ठाड़ी हो तो ठाड़ी आव चलती आ, छलती अव, न आये जोगिन तो जालंधर पीर की आन शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी निर्जन एकांत स्थान पर अथवा अपने निवास के एकांत कक्ष में पूर्णत: निर्वस्त्र होकर चर्मासन पर बैठें। मांस और मदिरा भोग के लिए रख लें। चर्बी का दीपक जलाएं और उपर्युक्त मंत्र का जप करते रहें। जब एक हजार आठ जप पूरे हो जाएं तो हाथ में पीली सरसों लेकर और एक बार मंत्र पढ़कर, उन्हें सभी दिशाओं में फेंक दें। इससे जोगिन उस पर आकर बोलने लगेगी। तब उसे मांस मदिरा का भोग देकर अपना अभीष्ट कहें। जोगिन उससे वादा कर चली जाएगी। इसके बाद मानक जिन्न से ग्रस्त व्यक्ति को अपने सामने बैठाएं। अब कपूर जलाकर जोगिन का मंत्र पढ़ें, कपूर जलाकर मांस-मदिरा का भोग दें और लगातार मंत्र का जप करते हुए दो लौंग रोगी पर से उसारकर कपूर में जला दें। जोगिन अपना भोगादि लेकर मानक जिन्न को अपने साथ खींच ले जाएगी। इस प्रकार रोगी स्वस्थ हो जाएगा। शरीर में जो भी दुर्बलता आ गई है, वह कुछ ही दिनों में दूर हो जाएगी।

❑❑❑

दुर्लभ शाबर मंत्रों का रहस्य

शब्द शक्ति का प्रभाव अब किसी से छिपा नहीं है और जब यह भावना से पुष्ट हो जाए, तब तो इसका प्रभाव और भी व्यापक हो जाता है। मंत्र-शक्ति का यही रहस्य है। मंत्रों में शब्दों का चुनाव एक विशेष क्रम में होता है, जिससे वे जपने वाले साधक के भाव प्रदेश को जाग्रत और सक्रिय करते हैं।

वेद-मंत्रों का शुद्ध उच्चारण प्रत्येक नहीं कर सकता, इसलिए नाथ-संप्रदाय के आचार्यों ने भगवान शिव की प्रेरणा से ऐसे मंत्रों का निर्माण किया, जो साधारण बोल-चाल की फक्कड़ी भाषा में हैं। इन्हें ही शाबर मंत्र कहते हैं। इनकी सिद्धि शीघ्र होती है और इनका प्रभाव दूरगामी होता है। इसीलिए रोगोपचार तथा कामनाओं को पूर्ण करने के लिए ये जोगियों, नाथों, ओझाओं और साधारण व्यक्तियों के बीच काफी प्रचलित हैं। अटपटे और अनगढ़ शब्दों वाले ये शाबर मंत्र कभी-कभी ऐसा चमत्कारी असर दिखाते हैं कि विश्वास ही नहीं होता।

यह पुस्तक ऐसे ही साधारण लेकिन विशेष प्रभावी अनुभव-सिद्ध शाबर मंत्रों का अनूठा संकलन है।

मनोज पब्लिकेशन्स